श्री श्रीश चन्द्र दीक्षित

मुख्य परामर्शदाता
पूर्व सांसद व पूर्व पुलिस महानिदेशक

श्री भारतेन्दु प्रकाश सिंघल

राष्ट्रीय प्रधान
पूर्व सांसद (राज्य सभा) व पूर्व पुलिस महानिदेशक

मे . ज . (से दृ नि .) विश्वास स . जोगलेकर
राष्ट्रीय कार्यकारी प्रधान

संपादक
प्रो0 सतीश चन्द्र
संपादक मंडल

डॉ महेश चन्द्र
देवेन्द्र मित्तल, रामाश्रय उपाध्याय
प्रो0 श्री धर पन्त, डॉ0 रामशरण गौड़

प्रकाशक व मुद्रक
देवेन्द्र मित्तल (उपप्रधान)
प्रकाशन स्थान
3308, सेक्टर–डी–3 वसंत कुंज,
नई दिल्ली – 110070

SUBSCRIPTION RATE

Inland	:	Life Rs. 800/-
		Annual 100/-
Overseas	:	Life US$ 100
		Annual US$ 10
Per copy	:	£1 $1.50, IRs 15

ADVERTISEMENT TARIFF

Outer Cover	**:**	**Rs.**	**15000/-**
Inner Cover	**:**	**Rs.**	**12,000/-**
Full Page	**:**	**Rs.**	**10,000/-**
Half Page	**:**	**Rs.**	**5,000/-**

Payable by MO/Bank Draft/Crossed
Cheque in the name of
Sanskritik Gaurav Sansthan
3308- Sector-D, Vasant Kunj,
New Delhi-110070

एक्सेलप्रिन्ट, सी–36, फ्लैटिड फैक्टरीज़ कॉम्पलैक्स, झण्डेवालान्, नई दिल्ली–110 055

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

G A U R A V   G H O S H

BI-MONTHLY

वर्ष 9 अंक 3 विषय सूची फाल्गुन–चैत्र – 2064 वि मार्च 2008

पालीताणा की हुतात्मा 5

क्षीर सागर से मिली शेषनाग की शय्या 7

राम और रामसेतु का संबंध पुराणों से : डॉ. कर्ण सिंह 7

भगवान् श्रीराम के 73 पूर्वजों की जानकारी वाली पाण्डुलिपि मिली 8

दुनिया भर को 'रामायण की लंका' का न्यौता 9

सिन्धु सभ्यता से भी जुड़ा कृष्ण का नाम 9

कहो गर्व से हम हिन्दू हैं - बौद्धमत और सनातन धर्म में ऐक्य 10

उत्तर भारत एवं दक्षिण भारत की भाषाओं का अंतर्संबन्ध

-डॉ. रामशरण गौड़ 11

मेघालय सरकार ने शिक्षा विभाग ईसाई मिशनरियों को सौंपा 14

विकास का अमानवीय चेहरा 14

रोमिला थापर और भारत की छवि *-हरिकृष्ण निगम* 15

चीन से रिश्ता 18

घड़ियाली आँसू 19

तीसरी सबसे बड़ी ऊर्जा संपदा का सवाल 19

कश्मीर में अब मंदिरों पर कब्जे का दौर 21

जम्मू-कश्मीर में जिहादी हिंसा-आंकड़ों की नजर से 22

मुस्लिम पीड़ितों को राहत, हिन्दुओं को कोरे वायदे 23

जम्मू-कश्मीर में तेजी से पनपता हवाला कारोबार 24

पुस्तक समीक्षा - 'हिन्दू समाज संकटों के घेरे में',

'अलख' (कविता संग्रह) 25

Iran & Arabs : A brief Historical perspective 28

Economic scene : ABC of recession 30

Uncalled for apology ***-Prafull Goradia*** 30

What Gujarat thinks today... ***-Ashok Malik*** 32

Is Gujarat India ? 33

Sarkari-Sect ***- Dr. Y.K.Sharma*** 35

Secular means anti-Indian ***- Indulata Das*** 36

News through statistics 37

Diary of Events, Select Articles and Book Reviews 39

O W N E R : S A N S K R I T I K G A U R A V S A N S T H A N

Phone : 26195368, 26181315 E-mail sgsdelhi05@gmail.com

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

____*संपादकीय*

भारतीय संस्कृति - विरोध की निरंतरता

दिल्ली विश्वविद्यालय में इतिहास की बी.ए. (पास) प्रथम वर्ष और बी.ए.(ऑनर्स) के इतिहास के द्वितीय वर्ष में जो कुछ पढ़ाया जा रहा है, वह निम्नलिखित है :-

<u>बी.ए. (आनर्स) इतिहास</u>

1. रावण और मंदोदरी की कोई संतान नहीं थी। दोनों ने शिवजी की पूजा की। शिवजी ने उन्हें पुत्र प्राप्ति के लिए आम खाने को दिया। गलती से सारा आम रावण ने खा लिया और उसे गर्भ ठहर गया। बड़ी स्वच्छन्दता से रावण के नौ मास के गर्भधारण की व्यथा का वर्णन किया गया है।
2. दु:ख से बेचैन रावण ने छींक मारी और सीता का जन्म हुआ। सीता रावण की पुत्री थी। उसने उसे जनकपुरी के खेत में त्याग दिया।
3. हिन्दुओं की मति भ्रमित करने के लिए कहा गया है कि हनुमान छुट भैया एक छोटा-सा बन्दर था। हनुमान की अवमानना करते हुए लिखा गया है कि वह एक कामुक व्यक्ति था। वह लंका के शयनकक्षाओं में झांकता रहता था और वह स्त्रियों और पुरुषों को आमोद-प्रमोद करते हुए बेशर्मी से देखता फिरता था।
4. रावण का वध राम से नहीं लक्ष्मण से हुआ।

<u>बी.ए. (पास) प्रथम वर्ष</u>

6. ऋग्वेद में कहा गया है कि स्त्रियों का स्थान शूद्रों तथा कुत्तों के समान है।
7. स्त्रियों को वेद पढ़ने-पढ़ाने का कोई भी अधिकार नहीं था और न ही वह धार्मिक क्रिया कर्म कर सकती थीं।
8. अथर्ववेद में महिलाओं को केवल संतान उत्पन्न का साधन माना जाता था।
9. लड़कियां उनके लिए अभिशाप थीं।
10. स्त्रियां एक वस्तु समझी जाती थीं उन्हें खरीदा तथा बेचा जा सकता था।

यह सब भारत की अधिकांश जनता और विशेषत: हिन्दुओं की सहनशीलता का चीरहरण है, क्योंकि लेखकगण/संकलक यह जानते हैं कि संपूर्ण समाज, जिसके लिए श्रीराम और भगवती सीताजी लाखों वर्षों से अराध्य हैं, वह अति सहनशील है। ऐसा नहीं है कि इसके विषय में विद्वानों ने दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति का ध्यान आकर्षित न किया हो, किन्तु अनर्गल उत्तर देकर उपरिलिखत अश्लील वाक्यों को हटाया नहीं गया। मेरठ कॉलेज के राजनीति विज्ञान के पूर्व अध्यक्ष डॉ. के.सी.गुप्ता (पता : 87, गोल्डन एवेन्यु-1, रुड़की रोड, मेरठ) ने यह ज़ोर देकर लिखा कि ऐसे वाक्यों से क्या रामायण की पूरी कथा उपहास बनकर नहीं रह जाएगी? क्या शिष्टता के हित में ऐसे वाक्य हटाए नहीं जा सकते? उन्होंने यह भी लिखा कि यह तरीका विश्वप्रसिद्ध और अत्यंत प्रतिष्ठित कथा को पूरी तरह निरर्थक बना देने जैसा है।

'राष्ट्रीय सहारा' दिल्ली के दिनांक 11 फरवरी 2008 के अंक में इस पूरे प्रकरण को सविस्तार छापा गया है। इसके पश्चात् 28 फरवरी 2008 के दिल्ली से प्रकाशित 'राष्ट्रीय सहारा' में किन्हीं श्री अवनिजेश अवस्थी का विचारोत्तेजक लेख प्रकाशित हुआ है। उक्त लेख में स्तंभकार ने निम्नलिखित सूचनाएं दी हैं :-

विद्वान् स्तंभकार ने लिखा है - "हिन्दुस्तान की बाकी भाषाओं के संदर्भ में तो पता नहीं, हिन्दी में एक मुहावरा बहुधा प्रयोग में आता है - <u>'अपनी-अपनी रामकहानी'</u>। मुहावरों के निहितार्थ बड़े गहरे होते हैं, इसमें कोई संदेह नहीं। लेकिन इस मुहावरे के प्रचलित होने का एक कारण यह भी लगता है कि भारतवर्ष की <u>शायद ही कोई भाषा या बोली हो जिसमें रामकथा न कही गई हो-जिसकी अपनी रामकहानी (रामकथा) न हो</u>। यही नहीं, राम की लाला स्थली कहे जाने वाले भूभाग यानी वर्तमान उत्तर, मध्य और बिहार प्रदेश के लोकगीतों तक में रामकथा ही भरी पड़ी है। <u>सच्चाई तो यह है कि जन्म से लेकर मृत्यु तक कोई ऐसा प्रसंग, अवसर, त्यौहार और संस्कार नहीं जिसमें रामकथा न कही जाती हो।</u> इस रामकथा के संदर्भ में उल्लेखनीय बात यह है कि भारत के साथ ही समूचे दक्षिण पूर्व एशिया का कोई ऐसा देश नहीं

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

जिसकी अपनी रामकथा न हो–भारत की तो आर्य द्रविड़ कही जाने वाली सभी भाषाओं में रामकथा का सृजन हुआ ही है। सिर्फ स्मरण दिलाने के लिए यह उल्लेखनीय है कि फादर कामिल बुल्के नामक हिन्दी के विद्वान् ने भी रामकथा उत्पत्ति और विकास नामक शोध ग्रंथ तैयार किया था जो आज तक रामकथा के क्षेत्र में शोध का मानक है। और यह रामकथा है जिसके बारे में रामधारी सिंह दिनकर ने 'संस्कृति के चार अध्याय' नामक अपने ग्रंथ में, जिसकी प्रस्तावना पं. जवाहर लाल नेहरू ने लिखी थी, लिखा था–'किन्तु फिर भी इससे यह बात सरलता से सिद्ध हो जाती है कि रामकथा ने इस देश की संस्कृति की कितनी गंभीर सेवा की है, और कैसे इस कथा को लेकर सारा देश लगभग एक आदर्श की ओर उन्मुख रहा है। इसके साथ अगर तिब्बत, सिंहल, खोतान, हिन्द–चीन, श्याम, ब्रह्मदेश, कश्मीर और हिन्देशिया में प्रचलित रामकाव्यों की सारिणी मिला दें तो सचमुच ही यह मानना पड़ेगा कि रामकथा न केवल भारतीय वरन एशियाई संस्कृति का भी एक महत्वपूर्ण तत्व बन गई थी।"

मजे की बात यह है कि तीन सौ रामायण की चर्चा करने के नाम पर रामानुजम ने अपनी मर्जी से केवल पांच रामायणों को चुन कर बिना संदर्भों के रामकथा के संबंध में तमाम अनर्गल किस्सों की चर्चा की है।

स्पष्ट है कि दिल्ली विश्वविद्यालय प्रतिभाओं से खाली हो गया है और जैसे लोग सारे देश में कुर्सियों पर काबिज़ हैं, वैसे ही दिल्ली विश्वविद्यालय में भी हैं।

संपादक मंडल

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

पालीताणा की हुतात्मा

*-डॉ. रामसनेही लाल शर्मा**

गुजरात का छठवां सुल्तान महमूद बेगड़ा बड़ा क्रूर, निर्दय, धर्म द्रोही और दुर्दान्त शासक था। वह भयंकर हिन्दू विरोधी था। इसने अपने राज्य का बड़ा विस्तार किया। यह ऐसा भोजन भट्ट था कि इसके खाने की मात्रा को लेकर पूरे देश में अनेक किंवदन्तियां प्रचलित हो गई थीं। प्रसिद्ध उपन्यासकार वृन्दावनलाल वर्मा के अनुसार वह 150 केले, एक सेर मक्खन और एक सेर शहद तो जलपान में ही लेता था और पूरे दिन में लगभग एक मन अन्न खाता था। इसी महमूद बेगड़ा ने पावागढ़ और जूनागढ़ के किले जीत लिए। इन दोनों स्थानों और अपनी सेना के मार्ग में पड़ने वाले हिन्दू मंदिरों को उसने तोड़ डाला। निर्ममतापूर्वक हिन्दुओं का कत्लेआम करवाया और फिर उसकी सेना पालीताणा की ओर बढ़ने लगी। पालीताणा में जैनों का प्रसिद्ध तीर्थराज शत्रुंजय स्थित है। बेगड़ा उसी विशाल मंदिर को तोड़ने आ रहा था। पालीताणा के लोगों तक यह समाचार पहुँचा तो वे काँप गए। जैनों की एक बड़ी सभा हुई। शत्रुंजय को बचाने के उपाय सोचने लगे परन्तु उस दुर्दान्त आततायी के हाथों मंदिर को बचाने का कोई उपाय समझ में नहीं आया। जैन समाज किंकर्तव्यविमूढ़ हो गया। किसी बुद्धिमान जैन सज्जन ने कहा कि अब तक इस संकटकाल में शत्रुंजय की रक्षा केवल पालीताणा के ब्रह्मभट्ट ही कर सकते हैं। पालीताणा के ब्रह्मभट्ट बड़े धर्मप्राण, विद्वान्, संघर्षशील और हठी के रूप में प्रसिद्ध थे। जैन समाज के सभी संभ्रान्त जनों ने ब्रह्मभट्टों की शरण ली और उनसे अपने तीर्थराज को बचाने की प्रार्थना की। उन्होंने कहा कि इस आततायी सुल्तान की सेना के सम्मुख हम जैन असहाय हैं। आप जैसे विद्वान् और धर्मरक्षक हमारे तीर्थ की रक्षा कीजिए। ब्रह्मभट्टों ने उन्हें शत्रुंजय की रक्षा का वचन दिया और सबसे वृद्ध ब्रह्मभट्ट ने उन्हें धर्म पर अपना बलिदान करने को प्रेरित किया। अहिंसक विरोध के द्वारा तीर्थराज की रक्षा का निश्चय हुआ क्योंकि रक्तलोलुप, धर्मद्रोही, क्रूर सेना का सशस्त्र विरोध कोई अर्थ नहीं रखता था।

दूसरे दिन निश्चित समय पर पालीताणा के एक हजार ब्रह्मभट्ट शत्रुंजय की तलहटी में एकत्र हुए। प्रत्येक बलिदानी ब्रह्मभट्ट श्वेत अंगरखा पहले चंदन चर्चित भाल और गले में रुद्राक्ष की माला धारण किए था। सबकी कटि में कटारें थीं। सुल्तान बेगड़ा को इन दृढ़ निश्चयी ब्रह्मभट्टों के तलहटी में एकत्र होने का समाचार मिल गया। अब बिना मंदिर तोड़े आगे बढ़ना उसे अपना अपमान लगा। वह सेना सहित तलहटी में पहुँचा। सबसे आगे घोड़े पर सवार बेगड़ा मंदिर की सीढ़ियों के नीचे तक चला आया। सर्वाधिक वृद्ध ब्रह्मभट्ट ने आगे बढ़कर उसकी प्रशंसा की और उससे ब्रह्मभट्टों के सम्मान की रक्षा का आग्रह किया परन्तु धर्मद्रोही बेगड़ा इसे सुनकर और अधिक क्रोधित हो गया। उसने सैनिकों को उस वृद्ध को घसीट कर रास्ते से हटाने का आदेश दे दिया। सिपाही आगे बढ़े परन्तु जब तक वे उस पवित्र वृद्ध का शरीर छूते उसने 'जय अम्बे' का वज्रघोष किया और कमर से कटार निकालकर अपने पेट में घोंप ली। रक्त का फव्वारा फूट पड़ा और खून की कुछ बूंदे सुल्तान के चेहरे पर भी पड़ीं। उस हुतात्मा के मृत शरीर को बगल में छोड़कर सुल्तान आगे बढ़ने को

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

तत्पर हुआ तभी अगली सीढ़ी पर खड़े दूसरे ब्रह्मभट्ट ने 'जय अम्बे' का प्रचण्ड उद्‌घोष कर कटार निकाल कर अपने पेट में घोंप ली। सुल्तान एक बार तो हतप्रभ रह गया और उसकी गति रुक गई। वजीर ने उसे ब्रह्मभट्टों की धर्मप्राणता और हठधर्मिता के विषय में समझाया। परन्तु अपने मुल्ला-मौलवियों का रुख देखकर सुल्तान मानने को तैयार नहीं हुआ। उसका अनुमान था कि दो-चार लोगों के मरने पर ब्रह्मभट्ट भयभीत होकर वहाँ से चले जाएंगे। वह आगे बढ़ा परन्तु तीसरी सीढ़ी पर एक कोमल कमनीय काया, कामदेव के सौन्दर्य को अपनी सुन्दरता लजाने वाला हँसता हुआ दृढ़ निश्चयी षोडष वर्षीय किशोर खड़ा था। सुल्तान जब तक उसके पास पहुँचे उसने 'जय अम्बे' का उद्‌घोष किया और कटार पेट में घोंप ली। उसके गर्म रक्त से सुल्तान सिर से पाँव तक नहा गया।

यह अकल्पनीय दृश्य देखकर सुल्तान महमूद बेगड़ा का कलेजा हिल गया। वह भीतर तक काँप गया। इन हुतात्माओं की आत्माहुति ने उसे झकझोर दिया। वह पीछे लौटा और उसने अपने सरदारों को आदेश दिया कि मार्ग में खड़े सभी ब्रह्मभट्टों को कैद कर लिया जाए। सुल्तान का आदेश का पालन करने के लिए उसका सरदार खुदाबन्द खान जैसे ही आगे बढ़ा कि एक सत्तर वर्षीय वृद्ध ने कटार से अपना पेट चीर डाला और अपनी आँतों की माला खुदाबन्द खान के गले में डाल दी। बौखलाकर सरदार ने माला अपने गले से उतार दी और अगली सीढ़ी पर खड़े जवान को पकड़ने को आगे बढ़ा। जब तक खुदा बन्दखान उसके पास पहुँचे कि उसने वज्रनिनाद में 'जय अम्बे' का घोष किया और कटार अपने पेट में घोंप ली। अब स्थिति यह हो गई कि ज्यों ज्यों बौखलाकर खुदाबन्द खान अगली सीढ़ी की ओर बढ़ता कि वहाँ खड़ा ब्रह्मभट्ट कटार से अपनी आत्माहुति दे देता था। इस तरह 8 लोगों ने बलिदान कर दिया। ब्रह्मभट्टों के इस रोमांचकारी अकल्पनीय आत्म बलिदान को देखकर खुदाबन्द खान भी काँप गया। वह पीछे लौटा और उसने सुल्तान बेगड़ा से लौट चलने की प्रार्थना की। क्रोधित और दिग्भ्रमित सुल्तान ने अपने खूंखार, निर्दयी और पाशविक वृत्तियों वाले सैनिकों को छाँटकर सभी ब्रह्मभट्टों को मारने का आदेश दिया। अब शत्रुंजय की सीढ़ियों पर 'भूतो न भविष्यति' जैसा महान् दृश्य था। महमूद के सैनिक जिस सीढ़ी के पास पहुँचते उसी पर खड़ा ब्रह्मभट्ट 'जय अम्बे' का तुमुलनाद कर आत्माहुति दे देता। इन वीर हुतात्माओं के इतने शव देखकर सुल्तान बेगड़ा घबरा गया। उसी समय एक ग्यारह वर्षीय सौन्दर्य की प्रतिमूर्ति वहाँ आई और उसने सुल्तान बेगड़ा की भर्त्सना करते हुए उसे धिक्कारा। उसने कहा, "अरे ! दुरात्मा महमूद तू तो गुजरात का पालक था फिर तू ही घातक कैसे बन बैठा। तूने अपनी धर्मप्राण जनता के खून से अपना कुल कलंकित कर लिया। यदि अभी भी तेरी प्यास नहीं बुझी तो देख एक हज़ार पालीताणा के और हज़ारों की संख्या नीचे तलहटी में खड़े ब्रह्मभट्ट अपना बलिदान देने को तत्पर खड़े हैं।" ऐसा कहते-कहते उस बालिका ने 'जय अम्बे' का जयघोष करके अपने हाथों से अपना मस्तक उतार कर फेंक दिया। इस असीम साहस की प्रतिमूर्ति नन्हीं बालिका की आत्माहुति देखकर सुल्तान काँप गया। उसके साहस ने जवाब दे दिया। उसने काँपते कण्ठ से अल्लाह से अपने अपराध की क्षमा याचना की और सेना को लौट चलने का हुक्म दिया। उसी दिन से महमूद बेगड़ा ने अपने राज्य मे किसी भी धर्म के धार्मिक स्थल को नष्ट करने पर प्रतिबंध लगा दिया।

शत्रुंजय तीर्थराज में 107 ब्रह्मभट्टों और एक कुमारी ने स्वेच्छा से आत्माहुति दी थी। उसी दिन से जैन समाज ने शत्रुंजय की पुरोहिती पालीताणा के ब्रह्मभट्टों को सौंप दी। शत्रुंजय का यह तीर्थराज आज भी हुतात्मा ब्रह्मभट्टों की जयकथा कह रहा है।

**86, तिलक नगर, बाईपास रोड, फीरोज़ाबाद-283 203*

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

भारतीय जीवन मूल्य

क्षीरसागर में मिली शेषनाग की शय्या

अमेरिका और फ्रान्स के वैज्ञानिकों ने संयुक्तरूप से शोध करके दुनिया के सामने हिन्दू-धर्मग्रंथों के इस कथन का प्रमाण प्रस्तुत किया है कि समुद्र की गहन गहराइयों में शेषनाग की शय्या है। विज्ञानियों ने इसे "सर्पेण्टाइन राक्स" की संज्ञा दी है। **शेषनाग की वेदों, पुराणों में वर्णित शय्या के समान ये चट्टानें 200 किलोमीटर के गोलार्द्ध में फैली हैं और एक के ऊपर एक उसी तरह कुण्डलीबद्ध हैं जैसे शेषनाग की शय्या।** चट्टानों की स्थिति के बारे में विज्ञानी कहते हैं कि ये चट्टानें उसी तरह नरम हैं जैसे सर्प की देह। विज्ञानी कहते हैं कि 60 कि.मी. की गहराई से 200 कि.मी. की गहराई तक ये चट्टानें कुण्डलीकार हैं और इन्हीं की नरमी के कारण जब कभी ये डोलती हैं तो धरती की गहराई की कठोर चट्टानों में कम्पन होता है। इन्हीं कठोर चट्टानों के कम्पन और सरकने के कारण धरती पर भूकम्प और सुनामी का कहर बरपा होता है।

अमेरिका के विज्ञानियों ने समुद्र की चट्टानों की स्थिति के बारे में शोध का कार्य 27 साल पहले प्रारंभ किया था। 16 साल पहले फ्रांस के विज्ञानियों के दल ने भी इसमें सहयोग किया। शोधपत्र में यह कहा गया कि सर्पेण्टाइन राक्स ही वह असली वजह है जिसके कारण धरती की सतह में स्थित विशाल चट्टानों में उथल-पुथल होती है। इसी उथल-पुथल के कारण धरती पर भूकम्प आते हैं। इन दो देशों के संयुक्त शोध के साथ ही जर्मनी के विज्ञानियों ने भी एक शोध पत्र प्रस्तुत किया है, जिसमें कहा गया है कि धरती की भीतरी सतह में स्थित गोलाकार चट्टानें कई परतों में हैं और 2000 कि.मी. तक पाई जाती हैं। इन तीन देशों के विज्ञानियों के शोध की दिशा वही है, जो हिन्दू धर्मग्रन्थों खास कर श्रीमद्भागवत और अन्य पुराणों में लिखा हुआ है, कि धरती का भार शेषनाग धारण किए हुए हैं। शेषनाग जब कभी करवट बदलते हैं, डोलते हैं तो धरती काँप उठती है। यही कम्पन भूकम्प के रूप में हमारे सामने आते हैं। विदेशी विज्ञानियों के इस शोध से वैज्ञानिक पुष्टि हुई है कि हिन्दू धर्मग्रन्थों में लिखी बातें कपोलकल्पित नहीं हैं। **हमारे ऋषि-मुनि वास्तव में शोधकर्त्ता**

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

वैज्ञानिक थे और उन्होंने अपने दीर्घ अन्वेषण के आधार पर जो निष्कर्ष निकाले थे, वे अकाट्य हैं। उन अकाट्य प्रमाणों की अब तक खिल्ली उड़ाने वाले मीडिया और छद्म सेक्युलरवादी लोग दाँतों तले अँगुली दबाये बैठे हैं। अब उन्हें बोलते नहीं बन रहा कि इन सर्पेन्टाइन चट्टानों (शेषनाग की शय्या) के बारे में वे क्या करें। उन्हें सबसे ज्यादा चिन्ता इस बात की है कि प्राय: उन्हीं सेक्युलरवादियों का मुख बनकर हिन्दुत्व पर प्रहार करने वाले एक हिन्दी चैनल ने अपना प्रमुख समाचार बनाकर शेषनाग की शय्या वाला यह विदेशी शोध प्रसारित किया और कहा कि **निश्चित रूप से क्षीरसागर में शेषनाग की शय्या वाली हिन्दू धर्मग्रंथों की बात सही है।**

'पथ संकेत' 5 दिसम्बर 2008, राजेन्द्र नगर लखनऊ-4 से साभार

राम और रामसेतु का संबंध पुराणों से : कर्ण सिंह

मिर्जापुर । भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के अध्यक्ष डॉ. कर्ण सिंह ने कहा है कि रामसेतु के मुद्दे पर धार्मिक भावनाओं को आहत करना ठीक नहीं है। राम दुनिया के हर हिन्दू के आस्था के केन्द्र हैं। रामसेतु के विषय में 'भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग' द्वारा रिपोर्ट प्रस्तुत कर बवाल खड़ा करना हिन्दू धर्मावलम्बियों की आस्था पर प्रहार है। यह बातें डॉ. सिंह ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के मिर्जापुर स्थित राजीव गांधी दक्षिणी परिसर में नवनिर्मित केन्द्रीय कार्यालय का उद्घाटन करने के पश्चात् कहीं। डॉ. सिंह ने कहा कि रामसेतु के विषय में किसी भी संस्था द्वारा सर्वे कर उल-जलूल रिपोर्ट पेश करना अच्छी बात नहीं है। उन्होंने कहा कि रामसेतु से भारत ही नहीं विदेशों में भी रह रहे हिन्दू मतावलम्बियों की आस्था भी जुड़ी है। विदेशों में रह रहे हिन्दू उसे राम से ही जोड़कर देखते हैं क्योंकि रामसेतु का जिक्र पुराणों में भी किया गया है। इससे हिन्दू मतावलम्बियों की आस्था भी जुड़ी है। उन्होंने कहा कि रामसेतु किसी भी राजनीतिक पार्टी का मुद्दा नहीं है, वह दुनिया भर के हिन्दुओं की अस्मिता का मुद्दा है।

डॉ. सिंह ने कहा कि आतंकवाद आज भारत ही नहीं बल्कि दुनिया भर के लिए विकट समस्या बनी हुई है। आतंकवाद से मुकाबला करने के लिए केन्द्र व राज्य सरकारों को सामूहिक रूप से प्रयास करने की जरूरत है। हमें समाज व राष्ट्रविरोधियों को पहचान कर उस का मुकाबला करने के लिए हमेशा तत्पर करने की जरूरत है। तभी देश व दुनिया से आतंकवाद का सफाया किया जा सकता है।

उन्होंने कहा कि आतंकवाद का विषपौध वृक्ष का रूप न ले इसके लिए सरकार के साथ जनता की भी जिम्मेदारी बनती है। उन्होंने कहा कि भारत में हो रहे शृंखलाबद्ध विस्फोटों के पीछे पड़ोसी देशों की राजनीतिक कुण्ठा का परिदृश्य सामने आता है। उन्होंने कहा कि काशी, फैजाबाद और लखनऊ में जिस तरह से भारतीय संविधान के रक्षकों पर आक्रमण किया गया है वह किसी मज़हब, संस्कृति और वर्ग का अंग नहीं हो सकता।

'अयोध्या संवाद' 20 से 26 दिसम्बर, कारसेवकपुरम्, अयोध्या से साभार

भगवान् श्रीराम के 73 पूर्वजों की जानकारी वाली पाण्डुलिपि मिली

सोनांचल में तुलसीकृत मानस के बालकाण्ड की दुर्लभ पाण्डुलिपि मिली है, 194 पृष्ठ की पोथी के पन्नों को कई जगह दीमक चट कर गए हैं। लेकिन शोधार्थियों का मानना है कि इस पाण्डुलिपि की मदद से अयोध्या के इतिहास और सूर्यवंशियों के अतीत पर नई रोशनी डाली जा सकेगी। राबर्ट्सगंज कोतवाली क्षेत्र के बनौरा गाँव में मिली पाण्डुलिपि के पहले दो पृष्ठों में दी गई सूर्यवंशावली में प्रभु श्रीरामचन्द्र के पहले के उन 73 राजवंशों का जिक्र है, जिनके बारे में अब

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

तक पुराणों में भी अद्यतन जनकारी नहीं मिल सकी थी। इसे राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन कार्यक्रम में शामिल किया जाएगा। बनौरा गाँव में हासिल की गई साढ़े 13 इंच लम्बी और 10 इंच चौड़ी पाण्डुलिपि से सूर्यवंश की 94 पीढ़ियों के राजाओं और उनकी रानियों-पटरानियों का पता चल सकेगा। इस वंश के पहले पांच राजाअें में निरंकारवेम्प्रकार, वोकर, तोये, कमलासन और ब्रह्म की रानियों का पता नहीं है। सूर्यवंशियों की सूची में मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम और सीता का नाम 74वें क्रमांक पर है। हिन्दुस्तानी एकेडमी की ओर से 1932 में प्रकाशित 'अयोध्या का इतिहास और वंशावली' से इसे काफी भिन्न और महत्वपूर्ण माना जा रहा है। हिन्दी साहित्य सम्मेलन में पाण्डुलिपियों के विशेषज्ञ डॉ. उदयशंकर दुबे इस पर गहन शोध कर रहे हैं। श्री दुबे के अनुसार इस पाण्डुलिपि में जिन राजा-रानियों के उल्लेख हैं उनमें से कई पुराणों में नहीं मिल रहे हैं। देसी कागज, स्याही और लिखावट से ही पाण्डुलिपि 19वीं शताब्दी की लगती है। इस पाण्डुलिपि के हर पृष्ठ पर 13 पंक्तियां हैं और हर पंक्ति में 52 शब्द हैं और लिपि कैथी है। इस पाण्डुलिपि को राबर्ट्सगंज स्थित लोकवार्ता शोध संस्थान के संग्रहालय में सुरक्षित रखा गया है।

'हिन्दू सभा वाता' साप्ताहिक, दिल्ली 30 जनवरी-5 फरवरी 2008, से साभार

दुनिया भर को 'रामायण की लंका' का न्योता

राम थे या नहीं, थे तो लंका जाने के लिए उन्होंने समुद्र पर सेतु निर्माण किया था या नहीं और वह लंका गए थे या नहीं ...। सरकार के स्तर पर इन बातों को लेकर भारत में संकोच हो सकता है, लेकिन श्रीलंका सरकार को ऐसा कोई संकोच नहीं है। वहां की सरकार राम को भी मानती है और 'रामायण' व 'रामचरित मानस' में लिखी गई तमाम बातों को भी।

यही नहीं, श्रीलंकाई सरकार दुनिया भर के लोगों को यह बताने-दिखाने की तैयारी भी कर रही है। श्रीलंका सरकार 'रामायण' में आए लंका प्रकरण से जुड़े तमाम स्थलों को पर्यटन केन्द्र के रूप में विकसित करने की योजना बना रही है। इसके लिए उसने भारत से मदद मांगी है। श्रीलंका पर्यटन विकास प्राधिकरण के प्रमुख एस.कलाईसेल्वम ने बताया कि इस परियोजना पर अध्ययन के लिए एक टीम भारत भेजी गई है जो रामायण में दिए गए सोने की लंका के ब्योरे को समझेगी। फिर उसे श्रीलंका में विकसित करने के लिए खाका तैयार करेगी। इससे यहां आने वाले विदेशी, खासकर भारतीय पर्यटकों को 'रावण की लंका' के कुछ खास स्थलों को देखने का मौका मिलेगा। श्रीलंका में मौजूद जिन स्थलों का 'रामायण' में जिक्र हुआ है, उन्हें चमकाए जाने की योजना है। उन स्थानों पर लाइट, साउंड और रिहाईश की उम्दा व्यवस्था की जाएगी। 'रामायण' के मुताबिक लंकापति रावण सीता का हरण कर उन्हें पुष्पक विमान में बैठाकर वेरांगटोटा ले गया था, जो महियांगना से 10

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

कि.मी. दूर स्थित है। महियांगना मध्य श्रीलंका स्थित नुवारा एलिया का एक पर्वतीय क्षेत्र है। **इसके बाद रावण सीता को 'गुरुलपोटा' ले गया, जिसे अब 'सीताकोटुवा' नाम से जाना जाता है। यहीं पर रावण की पत्नी मंदोदरी रहती थीं। यह स्थान महियांगना से 10 कि.मी. दूर स्थित है। सीता को 'सीता एलिया' स्थित गुफा में रखा गया था जो कोलंबो को नवारा एलिया से जोड़ने वाला राजमार्ग है। यहां सीता माता के नाम पर मंदिर भी है।** धर्मग्रंथ के मुताबिक, सीता मंदिर के साथ बहते झरने में ही स्नान किया करती थीं। इसके अलावा और भी स्थान श्रीलंका में मौजूद हैं, जिनका ऐतिहासिक महत्व है और पर्यटकों को इन्हें देखने का सौभाग्य मिलेगा।

'दैनिक जागरण' दिल्ली, दि. 26.12.08 से साभार

सिन्धु सभ्यता से भी जुड़ा कृष्ण का नाम

क्या पशुपति शिव की तरह वासुदेव कृष्ण भी आदि देवता हैं? क्या मोहनजोदड़ो की सभ्यता से मोहन का कोई संबंध था? उन्नाव के एक पुरालिपिविद् ने दावा किया है कि सिन्धु की खुदाई में मिली मोहरों में कई बार वासुदेव कृष्ण का नाम आया है। उनका दावा है कि कृष्ण हज़ारों साल पुरानी सिन्धु सभ्यता के लोगों के भी आराध्य थे।

सिन्धु लिपि पढ़ने का दावा करने वाले डॉ. करुणाशंकर शुक्ल की नई किताब – 'द डिसाइफरमेण्ट ऑफ इण्डस-सरस्वती स्क्रिप्ट' में इस बात का खुलासा किया गया है। यह किताब हाल ही में सी.आर.पब्लिशिंग कारपोरेशन, नई दिल्ली ने प्रकाशित की है। डॉ. शुक्ल का कहना है कि सिन्धु घाटी की खुदाई में मिली एक मुद्रा पर साफ तौर पर 'वासु' अंकित है।एक अन्य मुद्रा पर 'वासुचन्ध' (द्र) लिखा पाया गया है। एक दूसरी मुद्रा पर एक राजकुमार को दो सिंहों से लड़ते दिखाया गया है। उस पर वासु सिंह अंकित हैं एक मुहर पर वासु ज (न्म)प (त्र) लिखा पाया गया है। डॉ. शुक्ल के अनुसार एक अन्य सिन्धु मुद्रा पर वासु के साथ राधा का नाम भी पाया है। इस मुद्रा पर 'वासुण्ण-राधा' लिखा है। रोपड़ से मिली एक मुद्रा पर 'जसुदा' लिखा है। जिसकी डॉ. शुक्ल 'यशोदा' के रूप में पहचान करते हैं। डॉ. शुक्ल कहते हैं कृष्ण का संबंध द्वारका नगरी से था। द्वारका का अर्थ है विशाल द्वार वाली नगरी। अमेरिका के विद्वान् केनोयर ने मोहनजोदड़ो को 'मोहन का द्वार' कहा है। महाभारत युद्ध के 40 साल बाद द्वारका नगरी बाढ़ में डूब गई थी। 'प्रत्यगुहू: महान्य:' यानी वहाँ प्रलय जैसी बाढ़ आई थी। मोहनजोदड़ो में भी बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदा के पुरातात्विक प्रमाण मिले हैं।

'हरिवंश पुराण' के अनुसार श्रीकृष्ण ने इन्द्र के सम्मान में होने वाले 'इन्द्र मह पर्व' को बन्द करवाया था। इस पर्व का चित्रण सिन्धु घाटी के इलाके से मिली एक मोहर में मिलता है। जिसमें ऊँची पताकाएं तथा पशुओं के साथ जुलूस निकालते हुए जनसमूह को दिखाया गया है। डॉ. शुक्ल ने इन तमाम प्रमाणों के जरिए यह साबित करने की कोशिश की है कि श्री कृष्ण कहीं न कहीं सिन्धु सभ्यता से जुड़े थे।

दयाशंकर शुक्ल 'सागर'

हिन्दू सभा वार्ता, साप्ताहिक वर्ष 32, अंक 13, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली से साभार

कहो गर्व से हम हिन्दू हैं – बौद्धमत और सनातन धर्म में ऐक्य

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

यह सच है कि बौद्ध मत का उदय वैदिक धर्म पर पुरोहिती संकीर्णता के विरोधस्वरूप हुआ था, लेकिन यह केवल कर्मकांड तक सीमित था। वैदिक धर्म के अंश सनातन धर्म पर वेदान्त का जितना प्रभाव है, उतना ही बौद्ध मत पर भी है। **यदि 'धम्मपद' में आचारों के निर्धारण को पढ़ते हैं तो मनुस्मृति के आचारों का स्वरूप देखने को मिलता है। उपनिषदों के वैराग्य भाव को बौद्धमत में स्वीकार किया गया है। भगवान बुद्ध ने वैराग्य को ही निर्वाण का सहज मार्ग बताया।** बौद्ध जातक कथाएं पूर्णतया सनातन पौराणिक परम्पराओं पर आधारित हैं। पुनर्जन्म का सिद्धांत और कर्माधारित जन्म-विधान को बौद्ध मत में भी स्वीकार किया गया है। यह वैदिक धर्म की विशिष्टता रही है। सच बात यह है कि भगवान बुद्ध पुरोहितों की संकीर्णता से वैदिक चिंतन को मुक्त कर नवीन ऊर्जा प्रदान करना चाहते हैं। उनका यह प्रयास पर्याप्त सफल रहा। सनातन समाज ने पुरोहिती का बहिष्कार करना आरंभ कर दिया और भगवान बुद्ध को महान अवतार के रूप में प्रतिष्ठित किया।

यदि संगहनता से देखा जाए तो बौद्ध दर्शन उपनिषदों के आत्मा और परमात्मा सिद्धांत का ही संस्करण है। वैदिक यम और नियमों को बौद्ध दर्शन में यथावत् स्वीकार किया गया है। ये ही बौद्धमत के मूल सिद्धांत भी हैं। सनातनी परम्परा में बौद्ध मत का अत्यंत गहरा प्रभाव पड़ा। **निर्गुण उपासना के स्थान पर सगुण उपासना की परम्परा बौद्ध उपासना पद्धति की ही देन है।** बौद्ध मठ की देखा-देखी मंदिरों का निर्माण आरंभ हुआ। **पहले केवल बुद्ध की प्रतिमा होती थी, फिर पौराणिक अवतारों और देवी-देवताओं की मूर्तियां भी बनने लगीं।** धर्म का आगम-निगम विभाजन भी बौद्ध चिन्तन का अंग माना जाता है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि सनातनी परम्परा ने भगवान बुद्ध को अत्यंत सहज भाव से एक अवतार के रूप में स्वीकार किया। वहीं बौद्ध साहित्य में सनातनी अवतारों को सम्मानजनक स्थान मिला। प्रारंभिक काल में भारत में प्रचलित धार्मिक आस्थाओं का वर्ग विभाजन नहीं था। मध्य एशिया के संपर्क में आने के पश्चात आस्था आधारित नामकरण की परंपरा शुरू हुई। 11वीं शताब्दी तक सब ही एक श्रेणी में माने जाते थे। **12वीं शताब्दी के मुस्लिम इतिहासकारों ने सनातनी और बौद्ध समाज का विभाजन किया।** बौद्धमत हिन्दू धर्म की एक महान आध्यात्मिक धारा है इसका प्रभाव धीरे-धीरे बढ़ रहा है। एक हिन्दू होने के नाते बौद्ध दर्शन पर हमें गर्व है।

'हिन्दू सभा वार्ता' साप्ताहिक, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली , 5 दिसम्बर- 11 दिसम्बर 07, से साभार

उत्तर भारत एवं दक्षिण भारत की भाषाओं का अंतर्सम्बन्ध

- डॉ. रामशरण गौड़

भाषा विज्ञान के अनुसार भारोपीय परिवार की समस्त भाषाओं को चार वर्गों में रखा जाता है जिनमें आर्य परिवार और द्रविड़ परिवार प्रमुख हैं। आर्य परिवार में हिन्दी तथा उत्तर भारत की गुजराती, मराठी, असमी, उड़िया, बांग्ला, पंजाबी आदि भाषाएं तथा द्रविड़ परिवार की कन्नड़, तेलुगु, तमिल और मलयालम भाषाएं आती हैं। इस संबंध में यह उल्लेखनीय है कि उत्तर-भारत की हिन्दी और दक्षिण भारत की भाषाओं में विभेद विदेशी विद्वानों ने यह कह कर कराया कि आर्य मध्य एशिया के प्रवासी थे और यायावर होकर भारत में आए थे। द्राविड़ ही यहाँ के मूल निवासी थे तथा इनकी भाषाओं में भी बहुत अन्तर है। यह मात्र एक भ्रान्ति है, वस्तुत: द्राविड़ शब्द एक स्थानवाचक शब्द है। विंध्याचल के दक्षिण के प्रदेशों को द्राविड़ प्रदेश व वहाँ के निवासियों को द्राविड़ कहा जाता था। इस प्रसंग में तमिल के विद्वान् डॉ. सौरिराजन का कथन यहाँ उल्लेखनीय है "अब भारतीय विद्वान् इस निर्णय पर आ चुके हैं कि आर्य मूलत: भारतवासी हैं। मध्य एशिया से आए प्रवासी या यायावर नहीं हैं। उसी प्रकार तथाकथित द्राविड़ लोग भी मूलत: दक्षिण पथ के निवासी हैं। भारत की

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

आदिवासी तथा वनवासी जनजातियां जो आर्यों से आचार-विचार में भिन्न थीं, वे द्राविड़ थे। द्राविड़ बताने की परिपाटी विदेशी विद्वानों ने ही चलाई है जो वास्तविकता से बहुत दूर है (अभिज्ञान, पृष्ठ-64)।

विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा रचित राष्ट्रीय गीत 'जन-गण-मन अधिनायक....' की पंक्तियां 'पंजाब, सिंध, गुजरात, मराठा, द्राविड़, उत्कल, बंगा .... ' कुछ इसी ओर संकेत करती हैं।

कहने की आवश्यकता नहीं है कि भारत की सभी भाषाएं या तो संस्कृत से विकसित हुई हैं या इन पर संस्कृत का प्रभाव है। उत्तरी भारत की सभी भाषाओं का आधार स्रोत संस्कृत है और उनकी अधिकांश शब्दावली संस्कृत से आगत है। स्थानीय कारणों से इन भाषाओं के शब्दों के उच्चारण में थोड़ा अंतर है तो इनके द्वारा अपनाई गई लिपि के कारण इनमें भेद मिलता है। संस्कृत इनके परस्पर संबद्ध होने का सुदृढ़ आधार है। गुजराती, मराठी, असमिया, उड़िया, बांग्ला आदि सभी भाषाओं की शब्दावली संस्कृत से आगत है तथा एक-दूसरे से बहुत मिलती-जुलती है। पूर्वांचल की भाषाओं की तो यह विशेषता है कि उड़िया, बांग्ला और असमिया में तो कोई भेद ही नज़र नहीं आता। बांग्ला जानने वाला व्यक्ति असमिया और उड़िया भाषाओं को आसानी से सीख सकता है।

उत्तर भारत की तथा दक्षिण भारत की भाषाओं का परस्पर संबद्धता का कारण भारत की सभी भाषाओं की संस्कृत निष्ठ प्रवृत्ति का होना है। मलयालम में 'विश्वविद्यालय' को 'सर्वकलाशाला' कहा जाता है तो 'विद्यालय' को तमिल में 'विद्यापीठ' और तेलुगु में विद्यालयम् और कन्नड़ में विद्यालयम् कहा जाता है जो उत्तरी भारत के लोगों को सहज ही समझ आ जाता है। दक्षिण के लोग संस्कृतनिष्ठ हिन्दी को आसानी से समझ लेते हैं। भाषाओं की संस्कृत निष्ठ होने की यह प्रवृत्ति उत्तरी भारत की भाषाओं तथा दक्षिण भारत की भाषाओं को एक सूत्र में पिरोती है। कहने की आवश्यकता नहीं है कि कन्नड़ और मलयालम में तो लगभग 80 प्रतिशत शब्द संस्कृत से लिए गए हैं। इसलिए डॉ. राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन ने संविधान सभा में भारत की राजभाषा उस हिन्दी को बनाने पर बल दिया जो संस्कृत निष्ठ हो तथा जिसकी भारत की अन्य भाषाओं की शब्दावली ग्रहण करने की क्षमता रखती। भारत के संविधान के अनुच्छेद 351 में यह प्रावधान है कि "संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार बढ़ाए। उसका विकास करे ताकि वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी के और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं के प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए जहाँ आवश्यक व वांछनीय हो वहाँ उसके शब्दभण्डार के लिए मुख्यत: संस्कृत से और गौणत: अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित कर सके।" संस्कृत से शब्दावली ग्रहण करने की यह प्रवृत्ति भारत की सभी भाषाओं में देखने को मिलती है। अनुसंधान किया जाए तो पता चलेगा कि भारतीय भाषाओं ने एक-दूसरे से कितने शब्द लिए हैं। हिन्दी ने अनेक शब्द भारतीय भाषाओं से लिए हैं। रसगुल्ला (बंगाली), कैंची, चाकू, (फख्तून) आदि ऐसे ही शब्द हैं जो हिन्दी की इस प्रवृत्ति के द्योतक हैं।

उत्तर भारत की भाषाओं और दक्षिण भारत की भाषाओं की एक-दूसरे से संयुति का कारण भारतीयों का संस्कृति के प्रति असीम अनुराग है। भारत की सभी भाषाओं में इस अनुराग को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है तथा भारतीय भाषाओं के लेखकों ने साहित्य में भारत की संस्कृति से कथानकों को ग्रहण कर अपने साहित्य को ही नहीं बल्कि भारतीय वाङ्मय को संपन्न किया है। भारत की सभी भाषाओं का श्रेष्ठ साहित्य भारत की पौराणिक और ऐतिहासिक सामग्री से परिपूर्ण है। इस प्रकार की कृतियाँ सभी भारतीयों के मन का अनुरंजन करती हैं जब अन्य भाषाओं का साहित्य अनूदित होकर उन तक पहुँचता है। संस्कृत के महान् ग्रंथ रामायण और महाभारत का प्रभाव तो भारत की सभी भाषाओं पर पड़ा है। उड़िया लेखिका प्रतिभा राय का उपन्यास 'द्रौपदी' महाभारत की कथा पर ही आधारित है तो मराठी लेखक विष्णुसखाराम खाण्डेकर का उपन्यास 'ययाति' पुराण कथा पर आधारित है। यह दोनों ऐसे उपन्यास हैं जिन्होंने उत्तर भारत से लेकर दक्षिण भारत तक सभी को प्रभावित किया है। कहने की आवश्यकता नहीं है कि राम कथा को आधार बनाकर जहाँ तुलसीदास ने 'रामचरितमानस' लिखी वहाँ तमिल के कम्ब की 'कम्ब रामायण' बांग्ला में कृतिवास की 'कृतिवास रामायण' तेलुगु में मौल्लि कुम्हारिन की 'मौल्लि रामायण' आदि रामायणों का सृजन राम आख्यान को आधार बना कर हुआ है। विश्व कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने एक रूपक द्वारा प्रान्तीय भाषाओं और हिन्दी के अन्तरसंबंध को स्पष्ट करते हुए इस संबद्धता का आधार संस्कृति को ही माना है।

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

"आधुनिक भारत की संस्कृति एक शतदल के समान है जिसका एक-एक दल प्रान्तीय भाषाओं और उसका साहित्य संस्कृति है। किसी एक को मिटा देने से उस कमल की शोभा नष्ट हो जाएगी। हम चाहते हैं कि भारत की सब प्रान्तीय बोलियां जिनमें सुन्दर साहित्य की सृष्टि हुई है, अपने घर में रानी बन कर रहें, प्रान्त के जन-गण की हार्दिक चिन्ता की प्रकाश भूमि स्वरूप कविता की भाषा होकर रहें और आधुनिक भाषाओं के हार के मध्य मणि हिन्दी भारत-भारती होकर विराजती रहे।" इस शृंखला में हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक मुंशी प्रेमचन्द का कथन भी द्रष्टव्य है। उन्होंने कहा था, भाषा का अटूट संबंध संस्कृति से होता है और चूंकि भूगोल संस्कृति का बहुत बड़ा उल्लेखनीय आधार है इसलिए प्रत्येक शब्द का वातावरण होता है। वह वातावरण संस्कृति द्वारा निर्मित होता है। यूरोप का व्यक्ति प्राय: बादलों को देखकर प्रसन्न नहीं होता। भारतवासी उन्हें देखकर अत्यंत प्रसन्नता प्रकट करता है। वह उन्हें देखकर गा उठता है और नाचने भी लगता है। डॉ. वेद प्रकाश वैदिक ने भी इस ओर संकेत करते हुए कहा है कि हमारा देश सूरज का देश है, धूप का देश है। यूरोप धूप के लिए तरसता है और हम बादलों के लिए। अब बताइए अंग्रेजी में कविता लिखने वाला हिन्दुस्तानी क्या करेगा। यदि वह बादलों की तारीफ करेगा तो उसकी कविता उसके पश्चिमी स्वामियों के गले नहीं उतरेगी और यदि वह कड़ाके की धूप पर गीत लिखेगा तो बादलों पर झूमने वाला उसका स्वाभाविक मन कैसे साथ देगा। इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति का मन उसके अपने प्राकृतिक परिवेश में ही रमता है जो किसी भी भूखण्ड का महत्वपूर्ण उपादान होता है।

भारत की भाषाओं के परस्पर संबद्धता का कारण लोक-संस्कृति भी है। भारत की विभिन्न क्षेत्रों के लोक-तत्त्व एक से ही हैं। इसके आंतरिक तत्त्व समष्टि चेतना, आनन्द और अनुभूतियां भी समान हैं। इसके बाहरी तत्त्व रीति-रिवाज़, खान-पान और वस्त्राभूषण, मनोरंजन के साधन आदि हैं। इन तत्त्वों को साहित्यकार अनायास ही ग्रहण करते हैं। लोक-संस्कृतिक के बाहरी उपादानों में भेद कितना भी हो, परन्तु इनका आन्तरिक सूत्र एक जैसा है जो भारत की विभिन्न भाषाओं के साहित्य को जोड़े हुए है।

इस संबंध में भारत के संविधान में स्पष्ट उल्लेख है "संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिन्दी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे ताकि वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्त्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी के और आठवीं अनुसूची में निविर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं के प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्यक या वांछनीय हो वहां उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यत: संस्कृत से और गौणत: अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।"

प्रत्येक भाषा अपनी लोक संस्कृति से ध्वनि, शब्दावली, उपमान आदि ग्रहण करती है। यह प्रवृत्ति उत्तरी भारत से लेकर दक्षिणी भारत तक भिन्न-भिन्न प्रान्तीय साहित्य में देखने को मिलती है। प्रकृति के प्रति अनुराग की प्रवृत्ति भारत की प्रत्येक भाषा में दिखाई पड़ती है। जो भारत की सभी भाषाओं की संबद्धता का परिचायक है, चाहे वह भारत के किसी भी भाग में बोली या पढ़ी जाती है। हिन्दी का एक उदाहरण यहाँ प्रस्तुत है :-

पीके फूटे आज प्यार के पानी बरसा री।
हरियाली छा गई, हमारे सावन सरसा री।
रुनझुन बिछिया आज हिला-डुल मेरी बेनी री।
ऊँचे ऊँचे पैंग, हिडोला सरस नसैनी री।
छल छल उठी हिलोर मगन मन पागल दरसा री।
पीके फूटे आज प्यार के पानी बरसा री।

भारत के तीर्थ स्थल और दर्शनीय स्थल जिनके प्रति प्रत्येक भारतवासी की श्रद्धा और आस्था है, भारत के सुदूर अलग-अलग क्षेत्रों में स्थित है, जहाँ भारत के प्रत्येक कोने से व्यक्ति तीर्थाटन को आते हैं। उनका आपसी संवाद अपनी ही भाषओं में होता है या टूटी-फूटी हिन्दी बोलते हैं जिसे सभी समझते हैं। इन तीर्थ-स्थलों के प्रति उनकी निष्ठा अन्य भाषा-भाषायी होने का परिचय नहीं देती है बल्कि सभी भाषाओं की संबद्धता का परिचय देती है। दक्षिण में रामेश्वरम् और कन्याकुमारी, उड़ीसा में जगन्नाथपुरी और कोर्णाक मंदिर, राजस्थान में आबू के जैन मंदिर, गुजरात में द्वारका पुरी,

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

बंगाल में कामाख्या और गंगासागर, उत्तर प्रदेश में अयोध्या और मथुरा, पंजाब में स्वर्ण मंदिर, हरियाणा में कुरुक्षेत्र, महाराष्ट्र में साईबाबा का मंदिर, आंध्र में तिरुपति बालाजी, उत्तराखण्ड में बद्रीनाथ और केदारनाथ, गंगोत्री-जमनोत्री आदि-आदि ऐसे तीर्थ स्थल हैं जो भारत की सांस्कृतिक एकता और राष्ट्रीय संबद्धता का द्योतन करते हैं। इस राष्ट्रीय एकता और संबद्धता का संक्रमण हमारे भारत की सभी भाषाओं में हुआ है। मैसूर के रंगनाथ मंदिर में तथा तिरुअनंतपुरम् के पद्मनाभ मंदिर में सोए हुए विष्णु ऐसे लगते हैं जैसे कि वे वृन्दावन में ही प्रतिष्ठित हुए हों। अतः भारतीय निवासियों की श्रद्धा और निष्ठा को एक सूत्र में बाँधने का काम हमारी निष्ठा के केन्द्र मंदिर करते हैं तथा उत्तरी और दक्षिणी भाषाओं की परस्पर संयुति का भी काम करते हैं।

पुस्तकालयों को मुफ्त पुस्तकें

जुलाई 2005 के अंत में बारिश और बाढ़ के कहर ने मुम्बई को हिला कर रख दिया था। हमारे यहाँ भी 5-5 फुट पानी भर गया था। जो पुस्तकें एक-दम खराब मलबे की हालत में थीं, वे तो उसी समय फेंक दी गई थीं। बहुत-सी भीगी पुस्तकें अब सूख चुकी हैं और एकदम पठनीय अवस्था में है। **आपकी जानकारी व आपके क्षेत्र में जो जरूरतमंद सार्वजनिक पुस्तकालय (रजिस्टर्ड) ऐसी पुस्तकें रखना चाहें, उन्हें हम ये पुस्तकें मुफ्त भेज देंगे। वे अपने पुस्तकालय का पूरा विवरण व रजिस्ट्री-पार्सल के लिए 70/-(सत्तर रुपये) का मनीऑर्डर या डाक टिकट भेजकर ये पुस्तकें मंगवा सकते हैं।** उनकी कोई खास पसंद या आवश्यकता हो, तो उसका उल्लेख भी कर दें, हम उसका भी ध्यान रखेंगे। हमारा पता है :-

व्यवस्थापक, जीवन प्रभात प्रकाशन,

ए-4/1, कृपा नगर, जैन मंदिर के सामने, इर्ला ब्रिज, मुम्बई-400 056

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

मेघालय सरकार ने शिक्षा विभाग ईसाई मिशनरियों को सौंपा

मेघालय के मुख्यमंत्री ने कहा है कि उनकी सरकार विभिन्न केन्द्रीय कार्यक्रमों को लागू करने पर विचार कर रही है। इसके बाद सरकार अपने दायित्व से मुक्त हो जाएगी। सेक्रेड हार्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के हीरक जयंती समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में भाषण करते हुए उन्होंने कहा कि 'हमने ईसाई मिशनरियों को साथ लेने की योजना बनाई है। मेघालय सरकार में ईसाई मिशनरियों जैसी भावना नहीं होने के कारण अतीत में विभिन्न सरकारी योजनाओं को लागू करने में हम सफल नहीं हुए। मेघालय में गारो हिल्स में सरकार ने इस दिशा में एक कदम आगे बढ़ाया है। गारो हिल्स के कुछ हिस्सों में विभिन्न योजनाओं को लागू करने का दायित्व ईसाई मिशनरियों द्वारा संचालित शिक्षण संस्थानों को सौंपा है। मुख्यमंत्री ने विश्वास व्यक्त किया कि इस नीति को स्वीकार करने के काद ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन जैसी योजनाओं का लाभ जनता तक पहुँचेगा। मुख्यमंत्री ने आश्वासन दिया कि राज्य सरकार राज्य की शिक्षा नीति को शिक्षकों और जनसाधारण की राय जानने के बाद लागू करेगी। खासी भाषा को संविधान आठवीं अनुसूची में करने के बारे में उन्होंने कहा कि राज्य सरकार नई दिल्ली में इसे आठवीं अनुसूची में डालने के लिए वार्ता चला रही है।

माउलाय विधानसभा क्षेत्र के विधायक पीटी सावक्मी ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि ''खासी और जयंतिया हिल्स में ईसाई मिशनरियों ने ही शिक्षा व्यवस्था की नींव रखी। उन्होंने ही खासी भषा के लिए अक्षरों का अविष्कार किया। बिना अक्षरों के कोई भी खासी और जयंतिया हिल्स के लोगों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को लिख या पढ़ नहीं सकता।'' श्री सावक्मी ने कहा कि 'ईसाई मिशनरी केवल हमारे यहाँ गॉड के संदेश का प्रचार करने के लिए नहीं आए। शिक्षा उसका एक हिस्सा है। राज्य के सभी सबसे अच्छे विद्यालयों और महाविद्यालयों का संचालन ईसाई मिशनरी ही कर रहे हैं। राज्य के शिक्षितों के बढ़े हुए प्रतिशत के लिए भी मिशनरियों का महत्वपूर्ण योगदान है। इस समाचार से **स्पष्ट है कि धर्मनिरपेक्षता का ढिंढोरा पीटने वाली कांग्रेस सरकार के मुख्यमंत्री रिम्बाई किस प्रकार चर्च और मिशनरियों का गुणगान करने में व्यस्त हैं, धर्मान्तरण हेतु मिशनरियों के मुख्य हथियार शिक्षा और चिकित्सा को उसके हाथों में सौंप चुकी है और जो बाकी बचा है उसको भी सौंपने की तैयारी है। धर्मान्तरण करने वालों को 'सेक्युलर' कहकर उनके हाथ में सरकार को सौंपने में उसको कोई ऐतराज नहीं है।**

'हिन्दू सभा वार्ता' (साप्ताहिक) हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली, 30 जनवरी से 5 फरवरी 2008, से साभार

विकास का अमानवीय चेहरा

भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए इससे बेहतर सूचना और क्या हो सकती है कि पिछले 18 वर्षों में पहली बार विकास दर 9. 6 प्रतिशत रही? चूंकि यह विकास दर उम्मीदों से भी अधिक है इसलिए केन्द्र सरकार का खुश होना स्वाभाविक है, लेकिन

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

उसे चिंतित भी होना चाहिए। इसलिए होना चाहिए, क्योंकि करोड़ों लोगों के लिए विकास दर की इस आकर्षक उपलब्धि का कोई मतलब नहीं। **आखिर सरकारी आंकड़े ही यह कह रहे हैं कि लगभग 70 प्रतिशत आबादी प्रतिदिन 20 रुपये से अधिक अर्जित नहीं कर पा रही। इस 70 प्रतिशत आबादी का एक तबका तो ऐसा है जो महज 12 रुपये में अपना गुजर-बसर कर रहा है। क्या हमारे नीति-निर्माताओं ने कभी इस पर विचार किया है कि आखिर तीन सौ अथवा छह सौ रुपये (प्रतिमास) में कोई व्यक्ति अपना जीवन यापन कैसे कर सकता है?** ऐसा नहीं है कि ऐसे विचलित कर देने वाले आँकड़े पहली बार सामने आए हों, लेकिन उनकी अनदेखी ही की जा रही है। विडंबना यह है कि यह अनदेखी एक ऐसी सरकार के द्वारा की जा रही है जो आम आदमी के उत्थान के नारे के साथ सत्ता में आई थी। यदि आम आदमी के उत्थान का नारा नितांत खोखला नहीं होता तो ऐसा आर्थिक विकास कदापि देखने को नहीं मिलता जो एक सीमित वर्ग को लाभ पहुँचा रहा है। निःसंदेह यह वही वर्ग है जो पहले से ही आर्थिक रूप से सक्षम है। ऐसा आर्थिक विकास असंतुलित और अन्यायपूर्ण ही नहीं, बल्कि मानवता के खिलाफ भी है जो निर्धन वर्ग के उत्थान में सहायक न बन सके। राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण विभाग के आँकड़े सामने आने के बाद केन्द्रीय सत्ता की आँखें खुल जानी चाहिए, लेकिन इसके आसार कम ही हैं। इसी तरह इसकी संभावना भी न्यून है कि खुद को वंचितों और निर्धनों का मसीहा बताने वाले वाम दल नींद से जागेंगे।

यदि आम आदमी को लाभान्वित न करने वाला विकास हो रहा है तो इसके लिए संप्रग सरकार के साथ-साथ वाम दल भी बराबर के दोषी हैं। आखिर केन्द्रीय सत्ता के प्रत्येक निर्णय और विशेष रूप से आर्थिक मामलों से जुड़े फैसलों को प्रभावित करने वाले वाम दल यह क्यों नहीं देख सके कि आर्थिक विकास की मौजूदा रफ्तार आम आदमी के लिए कतई हितकारी नहीं सिद्ध हो रही है? बात-बात में अड़ंगा लगाने वाले वाम दलों ने केन्द्रीय सत्ता को उन उपायों पर अमल करने के लिए विवश क्यों नहीं किया जो आम आदमी के हालात बदलने वाले साबित होते? आखिर यह क्यों न मान लिया जाए कि वाम दलों की दिलचस्पी आम आदमी के हितों की रक्षा के स्थान पर अपने निहित स्वार्थों को पूरा करने में है? इसमें संदेह नहीं है कि केन्द्रीय सत्ता अपने शेष कार्यकाल में ऐसा कुछ कर सकेगी जिससे विकास से वंचित भारत का विशाल तबका लाभान्वित हो सकेगा, क्योंकि अब उसे निकट आ रहे आम चुनावों की चिंता सताने लगी है और उसने लोक-लुभावन फैसले लेने शुरू कर दिए हैं। अब तक का अनुभव यह बताता है कि ऐसे फैसले कारगर नहीं सिद्ध होते। यह दुर्भाग्यपूर्ण ही नहीं, बल्कि शर्मनाक भी है कि आकर्षक आर्थिक आंकड़ों के पीछे छिपे यथार्थ की उपेक्षा की गई। यदि ऐसा नहीं किया जाता तो असंतुलित विकास की जो भयानक तस्वीर उभरकर सामने आई है उससे बचा जा सकता था।

'दैनिक जागरण' दिल्ली, दि. 2 फरवरी 2008 से साभार

रोमिला थापर और भारत की छवि

– हरिकृष्ण निगम

यदि आज के भारतीय इतिहासकारों में हमारे प्राचीन इतिहास को धूल-धूसरित करने व पश्चिम में इसकी छवि पर सर्वाधिक चोट पहुँचाने वाले बुद्धिजीवियों पर नजर डाली जाए तो शायद रोमिला थापर का नाम सबसे आगे रखा जाएगा। उनके कैरियर के ग्राफ को ऊँचा उठाने में उनके घोर हिन्दू-विरोधी रुझान ने 'खुल जा सिम-सिम' जैसे जादुई मंत्र का काम किया है।

सन् 1960 में उन्होंने लंदन विश्वविद्यालय से पीएच.डी. की उपाधि ली और उनकी पहली कृति 'हिस्ट्री ऑफ इंडिया' का प्रथम भाग 1966 में प्रकाशित हुआ। इसी 'हिस्ट्री ऑफ इंडिया' का दूसरा भाग डॉ0 पर्सीवल स्पियर ने लिखा था जो भारत के मुगल व ब्रिटिश काल पर था। स्वयं रोमिला थापर ने 'हिस्ट्री ऑफ इंडिया' के भाग-एक के प्राक्कथन में कहा था कि यह ग्रंथ विशेषज्ञों के लिए नहीं सामान्य पाठकों के लिए है। अपनी सामान्य धारणाओं के बारे में वे सीधे कहती

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

हैं कि प्राचीन भारत के लोगों को इतिहास-बोध नहीं था, हिन्दू कालक्रम के बारे में सदैव लापरवाह थे और किंवदन्तियों और आख्याओं को ऐतिहासिक जामा पहनाने में प्रारंभ से ही पारंगत थे। आठवीं शताब्दी के पहले का अर्थात् इस्लाम के आगमन के पहले का इस देश का इतिहास, जिसे 'हिन्दू युग' कहा जाता है, वह सारा का सारा कालखण्ड महत्वहीन था।

हममें से अधिकांश लोगों को यह जानकार आज भी विस्मय होता है कि **नोबेल पुरस्कार विजेता सर विद्याधर एस. नायपाल ने लंदन टाइम्स में फारुख ढोंढी नामक पत्रकार को कुछ वर्ष पहले दिए एक साक्षात्कार में उनकी इतिहास-लेखन की राजनीतिक दृष्टि को खतरनाक ही नहीं, एक 'फ्रॉड' तक कह डाला था।** इसी तरह **डॉ. कर्ण सिंह ने जो एक समय इन्दिरा गांधी के मंत्रिमंडल में मंत्री थे, एक बार अपने मित्र रोमेश थापर से जो रोमिला थापर के बड़े भाई हैं, शिकायत की थी कि रोमिला थापर अपने विकृत व दुराग्रही इतिहास लेखन से 'भारत को नष्ट कर रही हैं।'** वे नहीं चाहते थे कि रोमिला थापर साम्यवादियों के हाथों एक मोहरा बन कर हिन्दू आस्था को नष्ट करने को अपना मिशन बनाएं।

रोमिला थापर का सन् 2004 में सोमनाथ मंदिर के ध्वंस पर जब 'सोमनाथ : मैनी वॉयसेज़ ऑफ हिस्ट्री' नामक ग्रंथ प्रकाशित हुआ तब साम्यवादियों बुद्धिजीवियों के साथ-साथ कुछ भारत-विरोधी अमेरिकी लॉबियों ने उन्हें सिर आंखों पर बैठा लिया क्योंकि इसमें हिन्दू-विरोध की उच्छृंखलता चरम सीमा पर पहुँच गई थी।

xxxxxxxxxxx (छोड़ दिया गया भाग)

अमेरिका के हवाई प्रान्त में रहने वाले भारतीय इतिहास के अध्येता ***ब्रैनन पार्कर*** रोमिला थापर के दुराग्रहों से परिचित थे और उनकी भारतीय अतीत के बारे में गलत सूचनाएं देने से पहले से ही परिचित थे। प्रतिष्ठित क्लूग चेयर पर उन्हें आसीन कराए जाने से वे क्षुब्ध थे। उन्होंने अमेरिकी कांग्रेस को एक पत्र लिखा कि रोमिला थापर कट्टर हिन्दू विरोधी और मार्क्सवादी विचारधारा से ग्रस्त हैं और भारत के बारे में भ्रम फैला चुकी हैं। हिन्दू सभ्यता पर मार्क्सवादी हमले के लिए अमेरिकी करदाताओं के पैसों की बरबादी क्यों हो ? **"हिन्दू संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन महान सभ्यता है, जिससे दुनिया बहुत कुछ सीख सकती है। हम इसकी बेइज्जती का समर्थन क्यों करें? भारत का एक मित्र होने के नाते मैं इसका विरोध करता हूँ।"** इसके लिए पार्कर ने अमेरिकी कांग्रेस के नाम एक हस्ताक्षर अभियान भी शुरू किया था। इस धोखेधड़ी से पर्दा उठाए जाने पर भारत के साथ-साथ साम्यवादियों के सहयोगियों ने साउथ एशिया सिटिजेन्स वेव नामक वेबसाइट पर उन्हें हिन्दूवादी एजेन्ट कह कर उनकी भर्त्सना शुरू की। ....

अपने विरुद्ध दुष्प्रचार चलाने वालों को इंगित कर **ब्रैनन पार्कर ने कहा कि – "क्या इसी तरह के आधारों पर दुनिया भर के मीडिया में हिन्दू-विरोधी समाचार छपते रहे हैं? क्या हिन्दुत्व को बदनाम करने के लिए निहित स्वार्थों से प्रेरित लोग सक्रिय हैं, जो ईसाई धर्मान्तरण बढ़ाने के लिए अनुकूल, ज्यादा पैसा? आखिर यह माजरा क्या है?"**

असहमति या आलोचना का प्रत्युत्तर देने की मार्क्सवादी शैली ही अलग है। उसमें अर्धसत्य और सफेद झूठ दोनों का अनूठा सम्मिश्रण होता है। सच तो यह है कि चाहे रोमिला थापर हो या इरफान हबीब अथवा हरबंस मुखिया या विपिन चन्द्र ये सभी मार्क्सवादी इतिहासकार अपने इतिहास-लेखन में भारत भू की वर्तमान राजनीतिक स्थिति में सांप्रदायिक तत्वों व राष्ट्रवादियों के विरुद्ध विष-वमन का अपना कर्तव्य निभा रहे हैं। यह वे स्वयं स्वीकार कर चुके हैं और महान राजनीतिक कारणों से सफेद झूठ फैलाने में गालियों पर उतर आते हैं। आस्टिन निवासी **इबेत रोस्सेर** ने 7 नवम्बर 2000 को टैक्सास विश्वविद्यालय में रोमिला थापर के खेमे के एक मार्क्सवादी इतिहासकार प्रो. के.एन.पणिक्कर का 'भारत का इतिहास का पुनर्लेखन' विषय पर एक भाषण सुना, उन्होंने आश्चर्य से नोट किया कि इतिहास से अधिक वे अपने राजनीतिक उद्देश्य की चर्चा कर रहे थे। रोस्सेर के अनुसार पणिक्कर या तो अकादमिक लेखन के मान्य तौर-तरीकों से अनभिज्ञ थे या फिर इतिहास के नाम पर राजनीति कर रहे थे। दूर अमेरिका में बैठ कर अपने ही देश के हिन्दुओं को अकारण बदनाम करने की बात श्रोताओं के गले नहीं उतरी क्योंकि वे इतिहास की जगह राजनीतिक प्रचारक का सामना कर रहे थे।

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

आज हम भूल चुके हैं कि अयोध्या के रामजन्मभूमि आन्दोलन के समय दो दशक पहले 1989 में रोमिला थापर ने अपने झूठों का नया पिटारा खोला था। 19वीं व 20 वीं शताब्दी के ब्रिटिश इतिहासकारों व स्वयं मुस्लिम वृत्तान्तों में जो कुछ भी लिखा गया था, रोमिला थापर ने उसे असत्य सिद्ध करने की जी-तोड़ कोशिश की। यहां तक कि नेहरू सरकार के समय 1951 के सोमनाथ मंदिर के जीर्णोद्धार के निर्णय को भी उन्होंने अपनी क्षुद्र दृष्टि से नेहरू-डॉ. राजेन्द्र प्रसाद विवाद के रूप में प्रस्तुत किया। नेहरू जी जैसे सोमनाथ के पुनर्निर्माण के विरुद्ध हों या वे कांग्रेस के इस निर्णय से अलग थे और यह प्रकरण मात्र डॉ. राजेन्द्र प्रसाद व 'जय सोमनाथ' के चर्चित लेखक के.एम.मुंशी जैसे कट्टरवादी हिन्दू नेताओं की साजिश थी- ये कहानियां रोमिला थापर जैसे इतिहासकार को छिछले स्तर पर राजनीतिबाज़ बना देती हैं।

यदि रोमिला थापर पर विश्वास किया जाए तो सोमनाथ पर 1026 में महमूद गजनवी का भयावह हमला, जिसने हिन्दू अन्तर्मन को अगले 800 वर्षों तक झकझोर कर रख दिया था, मुस्लिम, हिन्दू व ब्रिटिश इतिहासकारों द्वारा निजी स्वार्थों के लिए रची दन्तकथा थी। इसी तरह साक्ष्यों के बावजूद वे दोहराती रही हैं कि अयोध्या में 1528 में बाबर या उसके गवर्नर ने हिन्दू मंदिर को नष्ट कर वहाँ मस्जिद बनाने का आदेश नहीं दिया था। तब यह उनकी विषिप्तता ही कहलाएगी। यदि महमूद ने सोमनाथ को ध्वंस किया क्योंकि वह मात्र लुटेरा था, धर्म विरोधी नहीं, तब यह घटिया स्तर का असत्य ही कहा जा सकता है। उनके अनुसार हिन्दुओं का यह एक बड़ा 'अपराध' था कि उनके नगर व मंदिर समृद्ध थे और शांतिप्रिय भी थे। आक्रमण तो होना ही था।

रोमिला थापर को तो इस बात से भी चिढ़ है कि 19वीं शताब्दी के **जेम्स मिल** जैसे अनेक प्रसिद्ध इतिहासकारों ने भारतीय इतिहास को **'हिन्दू युग'** अथवा **'मुगलकाल'** जैसे कालखण्ड में विभाजित ही क्यों किया। वे सबके सब सांप्रदायिकता को बढ़ावा देने वाले थे क्योंकि वे हिन्दुओं को बताना चाहते थे कि उन्होंने देश को मुस्लिम शासन की यंत्रणाओं से छुटकारा दिलवाया। .... यदि प्रसिद्ध फारसी कवि शेखसादी अपने गुलिस्तान-बोस्तान में कहता है कि उसने सोमनाथ के मंदिर को देखा था तब रोमिला थापर उसे अविश्वसनीय कहती हैं। वे मंदिर को मस्जिद में बदले जाने की बात भी झूठ कहती हैं और सिर्फ उलुघ खान के पहले आक्रमण के बाद उसे मस्जिद में बदले जाने की बात स्वीकार नहीं करती हैं। उलटा उनके अनुसार उस समय स्वयं क्षेत्रीय हिन्दू राजा आक्रमण के समय मंदिर तोड़ते रहते थे। सोमनाथ में इस्लाम के आगमन के पूर्व की एक अरबी मूर्ति 'इज्जा' की पूजा होती थी जिसे महमूद तोड़ने के लिए आया था। अबुल फजल को उद्धृत करते हुए रोमिला थापर यह भी लिखती हैं कि 16वीं शताब्दी में अकबर के आदेश से सोमनाथ में व्यवस्थित रूप से शिवलिंग की पूजा की जाती थी। 17वीं शताब्दी के इतिहासकार फरिश्ता का वह विस्तृत विवरण जिसमें उसने तत्कालीन गर्व से लिखा था कि महमूद गजनवी ने तलवार के एक ही वार से शिवलिंग के ऊपरी व मध्य भाग को खण्डित कर दिया, रोमिला थापर अविश्वसनीय मानती हैं। ब्रिटिश लेखकों द्वारा रचित घटनाक्रमों में फरिश्ता के उद्धरणों को असत्य घोषित करती है। यदि उनकी बात को माना जाए तो तुर्की हमलों मे और विशेषकर गजनवी के आक्रमण मे सोमनाथ में न तो शिव मूर्तियां या लिंग तोड़े गए और न हीं दूसरे पवित्र स्थानों पर स्थित जैन मूर्तियां। रोमिला थापर तो **एलेक्ज़ेण्डर डाउ** द्वारा 1767-1772 में लिखी **'हिस्ट्री ऑफ हिन्दुस्तान'** में उद्धृत फरिश्ता के वर्णनों को भी नहीं मानती हैं क्योंकि उनके अनुसार फरिश्ता का इतिहास सत्य का साम्राज्यवादी संस्करण था। प्रसिद्ध इतिहासकार **इलियट और डाउसन** ने भी जहां लिखा है कि सुल्तान महमूद ने कहा था कि वह 'हिन्द पर प्रतिवर्ष जिहाद या पवित्र युद्ध करेगा' यह रोमिला थापर को मान्य नहीं है। **'हिन्दू आहत मर्मस्थल'** की अवधारणा को एक साजिश के द्वारा गढ़ी हुई दंतकथा बताती हैं। उनके अनुसार सन् 1842 में तत्कालीन गवर्नर - जनरल लार्ड एलेनबरो द्वारा गजनी से लाए गए सोमनाथ मंदिर के दरवाज़ों का प्रदर्शन हिन्दुओं को फुसलाने व मुस्लिमों के विरुद्ध भड़काने का षड्यंत्र था। ये लकड़ी के दरवाजे ब्रिटिश सेना के जनरल नॉट द्वारा अफगानिस्तान से लाए गए थे और एलनबरो की सार्वजनिक घोषणा के अनुसार हिन्दुओं के 800 वर्ष पहले के अपमान के प्रतिकार के रूप में जनता के सामने प्रस्तुत किए गए थे। रोमिला थापर की एक ही टिप्पणी थी कि वे दरवाजे असली नहीं थे क्योंकि आक्रमण के वृत्तान्तों में मंदिर के दरवाज़ों को सोमनाथ से गजनी ले जाने की बात नहीं आई है इसलिए वे हिन्दुओं को बरगलाने के उद्देश्य से अंग्रेज़ों द्वारा यह नाटक रचा गया था। रोमिला थापर सिर्फ एक ही रट लगाए हुए हैं कि उस समय मंदिर धर्मान्धता के कारण आक्रान्ताओं ने नष्ट नहीं

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

किया, उसका मूल कारण सिर्फ धन प्राप्त करना था। उनके इतिहास या विकृत विचारधाराओं का मात्र यही राजनीतिक मन्तव्य दशकों से रहा है। ऐतिहासिक तथ्यों को राजनीतिक आवश्यकताओं के हिसाब से तोड़ने मरोड़ने में वे सिद्धहस्त रही हैं।

रोमिला थापर, जैसा कि ऊपर लिखा है कि हिन्दू काल, मुस्लिम काल और ब्रिटिश काल जैसे कालनिर्धारण को साम्राज्यवादी नियत का त्रुटिपूर्ण युग विभाजन कहती हैं। वे यह भी कहती हैं कि मध्यकाल में मुस्लिमों ने हिन्दुओं पर कोई अत्याचार नहीं किए। समग्र भारतीय मानस में वैज्ञानिक प्रवृत्ति का अभाव था। उन्होंने **भगवद्गीता** को हिंसा से जुड़ी एक घटना कहा। हर मोर्चे पर भारतीय इतिहास की मोर्चेबंदी व मिथ्याकरण की उन्होंने एक दीर्घकालीन परंपरा डाली है। चाहे अयोध्या पर मार्क्सवादी हस्तक्षेप हो या अशोभनीय प्रत्युत्तर शैली हो या उनका अपने को सांप्रदायिकता का स्वयम्भू विशेषज्ञ कहना हो। सच बात तो यह है कि वे और कुछ भी हों, उन्हें इतिहासकार नहीं कहा जा सकता है। पहले वे खुद को गर्व से मार्क्सवादी कहती थीं, पर विश्व भर में साम्यवाद की अन्त्येष्टि होने के बाद से वे अपने आपको 'सैक्युलर' कहती हैं और कम से कम अपने लेखन के मामले में अपनी पहली पहचान छिपाना चाहती हैं।

'विश्व संवाद केन्द्र' पत्रिका लखनऊ दि. 12.12.2007 से साभार

कम्युनिज़्म की विश्वसनीयता

चीन से रिश्ता

यह तो ठीक है कि हम नेहरू के जमाने के 'हिन्दी-चीनी भाई-भाई' जैसे नारे से व्यक्त होने वाली भावुकता भरी राष्ट्रीय लापरवाही के असर से बाहर आ चुके हैं, किन्तु हम फिर भी यकीन के साथ नहीं कह सकते कि चीन के प्रति हमारा पूरा दृष्टिकोण राष्ट्रीय सोच के रूप में ठीक तरह से परिभाषित हो पाया है। **हम भाई-भाई वाली पुरानी भावुकता को राष्ट्रीय लापरवाही इसलिए कह रहे हैं क्योंकि उस लापरवाही की नींद में मगन होकर हमने तिब्बत चीन के हवाले कर दिया जो चीन का हिस्सा कतई नहीं था, बल्कि एक स्वतंत्र देश था। इसका खामियाजा हमने तब भुगता जब चीन पूरे तिब्बत को अपने फौजी बूटों के तले रौंदता हुआ हमारी अपनी ही सीमा तक आ पहुँचा और उसने हमें दिन में तारे दिखा दिए।** हमारे राष्ट्रीय अपमान की जो दुर्घटना 1962 में चीन के हाथों इतिहास के पन्नों पर दर्ज की गई, उसे हम आज तक भी ठीक नहीं कर पाए हैं। यहाँ तक कि हमारी राष्ट्रीय सोच में, खासकर केन्द्र में शासन करने वाली सरकारों के स्तर पर हम चीन के भारत विरोधी यानी दुश्मनी भरे इरादों को आज तक भी ठीक तरह से भांप नहीं पाए हैं। बल्कि इससे उलट हम सबके दिलों में, खासकर सरकार में बैठे लोगों के दिलों में चीन को लेकर एक अजीब तरह का डर, अगर डर कहने में शर्मिंदगी महसूस हो तो हीन भावना बस गई है। ऐसा न होता तो हमारे देश में राष्ट्रीय हर्ष की, थोड़ा सतर्क होकर कहें तो राष्ट्रीय संतोष की वो लहर पसरती नजर न आती जो प्रधानमंत्री की चीन यात्रा के कथित नतीजों को लेकर दिखने में आ रही है। **अगर चीन परमाणु मुद्दे पर हमारा सहकार करने को तैयार है तो इस पर हमें कृतज्ञता बोध के तले क्यों दब जाना चाहिए? अगर चीन सुरक्षा परिषद में हमारा समर्थन करने को तैयार हो रहा है तो इसमें गर्व करने की बात क्या है? और अगर चीन सीमा विवाद पर हल्का सा भी सकारात्मक नजर आने लगे तो हम अपनी छाती क्यों फुलाते फिरें? हम अचानक क्यों भूल जाते हैं कि चीन ने 38000 वर्ग कि.मी. जमीन अपने कब्जे में कर रखी है, अरुणाचल के तवांग इलाके पर अपना दावा छोड़ा नहीं है और अक्साइचिन तो उसने अपने में समेट ही लिया है। पाकिस्तान को वह हमारे खिलाफ ताकतवर बना रहा है और हमें चारों ओर से घेरने की अपनी रणनीति पर अमल करना बंद नहीं किया है?** चीन जब चाहे वह दुश्मन बन सकता है, दुनिया की मार्किट से हमें खदेड़ना उसकी सर्वोच्च प्राथमिकता है, इन बेसिक बातों को भुलाकर अगर हम चीन के साथ जो भी रिश्ता कायम करेंगे, वह रिश्ता अस्वाभाविक तो होगा ही, उस पर भरोसा कर लेना देश को कई तरह के निर्णायक नुकसान पहुँचा सकता है। **यानी संबंधों का आधार सिर्फ राष्ट्रीय हितों का यथार्थ ही हो सकता है, भावुकता या उत्साह से भरी गफलत नहीं।**

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

'राष्ट्रीय सहारा' दिल्ली, दि. 16 जनवरी 2008 से साभार

अरुणाचल के बड़े भाग पर दावा कर रहा है चीन

अरुणाचल प्रदेश में चीन के कब्जे का मुद्दा फिर संसद में गूंजा। विदेश मंत्री प्रणव मुखर्जी ने इस मुद्दे पर उठाए गए सवाल का जवाब देते हुए कहा कि चीन अरुणाचल प्रदेश की भूमि के काफी बड़े हिस्से पर अपना दावा कर रहा है। उन्होंने इस दावे को गैरकानूनी करार दिया।

राज्य सभा में सदस्य विजय दर्डा के एक सवाल के जवाब में प्रणव ने कहा कि अरुणाचल की 90 हजार वर्ग कि.मी. भूमि पर दावे के अलावा चीन ने मध्य क्षेत्र में भी लगभग 2 हजार वर्ग कि.मी. भूमि पर अपना दावा किया है। उन्होंने स्पष्ट किया कि भारत इस दावे को गैरकानूनी मानता है। दर्डा ने उनसे भारत-चीन सीमा पर भारतीय सीमा में चीन के अतिक्रमण की खबरों पर भी सवाल उठाया था। इस पर प्रणव ने कहा कि भारत और चीन की और चीन की ओर से तय की गई कोई सीमा अभी नहीं हैं।

'राष्ट्रीय सहारा' दिल्ली, दि. 30.11.2007 से साभार

घड़ियाली आंसू

आखिर माकपा पोलित ब्यूरो की सदस्य वृंदा करात किसको धोखा दे रही हैं? खुद को, अपनी पार्टी माकपा को या पश्चिम बंगाल की माकपा नीत वाममोर्चा सरकार को? अगर वे इनमें से किसी को धोखा नहीं दे रही हैं तो हम उनकी उस प्रतिक्रिया का अर्थ वास्तव में जानना चाहेंगे जिसमें वे नंदीग्राम में हुई बर्बर हिंसा को अत्याचार का नाम देकर वाममोर्चा सरकार को आड़े हाथ ले रही हैं और तसलीमा नसरीन को पश्चिम बंगाल में ही ठहराये जाने की मांग का पुरजोर समर्थन करने की दहाड़ें मार रही हैं। सारी दुनिया जान चुकी और मान चुकी कि नंदीग्राम में जो बर्बर हिंसा हुई वह किसी और ने नहीं, उन्हीं की पार्टी के काडरों ने की। इस हिंसा को करवाने में उन्हीं की पार्टी द्वारा चलाई जा रही प्रदेश सरकार की मिली-भगत तब साबित हो गई जब खुद मुख्यमंत्री बुद्धदेव भट्टाचार्य ने चेहरे पर अपूर्व खुशी और तृप्ति का भाव लाते हुए कह दिया कि उनकी पार्टी के काडर ने ईंट का जवाब पत्थर से दे दिया। अभी तक सरकार द्वारा आंख दबा देने के बाद इशारा बखूबी समझने वाली वहां की पुलिस ने किया इसमें किसी को शक है ही नहीं। फिर अचानक अत्याचार के खिलाफ घड़ियाली आंसू बहाने का क्या मतलब? अचानक तसलीमा के पक्ष में खड़ा होने की यह बेचैनी कैसी? वैसे वृंदा करात भी क्या करें? उनका और उनकी पार्टी का सारा जीवन खुद उनके द्वारा परिभाषित सर्वहारा की तरक्की का नारा लगाते-लगाते खत्म हो गया और उम्र के इस पड़ाव पर आकर उनके काडर ने उसी सर्वहारा के खून से अपने हाथ रंग लिए। उधर धर्म निरपेक्षता के नाम पर इस देश के व्यक्तित्व से जुड़ी हर चीज को गरियाते हुए उनकी और उनकी पार्टी की सारी उम्र बीत गई और उम्र के इस ढलान पर आकर उन्हीं की पार्टी की सरकार खुलेआम चौराहों पर कट्टरपंथियों के साथ टी-पार्टी करती हुई और अभिव्यक्ति की आजादी का गला घोंटती हुई रंगे हाथों पकड़ी गई। और यह सब भी कोई आज नहीं हुआ। नंदीग्राम हुए हफ्ते बीत गए और तसलीमा हुए कई दिन। दुनिया के हर अखबार और टीवी चैनल पर माकपा विचारधाराई डकैती करती हुई साफ-साफ गिरफ्तार कर ली गई। जो बात लोगों के दिलों पर और मौजूदा इतिहास के पन्नों पर गहरे दर्ज हो चुकी है, उसे वृंदा करात की नकली संवेदनाओं से पलटना मुश्किल ही नहीं, नामुमकिन भी है। पहले परमाणु करार, फिर नंदीग्राम और फिर तसलीमा, एक के बाद एक हुई इन घटनाओं से देश की जनता को जो समझना था, वह समझ चुकी है। इस झूठी सहानुभूमि से अब कुछ नहीं बनने वाला।

'राष्ट्रीय सहारा' दिल्ली, दि. 30.11.07 से साभार

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

तीसरी सबसे बड़ी ऊर्जा संपदा का सवाल

किसी आत्मघाती दस्ते द्वारा रूसी राष्ट्रपति पुतिन पर ईरान में जानलेवा हमला किए जाने की रूसी खुफिया एजेंसियों की तमाम आशंकाओं के बावजूद पुतिन नहीं माने और उन्होंने तेहरान पहुंचकर ईरानी नेताओं से बातचीत के कई दौर पूरे किए। रूसी राष्ट्रपति ने इस यात्रा के जरिए एक तीर से कई निशाने साधने की कोशिश की। सबसे पहले तो उन्होंने अमेरिका को कड़ी चेतावनी दी कि वह पूर्व सोवियत संघ के किसी भी गणराज्य की जमीन से ईरान पर वार करने की तैयारियां बंद कर दे। इशारा पूर्व सोवियत गणराज्य अजरबैजान की ओर था जिसके बारे में रूसी जानकारी यह है कि अमेरिका अजरबैजान के साथ इस इरादे से पींगे बढ़ा रहा है और उसे बड़ी आर्थिक सहायता और फौजी इमदाद का वादा कर रहा है ताकि ईरान पर किसी संभावित हमले के वक्त उसके जहाजी बेड़े को कैस्पियन सागर के किनारे बसे इस देश पर अपना नौसेनिक लंगर डालने और लड़ाकू विमानों के उड़ने लायक बड़ी पटरी मिल जाए।

अमेरिका इसलिए अजरबैजान के फौजी हवाई अड्डों के विस्तार के लिए न केवल आर्थिक मदद देना चाहता है बल्कि अपने तकनीशियन और इंजीनियरों की मदद भी मुहैया कराने को तैयार है ताकि ये हवाई पट्टियां शीघ्र ही अंतर्राष्ट्रीय स्तर की हो जाएं जिनसे बी 52 जैसे विशालकाय बमवर्षक और हवा में ही लड़ाकू विमानों में तेल भर सकने की क्षमता वाले बड़े विमान भी उड़ान भर सकें। अजरबैजानी बंदरगाहों का भी पुनरुत्थान करने का अमेरिकी प्रस्ताव है। ये सारी कोशिशों और इस क्षेत्र में अमेरिकी विशेषज्ञों की आवाजाही रूसी खुफिया उपग्रहों, जासूसी उपकरणों और गुप्तचर सेवाओं से छिपी नहीं है और रूस द्वारा भेजे गए कूटनयिक संकेतों का जब कोई असर नहीं दिखा तो राष्ट्रपति पुतिन ने ईरान, जो कि खुद कैस्पियन सागर के अजरबैजान से सामने वाले छोर पर बसा हुआ है वहाँ पहुँचकर अमेरिका को 'हाथ रोको' की यह सीधी चेतावनी दे डाली है।

राष्ट्रपति पुतिन द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद ईरान की यात्रा पर गए पहले सोवियत राष्ट्रपति हैं और एक बार जब आशंकित आत्मघाती हमले की चेतावनी के संदर्भ में पुतिन की यात्रा की संभावना संदेहास्पद सी हो चली थी तब ईरानी मेजबानों ने यहाँ तक कहा था कि ये रूसी राष्ट्रपति को ईरान नहीं आने देने की पश्चिमी देशों द्वारा 'प्लांट' की गई अफवाहें हैं और ईरान में कोई ऐसा आतंकी गिरोह सक्रिय नहीं है जो वहाँ की सरकार की मर्जी के खिलाफ किसी तरह की कारगर हरकत कर सकने की हैसियत रखता हो। थोड़ा बहुत अंदेशा सूडानी, लेबनानी और इराक के सुन्नी असंतुष्ट गिरोहों से था मगर उनसे भी सारी जानकारियाँ खंगाल ली गई थीं और इरानियों ने पूरी जिम्मेदारी लेते हुए कहा था कि कोई पुतिन की तरफ आंख उठाकर देखने भी नहीं पाएगा।

रूसी राष्ट्रपति ने तेहरान पहुँचकर दो टूक लहजे में कहा कि किसी भी देश के भूभाग का बेजा इस्तेमाल दूसरे पड़ोसी देश का अतिक्रमण करने के लिए नहीं किया जा सकता और कैस्पियन देशों में से तो किसी को भी ऐसा करने की इजाजत नहीं दी जा सकती। **यह देखना संबंधित कैस्पियन देश की जिम्मेदरी है कि वह अपने किसी भूभाग को किसी दूसरे देश की सैनिक इच्छाओं के पालन का माध्यम नहीं बनने दे। ईरानी राष्ट्रपति अहमदीनेजाद के विचार भी जैसे पुतिन के विचारों की ही अनुगूंज थे।** बकौल अहमदीनेजाद खुद कैस्पियन देशों को इस बात की ताईद रखनी चाहिए कि कोई और देश किसी तरह का लालच देकर उनके अन्दरूनी मामलों में दखलदांजी की हिमाकत नहीं करे। अहमदीनेजाद ने कहा कि सभी कैस्पियन देश इस बारे में एकमत होने चाहिए कि वे कैस्पियन सागर और सागर देशों से जुड़े हर मसले को आपसी बातचीत से ही सुलझाएंगे और किसी अन्य देश की फौजी या जंगी जहाज को अपने इलाके में दाखिल नहीं होने देंगे और किसी जबरदस्ती की हालत में सभी मिलकर अतिक्रमणकारी का विरोध करेंगे।

ये सारी बातें सुनने में तो बड़ी आसान और आकर्षक लगती हैं मगर असली मुद्दा **कहीं और है वही मुद्दा रूस समेत कैस्पियन सागर के तट पर बसे सभी देशों को मथ रहा है। कैस्पियन देश जिनमें रूस, ईरान, कजाकस्तान, तुर्कमीनिस्तान और अजरबैजान शामिल हैं, दुनिया के तीसरे सबसे बड़े ऊर्जा भंडार हैं।** कैस्पियन तल में तेल है, गैस है, हाइड्रोकार्बन और पेट्रोलियम उद्योग के काम आ सकने वाली दूसरी गैसे हैं। यह विशाल ऊर्जा भंडार 1991 के सोवियत संघ के विघटन के बाद से निस्पंद-सा है क्योंकि रूस के अलावा इनमें से किसी में न तो वह आर्थिक दमखम है और न वैसी तकनीकी विशिष्टताएं जो सागरतल में छिपे इन तैलीय और गैसीय रत्नों का दोहन कर सके। रूस किसी भी कीमत पर इस क्षेत्र में अमेरिकी और पश्चिमी देशों को दखल देने की इजाजत नहीं दे सकता क्योंकि ऐसा होना उसके समुद्रीय प्रवेशद्वार पर शत्रुओं की दस्तक की तरह होगा।

पुतिन इस बात से बहुत परेशान हैं कि कुछ कैस्पियन देशों को जिनके आर्थिक संसाधन बहुत सीमित हैं, उन्हें अमेरिकी डालरों की चकाचौंध अपनी ओर आकर्षित कर सकती है। एक देश तो ऐसे अमेरिकी प्रस्ताव पर विचार कर रहा है जिसके तहत एक ऐसी

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

पाइपलाइन बिछाने की तैयारी हो रही है जो रूसी समुद्र सीमा से काफी हटकर गुजरेगी और जिसके जरिए कैस्पियन खाड़ी से हाइड्रोकार्बन सीधे पश्चिमी देशों तक पहुँचाया जा सकेगा।

एक अंतर्कथा यह भी है कि तीन छोटे कैस्पियन देशों और ईरान में एक मुद्दे को लेकर भारी मतभेद है। ईरान का कहना है कि कैस्पियन सागर की तेल गैस संपदा पर पांचों तटवर्ती देशों का बराबर का अधिकार होना चाहिए। जबकि कजाकिस्तान, तुर्कमीनिस्तान और अजरबैजान का कहना है कि जिस देश के पास कैस्पियन सागर का जितना समुद्री तट है उसे उसी अनुपात में हिस्सा मिलना चाहिए। ऐसा होने पर ईरान की हिस्सेदारी बहुत कम हो जाएगी। यह स्थिति ईरान को स्वीकार नहीं है। वह सबकी बराबरी की बात करता है।

रूस को दोनों में से किसी प्रस्ताव पर ऐतराज नहीं है क्योंकि उसका कैस्पियन समुद्रतट किसी भी दूसरे देश से कम नहीं और अगर बराबर की बात हो तो भी उसे ऐतराज नहीं। ईरान चाहता है कि रूस अपने प्रभाव का इस्तेमाल करके उसे बराबरी का हिस्सा दिला दे। रूस ऐसा तब तक करने का निश्चित वचन नहीं देना चाहता जब तक उसे इस बात का भरोसा नहीं हो जाए कि ईरान रूसी कंपनियों को ही तेल कूपों और गैस क्षेत्रों को विकसित करने का ठेका देगा। दूसरी ओर छोटे कैस्पियन देश तो रूस पर निर्भर रहते ही आए हैं और उन्हें अमेरिकी तथा पश्चिमी देशों के प्रलोभनों के जोखिम जिनमें रूसी सैनिक हस्तक्षेप का जोखिम भी शामिल है, मालूम है।

रूस-ईरान वार्ता की तात्कालिक प्रासंगिकता इसलिए और भी बढ़ गई थी और सारे जोखिम उठाकर भी पुतिन इसलिए ईरान यात्रा पर पहुँचे कि उन्हें एक ओर तो अमेरिका को ईरान के विरुद्ध किसी तरह के सैनिक हस्तक्षेप से निरुत्साहित करना है और दूसरी ओर कैस्पियन सागर की अथाह ऊर्जा संपदा में रूसी हितों को वरीयतापूर्वक सुरक्षित करना भी है।

'राष्ट्रीय सहारा' दिल्ली, दि. 23.10.2007 से साभार

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

इस्लामी आतंक

कश्मीर में अब मंदिरों पर कब्जे का दौर

कोई कहे कि कश्मीर में मंदिर तोड़े जा रहे हैं, तो आप कहेंगे इसमें नया क्या है। नई बात यह है कि अब नष्ट मंदिरों की संपत्ति पर बड़े पैमाने पर कब्जे हो रहे हैं। यह बात उप मुख्यमंत्री भी स्वीकार करते हैं और मौलवी एजाज जैसे कानूनदां भी, जो कब्जा करने वालों को घाटी का 'टेंपल लैंड माफिया' कहते हैं।

कश्मीरी पंडित संघर्ष समिति के संजय टिक्कू कहते हैं कि आतंकी हिंसा शुरू होने से अब तक 565 प्रमुख मंदिर जलाए जा चुके हैं। गली-मोहल्लों के मंदिर गिने जाएं तो तादाद दो हजार से अधिक है। एडवोकेट मौलवी एजाज का आरोप है, 'मंदिरों की संपत्ति बेची जा रही है। घाटी में टेंपल लैंड माफिया सक्रिय है। हिन्दू-मुस्लिम व नौकरशाही सब इसमें शामिल हैं। लैंड एबालिशमेंट एक्ट मंदिरों की संपत्ति पर लागू नहीं होता, लेकिन यहां उसकी आड़ में अपने चहेतों को मंदिरों की जमीन बांटी जा रही है। बाबा धर्मदास मंदिर की 14,000 कनाल जमीन थी, जो इसी एक्ट की आड़ में बेच दी गई।' शायद इसलिए विभिन्न धार्मिक संगठनों ने मंदिरों की संपत्ति बेचने की सीबीआई जांच की मांग की है। बसंतबाग मंदिर के पास अपना ऑटो रिक्शा साफ कर रहे अख्तर का कहना है कि पहले यहां भट्ट पूजा करते थे, पर उसने इस सवाल पर चुप्पी साध ली कि मंदिर किसने जलाया, कौन पत्थर उखाड़ रहा है। प्राचीन मंदिरों के विशाल परिसर और उनकी संपत्ति पर कब्जे से चिंतित **उप मुख्यमंत्री मुजफ्फर हुसैन बेग कहते हैं कि राज्य सरकार मंदिरों की सुरक्षा के लिए विधेयक लाने जा रही है। एक अथॉरिटी बनेगी, जो प्रशासन के साथ मिलकर मंदिरों की देखभाल करेगी। मंदिरों की संपत्ति पर कब्जा करने वालों के खिलाफ हम कार्रवाई करने जा रहे हैं।**

पनुन कश्मीर के डॉ. अजय चुरंगु मंदिर बिल से उत्साहित नहीं हैं। उनके संगठन ने 55 मंदिर कमेटियों की सहमति से एक मसौदा सरकार को सौंपा था। वह कहते हैं कि 'हम देखना चाहते हैं, सरकार हमारे कितने सुझाव बिल में शामिल करती है। हम चाहते हैं कि समिति में कोई गैर हिन्दू न हो।' नष्ट मंदिरों की मूर्तियों का कहीं ब्यौरा नहीं है। धर्मार्थ ट्रस्ट के एक अधिकारी ने कहा कि मंदिरों के बड़े-बड़े पत्थर खास घरों की दीवारों में लगे हैं। एपीएमसीसी (आल पार्टी माइग्रेंट्स कोआर्डिनेशन कमेटी) के विनोद पंडित के अनुसार कितनी प्राचीन मूर्तियां बिक चुकी हैं, इसकी गिनती नहीं। मंदिरों और शैववाद के विशेषज्ञ प्रो. एम.एल.कौल कहते हैं कि **जैनाकदल में खानकाह, मां काली के मंदिर पर ही बनी है। इसे सय्यद मीर हमदानी नामक मुस्लिम संत के कहने पर सिकंदर बुतशिकन ने तोड़ कर खानकाह बनवा दी।** उधर, कई संगठन मंदिरों के किवाड़ फिर से खोल रहे हैं। विनोद पंडित कहते हैं कि हमने दस मंदिरों के किवाड़ खोले, लेकिन बाद में स्थिति आतंकवाद के चरम दौर वाली हो गई। हमने किवाड़ खोले तो सबने सराहा, प्रशासन ने वाहवाही लूटी; लेकिन बाद में हमारे लोगों की सुरक्षा वापस ले ली गई।

'दैनिक जागरण', दिल्ली, दि. 30 दिसम्बर 2007 से साभार

जम्मू-कश्मीर में जिहादी हिंसा- आंकड़ों की नजर से

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

श्रीनगर से प्रकाशित श्रीनगर मेल के अनुसार जम्मू-कश्मीर में 2007 में सबसे कम 926 हिंसक घटनाएं हुई जबकि 1995 में सबसे अधिक 5946 घटनाएं हुई थीं। **जम्मू-कश्मीर में गत दो दशकों में लगभग 70,000 हिंसक घटनाओं में हजारों लोगों की मौत हो गई,** सैंकड़ों लोग विकलांग और अनगिनत बेघर हो गए। सरकारी सूत्रों से मिली सूचना के अनुसार राज्य में गत दो दशकों के दौरान सुरक्षा बलों पर आतंकवादियों की ओर से 6065 ग्रेनेड हमले किए गए। सैनिक व अर्द्ध सैनिक बलों पर सबसे अधिक ग्रेनेड हमले 1994 में हुए जिनकी संख्या 821 है। 1990 में 242 ग्रेनेड हमले किए गए जबकि 1991 में 402, 1992 में 409, 1993 में 678, 1994 में 821, 1995 में 579, 1996 में 444, 1997 में 168, 1998 में 187, 1999 में 201, 2000 में 201, 2001 में 373, 2002 में 283, 2003 में 199, 2004 में 243, 2005 में 152, 2006 में 226, और 2007 में अब तक 98 ग्रेनेड हमले सुरक्षा बलों और अर्द्ध सैनिक बलों पर किए गए। आतंकवादियों ने सबसे अधिक बारूदी विस्फोट 1990 में किए जिनकी संख्या 1280 है, जबकि सबसे कम बारूदी हमले 2006 में हुए जिसकी संख्या केवल 47 है। इसके अतिरिक्त सरकारी सूत्रों ने इस बात की भी जानकारी दी है कि 1990 से लेकर 2007 तक 21,309 दोतरफा गोलीबारी की घटनाएं हुई जिनमें सबसे अधिक घटनाएं 1995 में हुई जिनकी संख्या 1891 है। 2007 में दोतरफा गोलीबारी की 343 घटनाएं हुई। सुरक्षा बलों पर हमलों की - 1990 में 732, 1991 में 1351, 1992 में 1934, 1993 में 2288, 1994 में 2675, 1995 में 2570, 1996 में 1473, 1997 में 1149, 1998 में 1181, 1999 में 1209, 2000 में 1498, 2001 में 1109, 2002 में 870, 2003 में 683, 2004 में 481, 2005 में 327, 2006 में 330 और 2007 में अब तक189 घटनाएं हुई हैं।

'पांचजन्य' दिल्ली, दि. 9 दिसम्बर 2007 से साभार

शराफत आजकल स्वप्न सी लगती है,
शरारत ही अब तो शराफत लगती है।
भले इन्सान गुण्डा कहे जाते हैं,
ज्ञान की बात भी शिकायत सी लगती है।
उल्टे सीधे शब्दों को तोड़ना जोड़ना,
आज के जमाने में गज़ल सी लगती है।
सच्ची कहानी भी सुनता नहीं कोई,
सारी कहानी बस फिल्म सी लगती है।
प्रेम करना गुनाह हो गया "प्रदीप"
मोहब्बत भी दुश्मनी सी लगती है।

संजय कुमार चतुर्वेदी "प्रदीप"
निमचेनी, मितौली, लखीमपुर खीरी, उत्तर प्रदेश-262727

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

कांग्रेसी पंथनिरपेक्षता

मुस्लिम पीड़ितों को राहत, हिन्दुओं को कोरे वायदे

जम्मू-कश्मीर में भाजपा तथा कुछ अन्य संगठनों ने आरोप लगाया है कि कांग्रेस के नेतृत्व में चल रही गठबंधन सरकार पिछली सरकारों से भी कहीं आगे बढ़कर सांप्रदायिकता दर्शा रही है। **प्राकृतिक आपदाओं तथा उग्रवाद से प्रभावित लोगों को सरकारी सहायता उपलब्ध कराने में भेदभाव किया जा रहा है। उन्हें उनके मज़हब के अनुसार ही राहत के तराजू पर तौला जा रहा है।**

इस संबंध में उन्होंने इस बात का तो स्वागत किया है कि गत माह किश्तवाड़ जिले के वादवन क्षेत्र में गांव मारगी में विनाशकारी आग से प्रभावित लोगों को बड़े स्तर पर सहायता उपलब्ध कराई गई है, किन्तु शिकायत है कि दूसरे कई ऐसे अवसरों पर इतनी तेजी से मरहम नहीं लगाया गया है। **सबसे बड़ी आपत्ति इस बात पर जताई गई कि डेढ़ वर्ष पूर्व जिला डोडा के कुलहंद गांव में उग्रवादी नरसंहार का शिकार होने वालों को भी अभी तक कोई सहायता नहीं दी गई है जबकि केन्द्रीय रक्षा मंत्री श्री प्रणव मुखर्जी के साथ राज्य के मुख्यमंत्री श्री गुलाम नबी आजाद वहां इसका वायदा कर आए थे।**

गत 22 अक्तूबर को वादवन के मारगी गांव में रहस्यमयी आगजनी में 166 घर और घास के छप्पर जलकर नष्ट हो गए थे। कई पशु भी इस आगजनी में मारे गए और अनेक लोग घायल हुए थे। मुख्यमंत्री गुलाम नबी आजाद घटनास्थल पर स्थिति की समीक्षा करने और सहायता वितरित करने के लिए दो बार गए। इसके अतिरिक्त इस गांव के पीड़ित 63 युवकों को सरकारी नौकरियां भी दी गईं, टैंट शिविर उपलब्ध कराए गए क्योंकि सर्दी के इस मौसम में इन दिनों दूरदराज के इस क्षेत्र में नए मकान बनाना संभव नहीं था।

किन्तु निष्पक्ष विचार वाले लोगों की शिकायत है कि इसी जिले में पाडुर और अन्य स्थानों पर भी तबाही की ऐसी ही घटनाएं हुई हैं, किन्तु कई-कई महीने बीत जाने के पश्चात् भी न कोई बड़ा नेता वहाँ पहँचा और न ही कोई सरकारी सहायता उपलब्ध कराई गई।

सबसे बड़ी शिकायत यह उभर कर सामने आ रही है कि 30 अप्रैल 2006 की रात्रि सशस्त्र उग्रवादियों के एक बड़े गिरोह ने कुलहंद गांव पर आक्रमण किया था। हथगोलों सहित अंधाधुंध गोलियां बरसाईं। इस आक्रमण में 35 लोग मारे गए, 30 से अधिक घायल हुए थे। इस नरसंहार के पश्चात घटनास्थल पर केन्द्रीय रक्षा मंत्री श्री मुखर्जी, राज्य के

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

राज्यपाल ले. जनरल (से.नि.) एस.के.सिंह तथा राज्य के मुख्यमंत्री आजाद भी गए थे। रक्षामंत्री ने इस क्षेत्र के युवकों को सेना में भर्ती करने की बात कही थी। मुख्यमंत्री ने प्रभावित परिवारों के एक-एक सदस्य को नौकरी देने के अतिरिक्त वहां 12 बिस्तरों का एक अस्पताल तथा सड़क बनाने का वायदा किया था। उन्होंने सुरक्षा प्रबंधों के लिए ग्राम सुरक्षा समितियां गठित करने का वायदा भी किया था।

किन्तु कई दिन तक जब सुरक्षा के प्रबंध नहीं हुए तो भाजपा के कार्यकर्ताओं ने डोडा तथा जम्मू में कई दिनों तक धरना दिया, जिसके पश्चात ग्रामीण युवकों को पुरानी 303 रायफलें दी गईं। अब उनकी शिकायत है कि **उग्रवादी घटनाओं के जवाब में गोलियां खर्च हो जाती हैं तो उनके स्थान पर और गोलियां उपलब्ध नहीं कराई जातीं, न ही इस क्षेत्र में ग्राम सुरक्षा समितियों को मान्यता देकर उन्हें मासिक भत्ता दिया जाता है। उल्लेखनीय है कि डोडा तथा किश्तवाड़ जिले उग्रवाद के गत 18 वर्ष से सदा ही चर्चा मे रहे हैं। राज्य के इस भाग में सबसे अधिक नरसंहार हुए हैं, जिसमें सैंकड़ों लोग मारे गए हैं।**

'पांचजन्य' साप्ताहिक नई दिल्ली, दि. 2 दिसम्बर 2007 से साभार

जम्मू-कश्मीर में तेजी से पनपता हवाला कारोबार

जम्मू-कश्मीर में तेजी से पनपते हवाला कारोबार ने यहाँ सुरक्षा व खुफिया एजेंसियों की नींद उड़ा दी है। पिछले 10 सालों में इस आतंकवाद ग्रस्त राज्य में करीब डेढ़ हजार करोड़ रुपये हवाला के जरिए आ चुका है जबकि अब तक ढाई करोड़ रुपये ही पकड़ा गया है। हवाला के तार दिल्ली, मुंबई, कोलकाता से लेकर विदेशों तक जुड़े हैं। हवाला के जरिए आतंकवादियों को 1990 के बाद से हर माह रकम दी जा रही है। हवाला कारोबार में कुछ लोग पकड़े गए हैं लेकिन वह कमजोर कानून के चलते छूट गए हैं।

खुफिया व सुरक्षा एजेंसियों के सूत्रों के मुताबिक **हुर्रियत कांफ्रेंस को अब तक 117 करोड़ रुपये, चरमपंथी नेता सैयद अली शाह गिलानी की तहरीक-ए-हुर्रियत को 50 करोड़ रुपये वर्ष 1990 से लेकर अब तक मारे गए आतंकवादियों के परिजनों को 596 करोड़ और सन् 1990 से अब तक सक्रिय आतंकवादियों को प्रति माह दिए जाने वाली रकम के तौर पर 175 करोड़ रुपये बांटे गए हैं।** कई अलगाववादी नेताओं को विदेशों से मोटे चंदे के नाम पर हवाला से धन मिल रहा है। इनमें चरमपंथी नेता सैयद अली शाह गिलानी, मोहम्मद यासीन मलिक, नईम खान, फरीदा बहनजी और शब्बीर शाह भी शामिल हैं। हवाला राशि का बड़ा हिस्सा हिजबुल मुजाहिद्दीन के सुप्रीमो सैयद सलाउद्दीन के मार्फत विभिन्न चैनलों से आता है।

बड़े हवाला मामलों में सात लाख रुपये श्रीनगर में 1997 में अलमदार ट्रस्ट के लिए दिवंगत अब्दुल गनी लोन ने वसूले थे। वर्ष 2001 में 40 लाख रुपये हिजबुल मुजाहिद्दीन के अब्दुल रशीद लोन उर्फ मौलवी से बरामद किए गए थे। वर्ष 2002 में बटमालू (श्रीनगर) में इम्तियाज अहमद से 82 लाख रुपये पकड़े गए थे जो जैश-ए-मोहम्मद, हिजबुल मुजाहिद्दीन, सैयद अली शाह गिलानी और आसिया को दिया जाना था। वर्ष 2002 में ही कुद (उधमपुर) में एक लाख अमेरिकी डालर पकड़े गए जो मुशताक अहमद डार व शमीमा उर्फ शाजिया के जरिए जेकेएलएफ नेता यासीन मलिक के लिए श्रीनगर जा रहे थे। अभी हाल ही में एक गैस सिलेंडर में ले जा रहे 50 लाख भी पकड़े गए हैं। चरमपंथी नेता

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

सैयद अली शाह गिलानी का जेद्दा में रह रहा दामाद अरब देशों में रह रहे कश्मीरी व्यावसायियों से चंदा एकत्रित कर गिलानी को भेजता है। बताया गया है कि गिलानी ने यूएई में संपत्ति खरीदी है। वैसे आई.एस.आई. के ब्रिगेडियर राठौर ने भी श्री गिलानी को पैसा भेजा है। दरअसल भारत-पाक सीमा पर तारबंदी व कड़ी चौकसी के कारण आतंकवादियों को पैसा लाने में दिक्कतें आ रही हैं। इसलिए हवाला का धन अब नेपाल व बांग्लादेश के जरिए भारत आ रहा है। आतंकवादी अथवा अलगाववादी इस हवाला धन का प्रयोग रीयल इस्टेट व शेयर कारोबार में कर रहे हैं। बताया गया है कि अरब व पाकिस्तान के अलावा यूरोप व अमेरिका से भी हवाला धन यहां लाया जा रहा है।

अकेले जम्मू-कश्मीर में करीब 1500 करोड़ हवाला धन आ चुका है जबकि पकड़ा गया मात्र ढाई करोड़ रुपये।

'राष्ट्रीय सहारा' दिल्ली, दि. 3.12..2007 से साभार

पुस्तक समीक्षा

पुस्तक का नाम : **हिन्दू समाज संकटों के घेरे में**

लेखक : सीताराम गोयल

प्रकाशक : भारत भारती, 2/18 अंसारी रोड, नई दिल्ली-2

पृष्ठ-61, मूल्य : 10 रुपये

प्रस्तुत पुस्तक में विद्वान् लेखक ने उन कारकों को चिहि्नत किया है जो भारतीय संस्कृति को घुन की तरह धीरे-धीरे नष्ट कर रहे हैं तथा हिन्दू समाज अपनी लंबी तंद्रा से जाग नहीं रहा है। भारतीय समाज के क्षय के कारक हैं - इस्लामवाद, ईसाईवाद, मैकालेवाद, कम्युनिस्टवाद और स्वार्थी राजनीतिबाज़। पुस्तक की विषयवस्तु को 1. हिन्दू समाज की महिमा, 2. साम्राज्यवाद का अवशेष : इस्लामवाद, 3. साम्राज्यवाद का दूसरा अवशेष : ईसाईवाद, 4. साम्राज्यवाद का तीसरा अवशेष : मैकालेवाद, 5. कम्युनिस्ट कूटचक्र तथा 6. दस्युदलों का संयुक्त मोर्चा छह भागों में विभक्त करते हुए उक्त विषयों पर सटीक विवेचन प्रस्तुत किया है और 'मैकालेवाद' को हिन्दू समाज के लिए अधिक घातक बताया है जो भारतीय समाज का भयंकर क्षयरोग की तरह धीरे-धीरे अवसान कर रहा है -

"यह वाद इस्लामवाद जैसा हलाहल भी नहीं है जो एक ही डंक में किसी भी संस्कृति का प्राणान्त कर दे। न ही यह ईसाईवाद जैसा कुटिल कुचक्र है जो भीतर ही भीतर किसी समाज को खोखला कर डाले। यह तो एक ऐसा क्षय रोग है

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

जो धीरे-धीरे बढ़कर किसी भी संस्कृति की आत्मा को अवसन्न कर देता है और शनैः शनैः सारे समाज का शीलभ्रष्ट करता रहता है और इसकी मार से भारतवर्ष का कोई भी वर्ग नहीं बच पाया है।

अपने विषय का प्रतिपादन का आरंभ करते हुए लेखक ने 'हिन्दू समाज की महिमा' का वर्णन किया है जिसे प्रत्येक हिन्दू को संज्ञान में लाना अनिवार्य भी है और हितकारी भी -

"उस युग को बीते हुए बहुत दिन नहीं हुए जबकि हिन्दू संस्कृति सारे सभ्य संसार में सर्वश्रेष्ठ मानी जाती थी। इस देश के ऋषि और मुनि, संत और महात्मा, पंडित और विज्ञानवेत्ता, संस्कृति दूत और सार्थवाह, हिन्दू संस्कृति के संदेश एशिया तक, अफ्रीका के ओर-छोर तक ले गए थे। मिस्र और इथियोपिया, असरिया, बेबीलोनिया, कैल्डिया और ईरान, बर्मा, चीन, जापान, कोरिया, मंगोलिया, हिन्दचीन, इंडोनेशिया, मलाया और थाईलैण्ड, पश्चिमी एशिया, ग्रीस और रोम - सैंकड़ों जातियों और संस्कृतियों को अध्यात्म और दर्शन, भाषा और साहित्य, विज्ञान और कला कौशल, रीति और नीति इस सत्य के साक्षी हैं कि हिन्दू संस्कृति से उन्होंने क्या-क्या पाया।"

आधुनिक संदर्भों में राजनीतिज्ञों की भूमि कितनी महत्वपूर्ण है इसको समझाने की आवश्यकता नहीं, परन्तु कुछ राजनीतिबाज़ भारतदेश को खण्ड-खण्ड करने पर लगे हुए हैं। स्वार्थसिद्धि उनका एकमात्र लक्ष्य है। इसकी ओर हिन्दू समाज को विशेष रूप से ध्यान देकर संगठित होना होगा। इस दिशा में लेखक ने स्पष्ट रूप से इंगित किया है -

..... इस प्रकार हिन्दू समाज इन दस्युदलों का शिकार ही नहीं हैं। वह समाज इन दलों के बीच खड़ी एक दीवार है। हिन्दू-प्रधान देश होने के कारण ही भारत सैक्युलरिज़्म की नीति पर चल सकता है। हिन्दू-प्रधान देश होने के कारण ही भारत एक लोकतंत्र भी है। दस्युदल यदि इस देश में अपनी मनमानी करते रहे तो सैक्युलरिज़्म और लोकतंत्र का अंत बहुत दूर नहीं रह जाएगा। इसलिए लोकतंत्र तथा सैक्युलरिज़्म के प्रति श्रद्धावान **हिन्दू समाज को अपना बचाव करने के लिए संगठित होना पड़ेगा। संगठित होकर ही हिन्दू समाज अपने अस्तित्व को अक्षुण्ण रख सकेगा,** धर्म की रक्षा कर पाएगा तथा अपने लिए और सारे संसार के लिए एक नई संस्कृति के युग का सूत्रपात करने में समर्थ होगा।

इस प्रकार लेखक ने जहाँ एक ओर हिन्दू समाज को विखण्डित करने वाले कारकों की विवेचना की है वहीं दूसरी ओर हिन्दू समाज की सुरक्षा करने का आह्वान किया है।

संपादक-मंडल

पुस्तक का नाम : **अलख (कविता संग्रह)**
लेखक : डॉ. सत्यनारायण जटिया 'सत्यज'
(पूर्व केन्द्रीय श्रम मंत्री, भारत सरकार)
प्रकाशक : अनिल प्रकाशन, 2619-20, न्यू मार्किट, नई सड़क, दिल्ली-110 006
मूल्य - 80 रुपये, पृष्ठ 53
समीक्षक : डॉ. रामशरण गौड़

सत्य, शिव और सुंदर का दर्शन

वस्तुतः यह काव्य संग्रह सत्य शिव सुंदर का दर्शन कराता है, जैसा कि काव्य के आरंभ में श्री शिवराज पाटील; पूर्व लोकसभा अध्यक्ष (अब केन्द्रीय गृह मंत्री) ने लिखा है। साथ ही यह कृति कवि के संवेदनशील, विचारक, दार्शनिक और बहुज्ञ के पक्ष को भी उजागर करती है। इस काव्य-संग्रह में विविध विषयों पर लिखी गई 42 कविताएं संगृहीत हैं। इन कविताओं में लोक-मंगल, देशभक्ति के प्रति निष्ठा तो सामाजिक समता, गरीबी, बेकारी, बेरोजगारी, शोषण, स्वार्थपरता, संकीर्णता, असमानता, आतंकपरकता और सांप्रदायिकता, अवसरवादिता, सत्तालोलुपता, धार्मिक आडंबर, सामाजिक विद्रूपता के विरुद्ध स्वर मुखरित हुआ है। इसके साथ कवि ने यांत्रिकता और धर्मनिरपेक्षता पर भी तीखा कटाक्ष किया है -

तंत्र नहीं, देश को लोकतंत्र दीजिए।

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

प्रकृति में निरपेक्षता नहीं सापेक्षता है।

कहा जाता है कि 'जहाँ न जाए रवि वहाँ जाए कवि। इस प्रचलित उक्ति को डॉ. सत्यनारायण 'सत्यज' ने सार्थकता प्रदान की है। अभी तक सूत्र था कि संगीत से दीपक जल जाते हैं। उन्होंने 'गीत से भी दीपक जल जाते हैं', का उल्लेख कर कविता की शक्ति से परिचय कराया है, जो मौलिक प्रयोग है -

गाए स्नेह गीत, गीतों से जलें दीप, दीप से दीप जलाएं।

कवि सांस्कृतिक एकता, मानवीयता और संकल्प चेतना के प्रति आदि से अंत तक सजग दिखाई पड़ता है।

मनुष्य तो वही जो विजन में सृजन भर दे
है वही मनुष्य जो, निराशा में आशा भर दे।

शब्द संरचना ही कवि के श्रेष्ठ साहित्य की श्रेष्ठता का प्राण होती है। डॉ. सत्यनारायण 'सत्यज' में शब्द संयोजन की अद्‌भुत क्षमता है-

अनिल, अनल, जल
संतत युक्त रहे अनयास
और - जबहिं विभक्त तत्त्व होई जाई
तबहिं जीव चिरजीव कहाई

इस काव्य संकलन की सभी कविताएं उत्कृष्ट हैं। अत: हिन्दी काव्य का एक चमकता मुक्ता है जिसका साहित्य संसार में स्वागत हुआ है। इस श्रेष्ठ रचना के लिए डॉ. सत्यनारायण 'सत्यज' साधुवाद के पात्र हैं।

फार्म संख्या - IV (नियम 8 देखिए)

1. प्रकाशन का स्थान	:	दिल्ली
2. प्रकाशन की अवधि	:	द्विमासिक
3. मुद्रक का नाम	:	देवेन्द्र मित्तल
क्या भारत का नागरिक है ?	:	हां
4. प्रकाशक का नाम	:	देवेन्द्र मित्तल
क्या भारत का नागरिक है ?	:	हां
5. पता	:	3308, सेक्टर-डी-3, वसंत कुंज, नई दिल्ली-70
6. संपादक का नाम	:	प्रो. सतीश चन्द्र
क्या भारत का नागरिक है ?	:	हां

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

पता	:	166, वसंत एन्क्लेव, राव तुलाराम मार्ग, नई दिल्ली -110 057
7. उन व्यक्तियों/संस्था का नाम व पते जो समाचार-पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों	:	सांस्कृतिक गौरव संस्थान डाक पेटी संख्या 5016, सेक्टर-5, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली-110 022

मैं, सविनय एतद्द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

ह. देवेन्द्र मित्तल

Editorial Article

Iran & Arabs : A brief Historical perspective

Iranians have a record of a proud civilisation which once spread from Mediterranean sea to N.W. Bharat and from Red sea through Arabia to Central Asia. Cyrus and Darius are known to be builders of first world empire. If ever, one were to write a political history of the world, they would consitute its first chapters. Their language-Persian close to Sanskrit, is a language which is rich in literature and Iranians are truly proud of it. They had strong cultural links with India before the advent of Islam, as fire worship was practiced in both the societies.

The Arabs, divided into tribes and tribal formations like *Ghassanids* and *Lakhamids*, rendered allegiance to more powerful Romans and Persians respectively so much that they were known as 'Roman Arabs' and 'Persian Arabs. It was a period when Persians dominated the region.

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

But the rise of Islam in Arabia changed the picture altogether. The tribal integration under Islam and the knowledge that Persian hold over North Arabian lands was weakening, led them to seize the moment defeating the mighty Persian armies. The pride of Persians lay in ruins. But, despite their defeat they did not reconcile to their inferior status. What they lost politically was made good by asserting their superior culture. The nomadic Arabs were no match to the sophistication and the enlightenment of the Persians. The Arabs began to be gradually Iranized. The Arabs were simpletons as compared to the Iranians who were smart urbane and intelligent. Thus began a struggle for supremacy with Arabs. In a matter of couple of centuries and though Arab political hold gradually disappeared, Iran was 'Arab Islamised' for all time to come.

For the Iranians it was difficult to forget their pre-Islamic greatness. At heart they nurtured a contempt against the Arabs which erupted from time to time in their relations with them. Persian literature began to draw caricatures of gullible Arab. The denigration of the Arabs in Persian literature was so extensive that it took the form of a movement known as *Shuubiyye*. Arabs were mocked at every concievable opportunity. Infact the Iranians have not been able to forgive or forget this humiliating subjugation to the Arab.

The Arab expanded towards North and West i.e. Iraq, Syria, Palastine and North-Africa, in a blaze of rapid conquests one after the other which left the world dazed, There took place a total transformation of ethnic cultural and linguistic contours of the people. But the Arabs could not repeat the same story in their eastern conquests. **Iran despite being vanquished remained essentially Persian in character and civilisation.** Unlike the regions to the West, they did not accept Arabic language. The Sunni Islam that was thrust on them was ultimately rejected and Shiism – another variant of Islam – was adopted to keep its national identity sharp and clear of the Arabs in the West and Turks in the North. It also recalled its *irredentist* ambitions which led to a prolonged struggle with the Sunni Ottoman Turks, Iraq and Syria being the bone of contention between the two.

The rise of European Imperialism altered the regional political situation. Iran-Arab question abated though misunderstandings with the Arabs did not disappear. The British imperialists dismantled the Ottoman supremacy while establishing their own regime of Finance Capitalism in Middle East. The Iranian rulers as well as other local potentates of the area were reduced to a secondary position. The British influence led to Europeanization process of Iran. Constitutional revolution of 1905-06 was partially if not fully inspired by the British. Iranians were looking forward to constitutional monarchy with Majlis (Parliament) as their law making body. The event of this period bore political religious and economic overtones. Iran saw a period of intense factional politics which was used well by the British, who taking advantage of it forged ahead with agreements on the exploitation of oil. Anglo Iranian Oil Company (AIOC) was established and the British were able to extract concessions from them expanding areas of oil operations.

In 1925 the Modern History of Iran witnessed a new turning point as Shah Reza in a coup established himself as the monarch with authority. He initiated social reforms and economic development of Iran, improved roads and built a trans-Iranian railway system. As a matter of fact it was revival and reassertion of Iranian nationalism and pride which put Iran ahead of its Arab neighbourers. The discovery of oil in the Arabs states of Iraq and Saudi Arabia helped them to compete with Iran for oil incomes. The Arab-Iranian rivalry was becoming conspicuous. The Shah of Iran encouraged the purification of Persian language from Arabic words and extensive research studies in Persian literature were undertaken in the University of Tehran. The interest of western scholars was aroused and several Persian works were translated into English. E.G. Browne came out with a literary history of Persia which is one of the best works on Iran. Iranian national sentiments were emerging on the modern lines.

During the second world war the British became suspicious of Shah Reza's hobnobbing with Germany and as a result was forced to abdicate in favour of his son Reza Shah who barely survived an attempt to overthrow him by the communists led coup in 1953.

Iran and Arab politics begins to hot up in the period after 1953. The Arabs led by G. Abdul Nasser supported by U.S.S.R. opposed the western imperialism while Iran-Pakistan, Turkey and Iraq found in Baghdad Pact an opportunity to stop the rise of Arab nationalism which provided company to Russian communism. The Arab movement of nationalisation of their oil resources on the one hand and liberation of Suez Canal from British controls on the others, made the Arab masses to put up a united front but not so much with the Arab Governments. The coup in Iraq in 1958 knocked the bottom out of Baghdad pact which was revised to become Cento (Central Treaty Organisation). Iran and Pakistan become still more important in the Anglo-U.S. scheme of managing the cold war with U.S.S.R.

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

Iran was frequently criticised by the Arabs for its anti-Arab policies. It was accused for clandestine relationship with Israel to the disadvantage of the Palestinian Liberation Organisation in its bid to defeat and 'exterminate Israel from the map of the world'. The crushing defeat the Arabs received from Israel in 1967 made Iran the most powerful regional state in the area. The *Shahanshah* took the opportunity to grab three islands in the Persian Gulf, i.e., *Abu Musa, Tunbe Bazurg* and *Tunbe Khurd* which provoked a strong reaction from the Arabs of the Gulf. This question still continues to cause bitter feelings between Arabs and the Iranians. The disputes related to the continental shelf in the Persian Gulf also emerge from time to time between the Arab states and Iran though the *Shatt al-Arab* boundary question with Iraq was temporarily settled.

Iran and Saudi Arabia today represent the two nodal points in the region after Iraq suffered heavily in the Gulf war and consequent occupation of Iraq by the American troops. The Iranian revolution of 1979 was a watershed in the politics of West Asia. The religious fervour and western intrigues caused by their anxiety to control the Middle Eastern oil led to a bloody 8 year war with Iraq with the undertones of Sunni Arabs and Shiist Iran. The war did not decide anything except paying tragic human cost which is not unprecedented in the history of Islam. The Arab neighbours became ever more suspicious of Iran's *irredentism* formed out of its history and civilization. Saudi Arabia blamed Iranian *Shiite* activists for the Mecca Massacre in which hundreds lost their lives.

The *Kal Chakra* of history may have moved closer to the civilizational conflict as propounded by Huntington, but within the wider global conflict Sunni Arabs and Shiite Iranians are likely to continue their struggle with decisive consequences while trying to upstage each other (an Islamic compulsion) on their hostility towards Israel as a showpiece of service to Islam.

Further Readings

1. Richard Cottom : Nationalism in Iran, Pittsburgh, 1964
2. Sir Percy Sykes : A History of Persia, (in two volumes) London, 1954
3. Binder, Leonard : Iran, Political Development in Changing Society, Berkeley, 1962
4. Browne E.G. : A Literary History of Persia, (in four volumes), Cambridge, 1956
5. Grunebaum Von : (German Orientalist) Islam
6. Bernard Lewis : Arabs in History, London, 1950
7. Nicholson R : A Literary History of the Arabs, Cambridge, 1969
8. Goldzieher : Muslims Studies (A collection of Articles)
9. Enayat Hamid : Iran and the Arabs (a Monograph)
10. Philip Hitti : Arabs in History, Edinburg, 1970
11. Ghirishman R. : Iran- From the earliest times to the Islamic conquest, a Penguin book-1954 English translation from French version.

Economic scene : ABC of recession

What is a recession? **It is a protracted slowdown of the economy. The slowdown is usually classified as a recession if it lasts at least six months. The technical definition is 'two consecutive quarters in which the gross domestic product (GDP) decreases'. The GDP is all the goods, services and products a country produces.**

The typical symptoms of a recession are: **People buying less (retail decline). Decrease in factory output. Growing unemployment (in the US, unemployment recently rose to 5 per cent, another sign of an imminent recession). Slump in personal incomes. A dipping stock market.**

What causes the downward spiral? **As the saying goes, what goes up must come down. An economy that has undergone a long period of expansion will contract as part of the normal economic cycle. Most recessions are short-lived and followed by a growth spurt. The economy will typically expand for six to 10 years and then enter a recession for six months to two years. This is how it happens: Consumers don't feel confident about the economy, and spend less. Decreased demand forces producers to lay off employees. The laid-off workers spend less, further depressing demand. This makes investors fear a fall in stock values, they invest less, sell what they have. Stock markets crash.**

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

How do economies get out of a recession? **Tax cuts are a common tool used by governments - the more money people get to keep, the more they spend. Another popular tool is an increase in government spending, resulting in more jobs. This was how Franklin Roosevelt tried to end the Great Depression. However, the present trend is to favour private sector growth instead. Monetary policy. The US Federal Reserve has just introduced a 0.75 per cent cut in interest rates, a desperate measure to cushion the recessionary fall. The Fed's counterparts - in India, it's the Reserve Bank - across the world can adopt the same measure or increase holdings in government bonds, a way of infusing money into the government's coffers.**

How a recession in the US will affect India **A slowdown in India's export industries like information technology, BPO, pharma, textiles, gems and jewellery. It could slow the rate of India's overall growth. The impact on the economy would be limited as India is predominantly a domestic demand-led economy. A weak dollar could lead to a flood of foreign money in Indian markets, which can't be insulated. Oil could get cheaper, easing inflation. Loans could get cheaper too.**

courtesy

Uncalled for apology

-Prafull Goradia

Prof. Devendra Swarup has got it all wrong on the demolition of Babri Masjid

Even after 15 years, the significance of the Babri Masjid demolition has not been widely understood. Even a historian of the stature of Prof Devendra Swarup is more apologetic and less objective in his commentary published by The Pioneer on December 1, 2007. **He has talked of the demolition having left a bad memory and he went to the extent of differing with writers Nirad C Chaudhuri and VS Naipaul, who had welcomed the event as a piece of justice.**

Prof Swarup wanted the edifice to last longer and hoped for a settlement. Did he not realise that a *momin* has only three alternatives before him? Ideally, to live in a *dar-ul Islam.* Alternatively, to struggle in a *dar-ul Harb* till victory is won. If victory appears impossible, he should undertake a *hijrat* to a Muslim homeland. Little wonder Syed Shahabuddin had in the columns of this journal, asserted that if there is a conflict between identity and development, the Muslim would prefer identity.

Can anyone recall a settlement on this sub-continent between Hindus and Muslims in the course of the past 1000 years? It has been a millennium of strife, victory or defeat, but no settlement.

Prof Swarup's comments reflect the Hindu diffidence caused by a millennium of debacles and humiliations. His reference to Marxist historians is justified but a deep enough diagnosis of the Communist mentality would show that the 'reds' are the masochistic fringe of the Hindu community that has dreaded Muslim oppression. They obtain pleasure by inflicting pain upon themselves by running down their own community while retaining names like Har Kishan, Sitaram and Gopalan.

The Marxists are not alone to blame; some Hindu leaders are also guilty. For example, they have never demanded an apology from Muslims for any of the nine mega crimes perpetrated by their community on Hindus.

The Governments in India have taken the boycott of *Vande Mataram* lightly although, in effect, Muslims refusing to participate is an insult to the nation. *Vande Mataram* was the song of the independence movement and would have been the national anthem but for Jawaharlal Nehru's weakness for Muslim prejudices. *Jana Gana Mana* was, therefore, chosen, although it was originally written as a tribute to King George V.

Hindu-Muslim riots were mostly started by the latter. If this were not so, why have there not been Hindu-Christian riots even in districts where the latter are dominant, as in Nagarcoil?

Until the political advent of the British, the communal equation was so loaded that the Muslims felt secure. Once Muslims were also reduced to subject status, their insecurity began, the corollary of which

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

were riots. In the course of the Moplah riot of 1921, anything was practised from arson to conversion to pregnant women being cut into pieces with unborn babies protruding from the mothers' corpses. Annie Besant, the Irish lady and the 1913 president of the Congress, after her visit to Malabar, exhorted Mahatma Gandhi to see for himself the ghastly horrors which had been created by his 'brothers', Mohammed and Shaukat Ali.

Apart from Partition, which itself amounted to a mega crime upon India, how it was precipitated is noteworthy. **The Great Calcutta Killing, which began on August 16, 1946, was the result of Mohammed Ali Jinnah's call for Direct Action. It was a state perpetrated riot which HS Suhrawardy, as the premier of Bengal, directed.**

The Great Calcutta Killing has dimmed in Hindu memory. The practice of enslaving women, children and selling them in the markets of Baghdad and Damascus, during the medieval period, is completely forgotten. But for the late KS Lal who wrote his magnum opus, Legacy of Muslim Rule in India and Muslim Slave System in Medieval India, this aspect of Muslim atrocity might have been completely forgotten.

The imposition of *jiziya* or poll tax on Hindus on the excuse of protecting their life and property is legendary. The object of protection was called a *zimmi*. The subject was dealt at length by P Saran in his book, Studies in Medieval Indian History, whose introduction was written by Prof Mohammed Habib. The purpose of *jiziya* was three-fold: To raise money for the state, to impoverish the Hindu and to remind him that he was an inferior subject.

Iconoclasm, namely the desecration of idols and the destruction of temples is as old as Islam in India. Thousands of temples were rendered into rubble and used to rebuild masjids. It is still practised, whether in the Kashmir Valley or in the Swat district of Pakistan or at Bamiyan or in the so-called democratic state of Malaysia.

The biggest crime is terrorism. Since 9/11, there have been 13 major bomb blasts in India, killing hundreds of people. The officially reported figures are low because they are announced soon after the incident and can only be based on dead bodies found. Those that are not recorded are not taken into account. What is shameful is that the acts of terrorism are seldom condemned by Muslim leaders probably because they are looked upon as episodes in *jihad*. How can anything sacred be condemned?

courtesy: The Pioneer, New Delhi, Dec. 5, 2007

What Gujarat thinks today...

-Ashok Malik

The article is of special significance since it appeared in the pioneer five days before the election results of Gujarat were declared. Clearly the author had foreseen the preponderance of Pro Modi forces in the state which the media as well as psephologist failed to take note of. It also points out the direction in which the Indian Politics was heading, given the normal run of the rules of the game of democracy.

Just before 4.00 pm on Thursday, December 13, a warm-up speaker at Ahmedabad's Sardar Patel Stadium announced Ms Sonia Gandhi was about to reach. It was a modest crowd that had gathered, no more than 15,000 — never mind if a Congress leader later wrote the audience was "at least 50,000" strong and the city's leading English-language newspaper reported the stadium was "jam packed". Yet, this was the moment everyone had been waiting for: The arrival of the Congress president.

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

The warm-up speaker tried to rouse the crowd: “Congress party zindabad.” “Zindabad, zindabad,” answered the throng. “Sonia Gandhi zindabad,” he went. “Zindabad, zindabad,” it came back. Now he delivered the coup de grace: “Narendra Modi murdabad.” There was no response, only silence — a long, very articulate silence. The warm-up speaker repeated the lines, but this time, wisely, dropped the denunciation of Mr Modi.

Depending on how you interpret it, this anecdote could mean nothing at all or sum up the Gujarat election. As was apparent to any visitor, Mr Modi’s identification with Gujarat is now absolute. There is — or was — no hostility to him among mainstream voters, not even Congress partisans.

This is not to suggest that Mr Modi will win every single seat and the Congress can pack its bags and leave Gujarat for good. It is only to point out that the personality factor brought Mr Modi a uniform incremental vote across the State. What the uncommitted voter was telling him was: Give me a local candidate and caste/community coalition I can live with, and I have no problem voting you back to office.

Mr Modi has emerged as a pan-Gujarat phenomenon. He has not reduced the Gujarat BJP to a regional party, but has become a regional leader. It is crucial to understand the difference and an example would be illustrative.

In the 1980s, NT Rama Rao invoked “Telugu pride”, built a movement out of nothing and swept to power in Andhra Pradesh. Between 2002 and 2007, Mr Mulayam Singh Yadav and the Samajwadi Party (SP) ruled Uttar Pradesh. NTR was a regional phenomenon, geographically located within a State but also symbolising a cultural identity. The SP was and remains a regional party, a State-specific political unit. Mr Yadav is not a pan-UP leader; he does not seek votes in the name of “UP pride”.

Should he win in Gujarat — and political assessment would suggest exit pollsters have been conservative in tabulating his mandate — can the Modi model be replicated nationwide? There are two ways of addressing that question. The first is to wonder if Mr Modi can some day become the president or prime ministerial candidate of the BJP, whether he can work with the NDA partners; in a sense, it is to re-visit the tired debate between two equally spurious notions of secularism.

However, there is another aspect to the Modi/Gujarat model — can it redefine the national party? In the coalition system that emerged in the 1990s, a national party — focussed on ‘national issues’ — joined hands with regional parties and regional leaders. Today, the space for what was considered ‘national politics’ and what constituted ‘national issues’ has declined. Short of war or perhaps terrorism, there is little possibility of a political theme uniting all India at election time. Even inflation affects different States differently, given their prosperity levels.

As such, national parties such as the BJP and the Congress are faced with two choices. They can slowly atrophy, ceding more and more ground to regional rivals. Alternatively, they can join the game and become umbrella groupings of strong regional/state leaders.

To some degree this is already happening. If the Congress defeated Mr N Chandrababu Naidu in Andhra Pradesh in 2004, a contributing factor was that it actively promoted Mr YS Rajashekhara Reddy as an alternative Telugu strongman, albeit under the Congress aegis. In Gujarat, the Congress refused to project a face, countering Mr Modi with Ms Sonia Gandhi: Straight-from-the-heart Gujarati with stilted Hindi, a local boy with a distant figure from Delhi.

That aside, India’s political economy has become so consciously federalised that a ‘one size fits all’ approach is suicidal. Exemplary as it is, Modi-style governance cannot be easily repeated across India. The Gujarat Chief Minister has knocked down patronage raj. He offers electricity if you pay your power bills; and 280,000 defaulters have had cases filed against them. Rather than promise free education in moribund Government-dependent schools, he encourages self-financing schools that charge a modest fee.

This model can work in a self-starter society like Gujarat, where entrepreneurship and civic consciousness have reached critical mass, and where an enlightened, transactional view of public goods is possible. This model will be a non-starter in Bihar or Madhya Pradesh. Even in the reformist south — Andhra Pradesh and Tamil Nadu — business-friendly Chief Ministers have combined economic deregulation with vast doses of populism. The DMK courts Nokia’s manufacturing plant but also gives away free television sets. It is possible that Mr Modi’s success will encourage others to adopt a no-nonsense, freebie-free culture, but there is no guarantee.

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

In this situation, the national party of the future would need to allow regional leaders to blossom and occasionally dominate the institutional structure in their respective States. If you can accept a Naveen Patnaik outside the BJP, is there really a problem accepting a Naveen Patnaik inside the BJP? The national party's regional leaders will respond to political and socio-economic stimuli in a local context.

So if the national party becomes an integrated network of regional bosses, who is the 'national leader'? The Prime Minister (or prime ministerial candidate) will, in this case, be a genuine first among equals: A peer who works with his State colleagues, is an adept political manager and tempers contradictions. Even if Mr Modi were to come to Delhi, he would find himself performing this role.

Actually, such a matrix is no different from the Congress of the 1950s, when a BC Roy in Bengal or a K Kamaraj in Tamil Nadu were the sinews of the all-India party. To them, the Prime Minister was not Panditji placed on a pedestal, but simply Jawaharlal, a friend and comrade, a first among equals.

Can national parties come to terms with these federalising impulses? If they want to stay relevant, they have to. That is the lesson of the 2007 Modi election.

Courtesy : The Pioneer, New Delhi, Dec.19, 2007

Is Gujarat India ?

When Narendra Modi's victory in the Gujarat assembly elections became a clear prospect on Sunday, a delirious supporter in Ahmedabad yelled into a TV camera: "Gujarat is India!" Well, is it? **State elections do not normally matter that much for national politics. But Gujarat, since the emergence of Modi as chief minister, has ceased to be just another state. Elections here have come to symbolise a battle of ideologies, a tussle between perceptions of what is and what ought to be India.** Modi's convincing victory in the 2007 assembly elections - 117 out of 182 seats, as against 127 in the 2002 elections - would have a significant impact not just in Gujarat and within the BJP or the *sangh parivar*, but also on national affairs.

Modi's victory is clearly his. In that sense, it is a defeat not just for the Congress but also for important sections of the sangh parivar - those which had opposed him behind the scenes. He has led the BJP to its fourth consecutive win in Gujarat defying anti-incumbency factors and a rebellion within the party. The campaign devised by handpicked men kept the chief minister in focus.

The electorate was urged to vote for an agenda which skilfully combined Gujarati subnationalism and economic development. Modi's achievements as a politician and adminis-trator were trumpeted as if he was heading a regional party that revolved around an all-powerful leader. The men in masks who flooded his rallies reflected the nature of the elections: **it was a referendum on Modi. And he won it hands down.**

What does Modi's win signify for the BJP? For the first time, a BJP politician has dared to project himself above the party as well as the sangh parivar to fight an election. He has won despite a cold response from the RSS, VHP and other parivar outfits. The authority of the RSS over the BJP may now be under threat. Modi has shown that it is possible to espouse a personalised brand of Hindutva politics and build a base outside the influence of the RSS. That's something which even mass leaders like Atal Bihari Vajpayee and L K Advani have not risked trying.

What if Modi seeks to expand his authority outside Gujarat? What if other state leaders follow him and ignore the traditional hierarchy in the sangh parivar that allows the RSS to dictate terms to the BJP? The RSS philosophy places the organisation above the individual; it abhors personality cults, especially those that threaten the authority of the parivar.

Those who failed to heed this fundamental organisational principle have always been shown the door or made to recant their positions. Modi has been an exception. He has successfully run a state administration and won elections while snubbing the sangh parivar.

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

He could now be expected to sweep the party's state unit clean of parallel power centres. That the rebellion of senior BJP leaders, including former chief minister Keshubhai Patel and Kashiram Rana, did not dent the party's influence in their strongholds should make his task easier.

Modi may be committed to hold the chief minister's office in Gujarat for the next five years, but can the BJP restrict him to Gujarat, especially since his persona and aggressive politics have resonance among sections of the party elsewhere? Should the BJP now attempt to replicate Moditva outside Gujarat? Modi may be a much-feted leader in Gujarat, but his distinct appeal to subnationalism and unambiguous anti-Muslim politics could prove a handicap elsewhere. The complexities of India are such that it is tough to replicate a regional phenomenon across the country.

The present phase of coalition politics at the national level is a reflection of the diverse social and political traditions and interest groups that make up the electorate. A successful political coalition has to accept and accommodate that diversity in the polity. Moderation of ideology, both of the right and the left, is key to running a government at the Centre.

The BJP realised that in the 1990s when it decided to keep in abeyance controversial but core issues for the party like the Ram temple, Article 370 and a common civil code in order to seek allies. The party ideologue, Advani, made way for Vajpayee, the moderate leader. A moderate agenda helped the NDA coalition to form a government at the Centre between 1998 and 2004.

The present UPA-Left coalition too, despite many hiccups, has stuck to a middle course. In short, the tactics that won Gujarat for the BJP could curtail its influence nationally. Yes, there is the option of launching Modi on a national platform and seek the mandate for the party in his name. Yet, that could scare the BJP's present as well as prospective allies.

However, a shift to a more strident Hindutva tone, combined with dire warnings about terrorist threats to India, could well mark the BJP's revamped ideological approach.

The Gujarat results should set at rest the chances of an early Parliament election. The defeat is indeed a setback for the Congress. The party could console itself that it has increased its assembly tally slightly in Gujarat when compared to its performance in 2002.

However, it is unlikely that the Congress or the Left would risk a snap poll even though the Gujarat results owe a lot to local factors. And the BJP cannot be confident of repeating its Gujarat success in a few months' time in states like Madhya Pradesh and Rajasthan with a Moditva approach. Further, if the BJP goes for a more aggressive Hindutva agenda, it could influence the UPA and the Left to close ranks. Whatever be the case, the shadow of Modi looms over national politics, larger than ever.

courtesy : The Times of India, New Delhi, Dec.24, 2007

Sarkari-Sect

*-Dr. Y.K.Sharma**

India is a secular nation and everybody is euphoric about this provision. But when it comes to practice one can see that religion plays an important role in the working of the nation. For the present UPA government at the center Islam is the most important religion. Muslim first is the war cry of Prime Minister Dr. Man Mohan Singh. Working on this design he has also formed a number of commissions for this purpose like, Sachhar committee and Rang Nath Mishra Committee.

Huge amount of money is spent on the communal activities of Muslims. When last year the Allahabad High Court declared Haj subsidies, unconstitutional, the UPA government at the centre immediately rushed to the Supreme Court. When the Supreme Court restored the Haj subsidy, there was jubilation in the UPA camp. Now in India the scholarships for higher education are given to a very small number of students, that too after great difficulty, but Haj subsidy is rained on, around one lakh and

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

fifty thousand Muslims. If this huge amount is spent on education, the picture of the nation would be much brighter and happier.

Although the apex court lifted the ban but expressed unhappiness about subsidies granted to a religion in a secular state but it not dares to ban the Haj subsidy. Indian secularism does not permit to finance or promote any religion and religious activities. This is mentioned in the constitution in Part-III, which deals with fundamental rights. All religions are equal before the state and no religion can be given preference over the other.

But in India one can see that all the so called minorities or non Hindu religions are financed and promoted by the state openly and Islam is much more than equal due to his big vote bank. **One can see the plethora of minority commissions, minority educational institutions, madarsas, Haj Houses, Waqf Boards, Masjid etc., financed and patronised by the government. All the more deplorable is the fact that these bodies are spreading communalism and hatred.** In case of noted writer Taslima Nasreen they all show their communal color nakedly.

The insertion of term 'secular' in the Preamble in 1976 was simply a reiteration of earlier provision in the constitution. Under the provision the policy of giving subsidy to religious activity like *Haj, Madarsa* etc., amounts to an infringement of the principal of secularism, but UPA and its allies who always shout for secularism, should realize that by extending subsidies to Hajis and financing Islamic bodies, they are not only spoiling the secular fiber of the nation but are also falling pray to Islamic communalism and a party in its abetment.

The government must put an end to the policy of funding religions. Only on Haj alone, the centre and state governments have to spent thousand of crores. Government funding is un-Islamic also. An honest Muslim who can financially afford to perform the Haj can go to Mecca. A muslim should not go on pilgrimage to MECCA by borrowing money from any source. He should undertake the pilgrimage to Haj only with his own honestly earned money.

A trip to Mecca with state subsidy or grant cannot be called Haj in the true Islamic sense. **Moreover, the money collected by the state as taxes is largely given by Hindus. A large body of Muslims in India are not in a habit to pay taxes to the state. Even they are not honest in paying electricity, water, house tax and VAT.** In the areas dominated by Muslims, the theft of electricity is almost a common feature. The Chief Minister of Jammu and Kashmir Shri Gulam Nabi Azad has himself admitted this bitter truth. So Haj and all the other Islamic activities are performed on state largesse, contributed by Hindus by paying taxes.

Haj is not the isolated case, financed, heavily by the state, but large number of *madrasas, masjids*, Haj Houses, Waqf Boards, minority institutions, minority commissions etc are financed and patronized by the state. Due to big vote banks, The state plays a very active role in promoting Islamic communalism. Even in judicial disputes Indian states always side with Islamic bodies. For example when Allahabad High Court quashed the communal character of Aligarh Muslim University, centre immediately rushed to safeguard the communal character of Aligarh Muslim University. Similarly when Allahabad High Court declared that Muslims cannot be treated as minorties, again UPA government joined the Mullahas in oppositing the court ruling.

This communal appeasement is also visible on Eid. There is large scale slaughtering of goats and other animals. No body tries to prevent this cruelity against animals although under the provisions of the Constitution of India, this is a crime under the Prevention of Cruelty against Animals Acts. Not only this our State leaders, extend greeting to muslims on this slaughtering of animals and some even joins them with great pride.

Similarly our Prime Minister could not sleep when a doctor Haneef was arrested for terror links, but same prime minister remained unperturbed when large scale Hindus are killed by Islamic terrorists. Even when in Malaysia, large scale Hindus were arrested and tortured, our Prime Minister remained hale and healthy. Now communal reservation and communal budgeting are the other divisive acts done to consolidate muslim vote banks.

Even when noted writer Taslima Nasreen was attacked, the State of India danced with fanatics. Even the people connected with minority bodies, financed by the State, joined the Mullahas in attacking and demanding the banishment of the writer, but the three crore Bangladeshi intruders are permanent guests of the country, who are involved in unlawful activities and are a serious threat to the nation.

When any Muslim criminal is sentenced big hue and cry is made against the judge and the judgment. This list can be extended. All this discussion clearly shows that the State of India is one with Mullahas and fanatics is spreading Islamic communalism, but the nation is blinded to the threat posed by such activities

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

in the name of secularism. The so called secular parties never question, challenge and confront the muslim communalism. They are responsible for the growth of minority communalism. Due to this type of Islamic secularism, Islam has become the Sarkari Religion. The state of Jammu and Kashmir has become almost an Islamic state, which has not seen any Non- Muslim chief minister, where Capt. Bana Singh, Parm Vir Chakra winner gets only Rs. 166 /= pm as pension but Islamic terrorists get huge financial packages on the name of healing touch and rehabilitation.

Dr.Y.K.Sharma
(Reader, Deptt. of English)
SSN College(Alipur, Delhi-36) (University of Delhi).
E-mail: vibhor_sharma2003@yahoo.com

Secular means anti-Indian

-Indulata Das

The Washoe County Commission in the US observed Sanskrit Day on January 12 and organised a two-day seminar to mark the occasion. What could be more ironical than knowing that a Sanskrit seminar was held on American soil while the mother of most Indian languages, the dev bhasha (language of gods), is ignored in its own country.

Sanskrit, German scholar Max Müller had observed, was the greatest language of the world. Mahatma Gandhi had said that without the knowledge of Sanskrit, nobody could become a truly learned man. Only in India could such a language take shape and flourish. Unfortunately, Government does not realise what a national treasure this language is; this reminds one of the Sanskrit saying which means “a monkey cannot value the gift of a necklace of pearls”.

This cannot be a result of ignorance. It must be a part of the larger conspiracy to eliminate Indian languages. Our present-day rulers are doing with impunity what Lord Macaulay could only partly achieve through his policies in the 19th century. His system of education has now got a new name — ‘secular education’. It seems it is now a sin to teach students the glory of ancient India.

contd. Next page column 2

Everything non-Indian, even anti-Indian, is being taught in classroom in order to give the curriculum a ‘secular’ look. If our textbooks praise the Vedic period, the descendants of Lord Macaulay raise a hue and cry. The authors of the textbooks would rather heap praise on the Mughal period in order to add a ‘secular’ colour to the books.

If the ‘secularists’ find some tatsam (undistorted) words in Hindi textbooks, they accuse it is ‘saffronisation’ of Hindi. In order to make the Hindi books ‘secular’, the language has to be replete with words of Arabic and Persian origin.

The mere mention of the word Ganesh, the lord of wisdom, in a textbook of a south Indian State, was so unbearable for the self-styled champions of secularism in the country that the chapter had to be replaced by one on an animal. But an entire opening chapter, “Jisu mahan” (Jesus, the great), of a Government textbook in a North-Eastern State invites no resentment from any quarter.

courtesy : The Pioneer, New Delhi, Jan.1, 2008

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

News through statistics

Prices don't lie: It isn't aam admi's Budget

Essential Commodities	May 2004 (Rs. per Kg)	Feb.2008 (Rs. per Kg)
Wheat	08	13
Wheat flour	10	18-20
Rice	10	30 (depending on quality)
Bread	08	12
Sugar	14	22-25
Dal (Moong)	24	52
Dal (Arhar)	26	44
Dal (Masoor)	22	44
Dal Chana	25	45
Rajma	28	55-60
Besan	20	48
Milk (full cream)	14	24
LPG	244	295
Petrol	33.15	45.52
Diesel	22.50	31.73
Cement	125	245
Steel	23000 per ton	35000 per ton
Mustard oil	33.35	85.90
Refined oil	45	100
Banana	10 (a dozen)	25 (a dozen)

The prices of essential commodities have gone up to three to four times in the last five years.

"We have been struggling with skyrocketing prices of essential food items. The freebies given by the Government will further increase the rates of the essential commodities. The Government has waived loans of farmers but offered nothing to common man," said Vikram Singh, an employee of the Posts & Telegraph department.

courtesy : The Pioneer, New Delhi, March 1, 2008

Big-Budget epic films in the making

Mahabharata: Producer Bobby Bedi has announced a Rs. 300 crore film on this epic with A-list stars.

Ramayana: Raj Kumar Santoshi's ambitious Rs 100 crore film will see Ajay Devgan and Kajol as Ram and Sita. South Indian actor Prakash Raj will portray the character of Ravana.

Ramayana: Filmmaker Aparna Sen has also announced plans to make Ramayana from Sita's point of view.

Maalik Ek: Jackie Shroff will be seen playing Sai Baba in Deepak Balaraj Vij's *Maalik Ek.*

Ashoka: Raj Kumar Santoshi's *Ashoka* with star Ajay Devgan.

Draupadi: Rituparno Ghosh's *Draupadi* will have Bipasha Basu in the lead.

Hanuman: Producer Uru Patel is all set for a contemporary take on Hanuman.

courtesy : H.T., New Delhi, Feb. 2, 2008

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

Arrests & conviction for crimes under section 498A

Is our social and marital order, cracking?

Description	year 2003-05
No of new cases registered under IPC 498A	167,143
No of cases charge sheeted	134,072
No of persons arrested (A)	363,840
No of persons chagesheeted (B)	347,000
No of persons under trial (including past year) (C)	1,611,184
No of persons for whom cases were compounded/withdrawn (D)	38,393
No of persons who completed trials (E)	215,855
No of persons awaiting trial	1,356,936

Source : National Crime Records Bureau
courtesy : The Pioneer, New Delhi, Jan.13, 2008

Secular means anti-Indian ... (contd.)

The Washoe County Commission in the US observed Sanskrit Day on January 12 and organised a two-day seminar to mark the occasion. What could be more ironical than knowing that a Sanskrit seminar was held on American soil while the mother of most Indian languages, the dev bhasha (language of gods), is ignored in its own country.

Sanskrit, German scholar Max Müller had observed, was the greatest language of the world. Mahatma Gandhi had said that without the knowledge of Sanskrit, nobody could become a truly learned man. Only in India could such a language take shape and flourish. Unfortunately, Government does not realise what a national treasure this language is; this reminds one of the Sanskrit saying which means “a monkey cannot value the gift of a necklace of pearls”.

This cannot be a result of ignorance. It must be a part of the larger conspiracy to eliminate Indian languages. Our present-day rulers are doing with impunity what Lord Macaulay could only partly achieve through his policies in the 19th century. His system of education has now got a new name — ‘secular education’. It seems it is now a sin to teach students the glory of ancient India.

contd. Next page column 2

Everything non-Indian, even anti-Indian, is being taught in classroom in order to give the curriculum a ‘secular’ look. If our textbooks praise the Vedic period, the descendants of Lord Macaulay raise a hue and cry. The authors of the textbooks would rather heap praise on the Mughal period in order to add a ‘secular’ colour to the books.

If the ‘secularists’ find some tatsam (undistorted) words in Hindi textbooks, they accuse it is ‘saffronisation’ of Hindi. In order to make the Hindi books ‘secular’, the language has to be replete with words of Arabic and Persian origin.

The mere mention of the word Ganesh, the lord of wisdom, in a textbook of a south Indian State, was so unbearable for the self-styled champions of secularism in the country that the chapter had to be replaced by one on an animal. But an entire opening chapter, “Jisu mahan” (Jesus, the great), of a Government textbook in a North-Eastern State invites no resentment from any quarter.

courtesy : The Pioneer, New Delhi, Jan.1, 2008

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

Diary of Events (contd.)

December 1 The Vishwa Hindu Parishad praise Gujarat Chief Minister Narendra Modi saying the nation should adopt his "model of taking on terrorism". *The Pioneer, New Delhi, p. 5.*

December 2 Iranian police will crack down on women in Tehran flouting Islamic dress codes with winter fashions deemed immodest, such as tight trousers tucked into long boots, an officer was quoted. *The Times of India, New Delhi, p. 19.*

December 3 "It is an eye opener for me. There is no comparison between the two sides. Infrastructure on the Chinese side is far superior. They have gone far in developing their infrastructure," Antony said after visiting this border. *The Pioneer, New Delhi, p. 5.*

December 5 A rally of 10,000 Hindus in Malaysia demanded equality and fair treatment in the Muslim-majority in Malaysia. *The Pioneer, New Delhi, p. 10.*

December 7 Court summons Ram, Hanuman. The summons issued to the two gods was sent to a temple housing their idols. The temples is built on encroached land. The temple land was donated to gods by former local ruler. Layers said if gods are the land owners, they should appear. *The Metronow, New Delhi, p. 15.*

December 8 State BJP general secretary Rahul Sinha said: "The CM's Budhas' comment on Ram is an attempt to appease Muslims after the Nandigram carnage Ram is a matter of faith and communists are atheists. They even spread canard about Swami Vivekanand and Rabindranath Tagore." *The Times of India, New Delhi, p. 13.*

December 9 Country's first bovine beauty pageant was held in Bhopal on October 10, 07 in celebrate Goverdhan Puja. Cow the contest, like at any other pageant, the candidates had to fulfill certain criteria. The cow had to be an Indian breed such as Gir, Sahiwal or Marwari, and not the more glossy foreign kind from New Zealand, Australia and Europe. The cow had to beautiful, which meant that her head and legs had to be shapely and in proportion to her torso. Finally, the cow's gait had to be firm-hobbling or stooping was a straight disqualifier. *The Times of India, New Delhi, p. 25.*

December 13 The government announced its plan to develop 6,000-k.m. range Agni-IV missile which will be capable of destroying targets deep in China. *The Times of India, New Delhi, p. 17.*

December 14 APJ Abdul Kalam swept students of IP University off their feet. Students jostled to shake hands with him and the former President obliged. *The Metronow, New Delhi, p. 12.*

December 15 O ver the arrest of five leaders of the Hindu Rights Action Force (Hindraf), the United States has demanded that they be provided the due process of law and accorded all the rights available to other Malaysian citizens. *The Pioneer, New Delhi, p. 9.*

December 20 Around 2,000 tribal men and women from different villages in South Gujarat, who had converted to Christianity, re-embraced Hinduism evening at a religious ceremony (sammelan) on the Shivaji grounds in Tapi district. They took an oath that they won't convert to Christianity ever again in the future. *The Indian Express, New Delhi, p. 9.*

_________ Gujarat, Chief Minister Narendra Modi hit out at the Prime Minister's New 15-Point Programme that stipulates earmarking 15 per cent of targets and outlays, wherever possible, under various schemes for minorities. Leading the BJP attack, Modi opposed "communal budgeting" for a "vote bank". Modi deviate from the text of his written speech to ask the Prime Minister how was "religion important" for a government strategy on inclusive growth. *The Indian Express, New Delhi, p. 1.*

December 21 Lucknow: An observation by Dar-ul-Uloom, Deoband, that Muslims should restrain from sacrificing cows if such an act threatens to disturb peace and harmony has been welcomed by not just clerics but common Muslims as well. *The Times of India, New Delhi, p. 4.*

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

December 22 Minority students who secure over 50 per cent in Class X examination would be entitled to scholarship for pursuing further studies from the Minority Affairs Ministry. The assistance would officially be called the post-matric scholarship. *The Pioneer, New Delhi, p. 4.*

December 24 The BJP's victory in the Gujarat Assembly elections drew a euphoric response from AIADMK leader and former Chief Minister Jayalalithaa, who said Narendra Modi's spectacular win had brought hope to the country that India could still be saved from 'unscrupulous power-mongers'. *The Pioneer, New Delhi, p. 8.*

December 27 The breath-taking Akshardham Temple in Delhi has earned a place in the Guinness Book of World Largest Comprehensive Hindu Temple'. Spread over 30 acres, the temple was opened to public two years ago and now gets over one lakh people visitors every week. *The Times of India, New Delhi, p. 1.*

_________ The VHP is planning to hold a "mega-rally" at Rohini expected to be attended by top Hindu religious heads and a large number of Sangh Parivar activists from all over the country. *The Hindustan Times, New Delhi, p. 1.*

_________ Aroosa Alam, the Pakistani journalist who has been romantically linked with Amarinder Singh, has said the former Punjab Chief Minister was a "very wise friend" and that her relationship with him was platonic. *The Hindustan Times, New Delhi, p. 8.*

December 28 Former Prime Minister and chairperson of the Pakistan People's Party (PPP) Benazir Bhutto was assassinated by a suicide gunner who later blew himself up with a powerful bomb blast that killed at least 20 other persons at Liaquat Gardens in Rawalpindi after she addressed an election rally. *The Tribune, New Delhi, p. 1.*

December 29 The cold vibes between the Congress and the Left, Union Human Resource Development Minister Arjun Singh and Delhi chief Minister Sheila Dikshit failed to turn up for the inaugural session of the annual meeting of the Indian History Congress hosted by Delhi University. As usual Left-wing historians dominated the dais. While Jaiswal, a former professor of History at the Jawaharlal Nehru University, is the president of IHC, Habib is its vice president. The local IHC secretary is the head of the History department, DU, SZH Zafri. *The Pioneer, New Delhi, p. 4.*

_________ The BJP returned to power in Himachal Pradesh with a bang, winning 41 of the 68 seats in the assembly poll. The party will form a government in the state for the third time while P.K. Dhumal under whose leadership the party went to the polls will head the government for the second time. *The Tribune, New Delhi, p. 1.*

December 31 The Vishwa Hindu Parishad organised a rally at Japanese Park in Rohini to exert pressure on the Centre over the Ram Setu issue. The crowd turned out in large numbers - organisers put the figure at between seven and 10 lakh. Sanjay Dabas, who was manning the camp near Rithala Metro Station, claimed about three lakh food packets were consumed. We had sent 34 lakh signatures to the President against the destruction of the *Ram Setu* but no one listened to us, says Champat Rai, joint general secretary of the VHP. *The Indian Express, New Delhi, p. 2.*

_________ The Sangh Parivar served an ultimatum on the Union Government regarding the *Ram Setu* project. The VHP reiterated its demand of scrapping the controversial *Sethusamudram* project. The protesters hailing from various parts of the country marched to the venue shouting slogans like "Ram Setu bachao". The mega rally was also addressed by VHP president Ashok Singhal and many religious leaders. *The Pioneer, New Delhi, p. 4.*

January 1 A Chennai-based information technology industrialist has promised to donate Rs 100 crore to the Sai baba temple trust in Shirdi. Sources in the cash-rich temple trust said it was the biggest ever donation in its history. *The Hindustan Times New Delhi, p. 1.*

January 7 The historic village of Malana, which traces its origins to 326 BC when Alexander's Macedonian army invaded the north western outposts of India and produces the world's finest hashish (Malana cream), was gutted in a raging inferno late on 5th night. *The Times of India, New Delhi, p. 1 & 14.*

January 8 Five Iranian boats made aggressive maneuvers and showed hostile intent towards three US Navy ships in the Strait of Hormuz, a major oil shipping route in the Gulf, the Pentagon said. The Iranian Foreign Ministry described the incident as ordinary. *The Indian Express, New Delhi, p. 13.*

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

_________ A sea-change seems to have taken place in the lingua franca at call centres. It is no longer a must to talk in English. One could use Hindi, Punjabi or any other language well understood locally, instead, say the senior executives of software companies and call centres of Noida. *The Tribune, New Delhi, p. 4.*

January 9 RJD chief Lalu Prasad Yadav will no more be a part of school education in Bihar. Chapter eulogising Lalu will be deleted from the Hindi textbook of class VIII students. The chapter had been incorporated in the textbooks way back in 1993 when Lalu was Bihar Chief Minister. *The Indian Express, New Delhi, p. 3.*

January 10 Leader of the Opposition in the Lok Sabha LK Advani proposed the name of Atal Bihari Vajpayee for the country's highest civilian honour, Bharat Ratna. *The Pioneer, New Delhi, p. 1.*

_________ The stage is getting set for renewed hostilities between UPA and Sangh Parivar over the *Sethusamudram* project with T R Baalu's shipping ministry touting the report of experts to say that no man-made structure (Ram Setu) existed. *The Times of India, New Delhi, p. 17.*

_________ A gurdwara, said to be the first in Eastern Europe, will come up in Warsaw as the authorities have finally given their green signal. Respecting the religious identity of the Sikh community the authorities have also allowed them to wear turban and keep a kirpan. *The Tribune, New Delhi, p. 13.*

January 13 Bhubaneswar/Kendrapada: The Orissa government ordered an inquiry into the description of Netaji Subhas Chandra Bose as 'fake nationalist" in school test papers. The government's move came after irate students and teachers took to streets when the issue came to light in Kendrapada. *The Times of India, New Delhi*

_________ Lakhs of students gathered at stadia, playgrounds and open field across the state and participated in the programme as part of the Swami Vivekanand Jayanti celebrations. Majority of Muslims students kept away from it saying '*surya namaskar*' was against Islam. *The Time of India, New Delhi, p. 19.*

_________ The 359-metre high steel bridge with a total length of 1315 metres coming up on the Katra-Quazigund section of the Udhampur-Srinagar-Baramullah Rail Link (USBRL) will be the final rail link between J&K and Kanyakumari. It will be the highest rail bridge in the world the next to the Indian one is at France which is around 300 metres. *The Pioneer, New Delhi, p. 1.*

January 16 Government-appointed committee of "eminent persons" on the Sethusamudram project which submitted its report to the Government last month, had concluded that there was "no evidence, archaeological or scientific, to prove the existence of any man-made structure". However, it recommended that archaeologists be associated during the dredging work of the project in the Adam's Bridge are in order to report and recover artefacts and archeological features, if any. *The Indian Express, New Delhi, p. 1. & 2.*

January 17 In view of the growing demand for bureaucrats to supervise various Central schemes and increasing number of districts in States, the Government has decided to raise the number of IAS officers appointed annually. *The Pioneer, New Delhi, p. 1.*

January 18 We couldn't have had a better justification for keeping the Ram Setu intact as Sri Lanka Tourism is now aggressively selling the *Ramayan* trail, worked mostly around events of the *Lankakand* in the epic to attract thousands of pilgrims and believers from India. *The Pioneer, New Delhi, p. 1. & 4.*

January 19 Modifying its position to suit the stand of regional parties, the BJP dropped its demand for 33 per cent reservation for women in Lok Sabha and state Assemblies, citing lack of consensus. Instead, a new legislation should be brought in to force all political parties to earmark 33 per cent seats for women, the party said. *The Indian Express, New Delhi, p. 4.*

January 21 In a major concession to the agitated ethnic Indian community in Malaysia, the government today declared the Hindu festival of *Thaipusam* a national holiday. *The Tribune, New Delhi*

January 22 Opposition leader J Jayalalithaa flayed the DMK regime for failing to stop 15 cows from dying of hunger at the renowned *Ramanathaswamy* Temple at Rameswaram, and demanded the resignation of Chief Minister M Karunanidhi for his Government's failure on all fronts. *The Pioneer, New Delhi, p. 1.*

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

_________ In an exclusive interview with *The Indian Express*, the Dalai Lama sounded a note of caution for New Delhi, saying Tibetans were the "first line of defence" for India all along the Line of Actual Control (LAC) but this situation may completely change with the huge influx of Han Chinese all set to alter Tibet's demographic profile. Dalai Lama urged New Delhi to take up the case of "meaningful autonomy" with Beijing as "it is ultimately a matter of safety of the 4,000-km long border from Arunachal Pradesh to Ladakh." *The Indian Express, New Delhi. p. 1. & 2.*

January 23 Accusing the UPA Government of appeasing Muslims, Shiv Sena chief Bal Thackeray has said that the Sachar Committee's report on the plight of Muslims must be burnt. Thackeray said that till "important and spineless" leaders ruled the country, there was no hope for Hindus, who had become "eunuchs". *The Indian Express, New Delhi, p. 3.*

_________ In what could be deemed as the official take on the controversy surrounding Netaji Subhas Chandra Bose, government documents show that though he was in the ill-fated plane that crashed on August 18, 1945, he survived. Anuj Dhar had sought papers related to the death of Bose from the Union Ministry of Home Affairs under the Right to Information Act. *The Pioneer, New Delhi*

_________ The *Sethusamudram* Shipping Canal Project (SSCP), will not be useful for the navigation of the big ships, chief of naval staff admiral Suresh Mehta Said. *The Metronow, New Delhi, p. 15.*

_________ Former President A.P.J. Abdul Kalam advocated a three-pronged strategy to promote harmony and peace in the world. He was launching an Eastern initiative, the global Foundation for Civilisational Harmony (India) here. *The Tribune, New Delhi, p. 2.*

January 24 According to the outfit's insiders, chief executive officer (sarkaryavah) Mohan Bhagwat reportedly told Modi to "stand by Advani to win 2009 (general elections) and get ready to lead in 2014," when the latter called him up after the election victory. *The Hindustan Times, New Delhi, p. 13.*

January 25 Prime Minister Manmohan Singh decision to reward the families of *jihadis* killed by security forces in Jammu & Kashmir is the latest manifestation of his 'Muslims first' policy of appeasing fanatics while debasing the Indian state. *The Pioneer, New Delhi, p. 6.*

January 26 A grandson of Mahatma Gandhi resigned form a peace institute based at the University of Rochester after drawing criticism for asserting that "Israel and the Jews are the biggest players" in a global culture of violence and "can overplay" the Holocaust for sympathy. *The Hindustan Times, New Delhi, p. 12.*

Select Articles

Doom for Muslim identity politics : Irfan Ali Engineer, The Pioneer, New Delhi, December 1, 2007, p. 7.

The demolition may have engendered a feeling of victimhood among Muslims and even pushed a minuscule section into the gleeful arms of the ISI. But, in hindsight, the fall of the Babri Masjid also rang the death knell for those who pla yed Muslim identity politics.

Beijing ferries troops on high-speed train to Tibet : Saibal Dasgupta, The Times of India, New Delhi, December 2, 2007, p. 19.

China's high-speed, high-altitude railway to Tibet carried troops to the region for the first time, state media reported, in a development likely to fuel concerns about the railway's impact on the Himalayan area. The official Xinhua news agency quoted an unnamed official of the People Liberation Army as saying that the "railway will become a main option" for transporting troops to Tibet, replacing the air and road routes used since 1950 when Chinese soldiers annexed Tibet. The move also coincides with signs of strong improvement in China-Japan relations with a Chinese navy missile destroyer visiting Japan on a goodwill mission after several decades.

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

Hindus in Europe come together for common causes : Indrani Bagchi, The Times of India, New Delhi, December 3, 2007, p. 15.

Earlier this year, Hindus across Europe joined hands for the first time to oppose a German proposal to ban the use of *swastika*. It has been a Hindu symbol for 5,000 years. For the first time, Hindu groups from Italy, Belgium and UK found a common cause.

And now Hindus in Europe are in search of a recognized social and political identity and soon they will come knocking at the door of the Indian government for diplomatic assistance as they look for official recognition from different European countries.

The quiet general : Afzal Khan, The Hindustan Times, New Delhi, December 8, 2007, p. 16.

General Kayani, the man in control of Pakistan's powerful army is an old warhorse known best for averting an Indo-Pak war in 2001-02.

General Kayani has always kept a low public profile, but he is known to speak to Musharraf in a way few other senior officers would dare.

Prisoners of the past : Barkha Dutt, The Hindustan Times, New Delhi, December 8, 2007, p. 14.

The English media are seen by the ordinary Gujarati as elite conspirators who are out to tarnish his state. For there to be any dramatic change in Gujarat, the paradigm of public debate just has to move away from the riots of 2002.

Islam's silent moderates : Ayaan Hirsi Ali, The Times of India, New Delhi, December 8, 2007, p. 18.

A Hirsi Ali a former M.P. of Dutch parliament decries Muslim moderates remaining silent on crutches practiced on women in the name of Islam. If the moderates remain silent then what makes them so moderates.

Ram Setu could be 'man-made', says book, The Hindustan Times, New Delhi, December 9, 2007, p. 8.

A book, *Images India*, published by the Hyderabad-based National Remote Sensing Agency that comes under the Department of Space, says satellite images have revealed an "ancient bridge between India and Sri Lanka in the Palk Strait".

"The origin of the bridge is a mystery. Archaeological studies have revealed that the bridge dates back to the primitive age, that is about 1,750,000 years."

"Its structure suggests that it may be man-made," it says on page 39 of the coffee table book under the sub-title Stunning Structures.

"This has an echo in the ancient Indian mythological epic, the Ramayana. According to the epic, such a bridge was built by Lord Rama and his followers to reach Sri Lanka. Studies are still on but the bridge is seen as an example of ancient history linked to Indian mythology."

It contradicts the findings of the Archaeological Survey of India (ASI), which says there is no "historic or scientific" evidence of the existence of Lord Ram or a Ram Setu.

Necessity is the mother of fabrication too, Part-I : Arun Shourie, The Indian Express, New Delhi, December 11, 2007, p. 11.

Cut through the hype on the Indo-US nuclear deal, and all you have is the possibility of a marginal contribution to our nuclear energy generation. For this, our strategic interest is being mortgaged in perpetuity.

Reach out to Israel : Ramesh Thakur, The Times of India, New Delhi, December 13, 2007, p. 20.

One of the earliest to recognise Israel, India was one of the last to establish ambassadorial relations in 1992. Full relations were maintained with China and Pakistan, countries with which India has fought war; but not with Israel, with whom we have no direct quarrel. The policy of standoffishness provoked resentment and cynicism about India's moral authority without materially assisting the Palestinian cause or winning Arab votes

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

against Pakistan in international forums says Ramesh Thakur - a professor of Political Science at the University of Waterloo, Canada.

Can't take your eyes off Iran : Thomas L. Friedman, The Indian Express, New Delhi, December 15, 2007, p. 13.

In a world where everyone is looking for an excuse to do business with Iran, the US has lost influence. Everyone in the neighbourhood can smell it.

Right now, the Arab Gulf states are all sizing up America, their protector, and are wondering just how much Uncle Sam weights in the standoff with Iran - and whether it will be enough to keep Iran at bay.

India lacks wherewithal for modern warfare : T.R. Ramachandran, The Tribune, New Delhi, December 15, 2007, p. 2.

The National Security Advisory Board (NSAB) chairman Maharajakrishna Rasgotra said there is a radical change in the nature of war. India did not even have an overall military doctrine and as a result each wing of the armed forces tends to fight its own war. Acquiring hard power was the key to become even a soft power. He said the budgetary allocations in reality for the armed forces amount to about 2 per cent of the GDP, which is grossly insufficient. "A minimum allocation of 3 per cent of the GDP is necessary."

Chill ahead in ties : Bhaskar Roy, The Pioneer, New Delhi, December 15, 2007, p. 7.

China has mounted a propaganda offensive against India centred on the nuclear deal. Meanwhile, there is no let up in its own proliferation activities. Over the past decades, Beijing has been constantly engaged to contain India's growth. It considers any achievement by India as a direct threat. One of their old ploys has been to strengthen New Delhi's neighbours militarily to box India. However, this has not succeeded. Beijing apprehends that the civilian nuclear deal would boost India's economy and its growth rate would far exceed that of China in the coming years.

Multi-polar world, but unipolar Asia : Rajiv Nayan, The Pioneer, New Delhi, December 15, 2007, p. 7.

That's China's foreign policy objective. New Delhi should stop kidding itself that Beijing is a friend that is keen to promote bilateral trade and human resource cooperation. The shady proliferation deals underway with Bangladesh point to a new reality.

Nobody cares for Hindus : KR Phanda, The Pioneer, New Delhi, December 21, 2007, p. 6.

At the international level, it is well known that non-Muslim minorities in Islamic countries face the threat of extinction. Christians were a majority in Lebanon: they hardly count now. It is believed that the Islamic countries are forcing the minorities to embrace Islam, emigrate or face death. This writer's parents were provided these options in 1947 - convert to Islam, face death or migrate to Hindustan. Is the situation any different to Pakistan now?

Even the Budget : Dina Nath Mishra, The Pioneer, New Delhi, December 23, 2007, p. 13.

The Congress has always followed a policy of Muslim appeasement and its quantum has only increased down the years. This time, however, it has gone a long way in communalising the 11th Five-Year Plan and the Budget. Out of this appeasement policy comes the fear of bloodbath and communal riots. Sadly, the Congress has succumbed to it. Earlier also, Manmohan Singh had claimed that the minorities had the first right to the nation's resources.

Modi's victory raises hopes among Muslims : Rajeev Ranjan Roy, The Pioneer, New Delhi, December 24, 2007, p. 5.

Driven by Narendra Modi's charismatic leadership, the BJP's spectacular victory in Gujarat has raised expectations of Muslim leaders too. For them, Modi has got verdict for establishing a "secular, developing and

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

dynamic" society. "Modi succeeded in integrating the agenda of *Hindutva* with development and thrashed all parties in the battle of ballots."

Is Gujarat India? : Rajnath Singh, BJP President, on television, The Times of India, New Delhi, December 24, 2007, p. 20.

State elections do not normally matter that much for national politics. But Gujarat, since the emergence of Modi as chief minister, has ceased to be just another state. Elections here have come to symbolise a battle of ideologies, a tussle between perceptions of what is and what ought to be India.

Modi's victory is clearly his. In that sense, it is a defeat not just for the Congress but also for important sections of the sangh parivar - those which had opposed him behind the scenes. It was a referendum on Modi. And he won it hands down.

UPA trying to divide India : Sandhya Jain, The Pioneer, New Delhi, December 25, 2007, p. 6.

Dangerously disruptive minority appeasement will not merely alter the definition of secularism, whose traditional meaning is state disinterest in the denominational affiliations of its citizens. France, father of Western secularism, later extended this principal from Christianity to all religions. In Nehruvian India, secularism began as apathy to the majority Hindu faith and solicitude towards Islam. Over the decades, this extended progressively to excessive minority appeasement and hatred of all things Hindu. Now, under the UPA dispensation, secularism is synonymous with a 'Muslim first' policy, making it difficult to distinguish India from neighbouring Islamic countries.

Modi can't be fascist : Prafull Goradia, The Pioneer, New Delhi, December 25, 2007, p. 7.

In recent months, a number of commentators have called Gujarat Chief Minister Narendra Modi a fascist.

The basic reasons for which fascism grew in the West do not exist in India - only a westo phile can comment like this.

China aggressive on Tibetan rivers : M.S. Menon, The Tribune, New Delhi, December 26, 2007, p. 11.

China has recently announced that a 141 km highway linking Bome to Medok City. Medok is located near the Great Bend of Yarlung Tsangppo (India's Brahmaputra) where the river takes a sharp U-turn to enter into India. India is interested in these developments since the road and the airstrip at Nyingtri would facilitate construction of the project planned by China at the Great Bend to divert the Brahmaputra waters to its north.

One of the major problems facing China presently is water scarcity, as the mighty Yellow River has become a seasonal stream and the Yangtze river is in a critical condition. China does not want its aspirations to superpower status thwarted by a water crisis and hence its plans to divert the abundant water resources of the Tibetan Region to the arid north through 3 links-the eastern, central and western. The southern part of the western link envisages the Brahmaputra diversion.

Challenges from China, Need for pro-active Asia-Pacific policy : G. Parthasarathy, The Tribune, New Delhi, December 27, 2007, p. 10.

China has not hesitated to provide Pakistan nuclear weapons capability. Chinese determination to erode India's ties with our eastern neighbours has been supplemented by continuing efforts to undermine our relations with Nepal and Bhutan.

Antidote to all formulas : Balbir K Punj, The Pioneer, New Delhi, December 28, 2008, p. 6.

How can leadership grow at the grassroots and rise in stature nationally when the top slot is invariably reserved for one single family? The Congressmen are too weak to ask that question. Till they don't, they will have to depend on anti-incumbency of the previous regime, which may not always exist. It didn't in Gujarat.

Pakistan's heart of darkness : C. Uday Bhaskar, The Indian Express, New Delhi, December 29, 2008, p. 10.

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

Benazir Bhutto's assassination has brought into relief the multiple security challenges the country faces. The Pakistan 'fauj', which has appropriated the state unto itself and defined national interest in a corrosive manner, must begin a long mea culpa. It must return the state to its rightful owners-the people.

What more is needed to stoke reaction? : Arun Shourie, The Indian Express, New Delhi, December 29, 2007, p. 11.

Government proffer an advantage to community which that group, Muslims in this case, can secure only by being separate. The consequences of such a policy are with us.

Seeing that governments and parties are competing to pander to them, Muslims see that they are doing so only because their community is acting cohesively, as a vote bank. So, they act even more as a bank of votes. For the same reason, a competition is ignited within the community: to prove that he is more devoted to the community than his rival, every would-be leader of the community demands more and more from governments and parties.

Generals destroyed Pak institutions, their US benefactors looked on : Shekhar Gupta, The Indian Express, New Delhi, December 30, 2007, p. 1 & 2.

Of the four generals who robbed Pakistanis of democracy. Zia-ul-Haq was the most 'successful'. His hold on power was total and lasted nearly a decade. Musharraf is a close second, now in his ninth year. Ayub-who elevated himself to Field Marshall-is a not-very-distant third. Now can you spot a crucial similarity between them? Or rather, the one critical factor that enabled them to rule with an iron hand, destroying Pakistan's fledgling institutions and preventing others from coming up, and serially annihilating three successive generations of politicians? It is the United States of America. An angry, nuclear-armed Pakistan without leaders could emerge as a bigger headache than even Iraq for the new US President.

When an American reporter asked Zia-ul-Haq if he did not think democracy was good for his Pakistan, Zia replied that everybody knew physical exercise was good for people. "But can you send a sick man to play football?" Now, how many leaders could get away with describing their own nation as a sick man? But Zia did.

Numbers on Gujarat's wall : Arun Jaitley, The Indian Express, New Delhi, December 31, 2007, p. 10.

Modi proved that if leaders have credibility they can win again and again. Why is it that the national media refused to gauge the public mood and BJP's 11 per cent lead? This is because of an oppressive environment that a section of the media felt it could create.

Military is the problem : Brahma Chellaney, The Times of India, New Delhi, January 3, 2008, p. 30.

Today, a nuclear-armed, terror-exporting Pakistan has become a problem not just regionally but globally. Make no mistake: It is the military that created and nurtured the forces of *jehad* and helped Islamist groups gain political space at the expense of mainstream parties.

India is fertile ground for Islamic investments : Nidhi Sharma, The Hindustan Times, New Delhi, January 5, 2008, p. 26.

The nation has emerged as a key ground for Islamic investment, under which speciality funds pump in money only into those activities or firms that are compliant with the principles and ethics of Islam.

Junta versus Janata : Shekhar Gupta : The Indian Express, New Delhi, January 5, 2008, p. 10.

At the Agra Summit, what exasperated Vajpayee most of all was Musharraf's cocky' decisiveness'. 'You are the prime minister, I am the president, if we agree on something, let's sign, 'he would say, while at the same time making changes on the draft of a likely agreement and asking Vajpayee to okay it. He simply wouldn't buy Vajpayee's argument that he had a cabinet to go back to.

A modern nation needs democracy and so it needs its politicians, however clumsy, corrupt, effete and power-crazed they may be. Because a military dictator can also be all of these things. The difference is, the political leader draws his power from the democratic process, so he has a stake in preserving that system. The general draws his power by throttling the democratic system.

Barbarians at the Gate : Kanchan Gupta, The Pioneer, Agenda, New Delhi, January 6, 2008, p. 1.

More people have died in *jihadi* attacks in the three-and-a-half years of UPA rule than during six years of NDA rule. But the Congress is happy to ignore the Islamist threat, unmindful of India's national interest.

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

India is the new frontline state in the war against terror. We can either summon the courage for a counter-assault, or we can wait for the barbarians to smash the gate. The UPA Government appears to have settled its mind on the second option.

Dragooned by the dragon : Brahma Chellaney, The Hindustan Times, New Delhi, January 7, 2008, p. 12.

Several Chinese scholars have acknowledged, Beijing is not as keen as New Delhi to resolve the territorial disputes. Having got what it wanted either by military aggression or furtive encroachment, Beijing values its claims on additional Indian territories as vital leverage to keep India under pressure. Similarly, not content with the Dalai Lama's abandonment of the demand for independence, Beijing continues to publicly vilify him and portray his envoys' visits for negotiations as personal trips. Beijing has also been emboldened by a couple of major Indian missteps. During Prime Minister A.B. Vajpayee's July 2003 visit, it wrung the concession it always wanted from India - a clear and unambiguous recognition of Tibet as part of China.

Islamists taking over Pakistan : Sushant Sareen, The Pioneer, New Delhi, January 8, 2008, p. 9.

The signs are everywhere. There are more women in *hijab*, more bearded men in the streets, more people going to mosques for Friday prayers than ever before. Young people, even those educated in the West, are more religiously inclined than their parents. (someone who comes to your house to preach), he just might belong to some *jihadi* outfit and could place a mark outside the house, labelling the residents as non-believers, or worse, apostates.

Stand up to China : P Stobdan, The Times of India, New Delhi, January 8, 2008, p. 20.

The Chinese thrive on taking advantage of India's weaknesses and having killed the nuclear deal, they would now want to further corner India. Which is why the forthcoming visit by the Indian prime minister to China is of crucial significance. We have a history of appeasing China and those Indian leaders who visit Beijing usually return as ardent fans of China. It's time India stood its ground and refused to get bullied by China.

Islam versus Islam : Prafull Goradia, The Pioneer, New Delhi, January 9, 2008, p. 7.

Benazir Bhutto's assassination underlines ongoing civil war between Islamists and civil Muslims.

However, this is not the first time that Islam has fought Islam. Within 50 years of the ascension of Prophet Mohammed, the first decisive intra-Islamist battle was fought - on October 10, 680, on the plane of Karballa situated about 50 miles from Baghdad and many more intra Islamist conflicts bloodied the history of Islam but that has not blunted the march of Islam through countries.

Who is a secularist? : Mahesh Jethmalani, The Times of India, New Delhi, January 10, 2008, p. 20.

It is evident from the Gujarat election that it is the secularists who tend to communally polarise the polity. U.P.A. has introduced communal budgeting and Muslim first policy. The principle of equality of justice for Hindus and Muslims alike, the implicit suggestion being that if Muslim terrorists can be convicted then Hindu rioters must also be tried and punished. The obvious disconnect between terrorism and riots is lost in the process. It is their stand on terrorism that destroys utterly the credibility of so-called secular parties. Consider for example the new poster boys of the secular camp: Sanjay Dutt, Afzal Guru and Sohrabuddin.

Ethnic divide sharpens in Pakistan : Griff Witte, The Tribune, New Delhi, January 11, 2008, p. 11.

In Pakistan - a federation of four provinces, each associated with a different ethnic group - the issue of ethnic identity has long been troublesome, imperiling the unity of the state. At Bhutto's funeral in rural Sindh provinces last month, there was hardly a Pakistani flag to be seen, and Sindhi mourners chanted, "We don't need Pakistan!" Sindhis also attacked Punjabi target in the three days of rioting that followed news of her killing. Punjabis have long been overrepresented in the army, which is widely blamed here for Bhutto's death, despite the government's insistence that Islamic extremists were responsible."The people in Sindh hate the Punjabi establishment. Not the common man from Punjab, but the Punjabi factor in the army. Now the hatred is growing." Some believe the only solution is for Sindh to break away from Pakistan and form its own nation, but the more common view is that Sindh, Baluchistan and North-West Frontier Provinces only need greater autonomy from the central government.

Dealing with China : K. Subrahmanyam, The Tribune, New Delhi, January 12, 2008, p. 12.

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

There were references to the Chinese strategy of string of pearls by which they were developing facilities in countries around India-Myanmar, Bangladesh, Sri Lanka and Pakistan and their increasingly growing arms transfer relationships with those countries. There were also references to the rapid development of infrastructure in Tibet and its implications for India. An overall assessment of Chinese strategy from 50s to eighties would reveal that China's aim was to become once again the Middle Kingdom, particularly in Asia.

Given their population, for China, only India could be a possible rival. They felt they were in a position to contain India and keep it at the status of a regional power bracketed with Pakistan.

Let's Get Real : G Parthasarathy, The Times of India, New Delhi, January 14, 2008, p. 20.

China has violated all international treaties and obligations in supplying Pakistan with nuclear weapons designs, nuclear enrichment know-how and designs and assistance required by Pakistan for developing missile capabilities to strike towns and cities across India. This three-decade-long Sino-Pakistan nuclear and missile nexus still continues, posing a danger not only to India, but given the growing role of *jehadis* in Pakistan, to the international community itself. China had no qualms in scuttling our efforts to seek permanent membership of the UN Security Council and excluding us from regional groupings in East and South East Asia. While China has not hesitated to join the US to pressure India during the Bangladesh conflict of 1971 and to work with the US during the years of the Clinton administration to "cap, roll back and eliminate" our nuclear weapons programme, it feigns concern when India strikes a partnership with the United State, to promote its national interests. Chinese diplomats across the world have spared no effort in recent months to get members of the Nuclear Suppliers Group to reject moves like the India-US nuclear deal, which seek to end global nuclear sanctions against India. But, rather than protest such manifestations of Chinese hostility, New Delhi seeks to behave like a supplicant in dealing with Beijing.

Truth about Kandhamal : Ashok Sahu, The Pioneer, New Delhi, January 14, 2008, p. 7.

Media has distorted the facts about the clashes between tribals and missionaries in this Orissa district. Ashok Sahu tells the real story of what happened and why it happened. The whole series of incidents began with the unprovoked and pre-planned attack on Vedanta Keshari Swami Lakshmanananda Saraswati who was visiting his disciples at Darsingbadi village in Kandhmal district on December 24. The 82-year-old Swami has been working tirelessly in the district since 1967 for the welfare of the local population.

Hindu rights in peril : A Surya Prakash, The Pioneer, New Delhi, January 15, 2008, p. 6.

The court declared that for the purpose of determining a minority the unit will be the State and not the whole of India and linguistic and religious minorities "have to be considered State-wise". Four other judges on the Bench concurred with the majority view expressed by these six judges.

Heritage dumped : Anuradha Dutt, The Pioneer, New Delhi, January 17, 2008, p. 7.

Brajbhumi's heritage and environment are in danger of being destroyed by illegal mining and unregulated development. An NGO, '*Braj Rakshak Dal*', affiliated to the Braj Foundation, is bravely trying to stem the damage and restore Brajbhumi. The focus is on reviving water bodies and 48 sacred groves, and regenerating about 18,000 acres of land with the help of experts. But in the absence of deterrent action by the concerned authorities to check miners and encroachers, well-meaning initiatives have only a limited impact.

Recall Vivekananda : Jagmohan, The Pioneer, New Delhi, January 18, 2008, p. 7.

If Jagmohan Quote - Vivekananda were to appear on the scene today, I am sure he would speak to the present-day ruling elites. "You have betrayed the country. You have stifled the underlying inspiration for constitutional goals. You proceeded to set up political and administrative institutions, but failed to create the mind and motivation that would have given life and meaning to them. You built bodies without souls. You ignored 'the ancient nobility of temper' engendered in '*tyaga*' and '*tapasya*' and started worshipping the new gods of power and pelf."

Mirage Musharraf : Shekhar Gupta, The Indian Express, New Delhi, January 19, 2008, p. 10.

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

The author asked a very distinguished group of Pakistanis why they accorded such a privileged placed to their army in their power structure? The answer was prompt: the army keeps our country together, and your guys away from our territory. Without the army-and its predominant place in the power structure-there will be no guarantee of preservation of either our national interest, or our territorial, or ideological frontiers.

Towering genius called Vivekananda : Rashmi Sharma, The Tribune, New Delhi, January 20, 2008, p. 3.

Swami Vivekananda was born on January 12, 1863. His activities in childhood were unmistakable pointers to his future disposition. To U.S.A. on embarking upon this expedition he felt that he was no longer an individual but a 'condensed and concrete' India. Having a constant view of the regeneration of his motherland, he appeared to represent Hinduism at the Parliament of Religions on September 11, 1893. He dazzled the whole world with his impeccable lectures, and his charismatic persona became a household talk. He stormed the western countries with his practical Vedantic philosophy. His success revived the unprecedented sense of national pride among Indians. At this Lokmanya Tilak said: "Vivekananda played the role *Sankara* played in the eighth century."

But for Communists, India would have been a superpower : Dina Nath Mishra, The Pioneer, New Delhi, January 20, 2008, p. 13.

The Communists are as fundamentalists as Islamic *jehadis* in the economic sense of the word. By propaganda, they create illusory truths, utopian realities and manufactured consent, thereby bringing a state of apathy in the general public. The Marxist variety of scientific socialism destroyed the natural course of economic development of the country for 50 years and of West Bengal for 30 years. Seventy to 80 per cent of the Communist movement history published by the CPM is either in praise of scientific socialism or against capitalism.

Congress beyond repair truely As it continues to take dictation from the Left : JS Rsjput, The Pioneer, New Delhi, January 23, 2008, p. 7.

The loss of credibility of the Congress, which was gradual over the past two decades, became fast-paced during the period of the UPA Government. For full five years, the secular fundamentalists humiliated and insulted the voters of Gujarat. The basic principle in democracy of respecting people's verdict was demeaned for five years (2002-07) by uninterrupted onslaughts on Gujaratis who, the 'secularists' thought, did not have the intellectual faculty to decide their political future. Granted, there are no permanent foes and friends in politics. Some Congressmen may recall that after the sixth congress of the Communist International in 1928, the Indian Communists had declared the Congress - rather than the British - as the real enemy of the people. "The most harmful and dangerous obstacle to victory of Indian revolution is the agitation carried on by the 'Left elements' of the National Congress led by Jawaharlal Nehru, Subhas Chandra Bose, Jaiprakash Narayan and others…"

Floundering comrades : Shikha Mukherjee, The Pioneer, New Delhi, January 23, 2008, p. 7.

CPI(M) leaders in West Bengal are being disingenuous while hardselling their farmland for-industry policy. Party cadre, who are aware of the 'concrete situation', are aghast at the idea of such a tectonic shift which has made the masses hostile to the Marxists.

Want peace? Sink feelings of I and me : Amit Bhan, The Pioneer, New Delhi, January 23, 2008, p. 1 & 4.

The occasion was the launch of the Global Foundation for Civilisational Harmony (India). A.P.J. Abdul Kalam elaborated on sayurs three things which composed on (1) education with value system (2) beauty of giving love (3) religion should be transformed as spiritual force enlightened society.

For Art of Living guru Sri Sri Ravi Shankar, the prevailing conflicts are raging because of lack of wisdom. "In this era of globalisation, only wisdom has not been globalised. We need to globalise it to bring peace." Yoga guru Swami Ramdev delved into the glory of Indian civilisation and declared it had "The power to save the world."

Day-dreaming Third Front : Balbir K Punj, The Pioneer, New Delhi, January 25, 2008, p. 6.

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

The Marxist history in India is strewn with broken idols and false struggles; their rationalism could never come to terms with the Indian ethos. Daydreaming a 'Third Front' is only the latest example showing the Communists as lone rangers.

Book Reviews

Ramin Jahanbegloo : India Revisited-Conversations on Contemporary India, Oxford.

The book is based on interviews with 27 Indian artists, social scientists, journalists, activists and others. With topics like caste, democracy, secularism, women, economy, the Constitution and science. One conclusion he reaches is "Indians are the last metaphysical people. Indian culture finds symbiosis between tradition and modernism." Example of the taxi driver turning his car into a shrine. Or a businessmen blending pragmatism with spiritually. And feels this will save the subcontinent from destruction under pressure from consumerism. In *India Revisited* (OUP), Dalai Lama tells Iranian philosopher, Ramin Jahanbegloo about an 85-year-old Tibetan monk who spent 18 years in Chinese *gulag* (prison). The man faced many dangers, but worst was danger of losing compassion towards the Chinese.

Charged with spying for the US by the present Iranian government, Jahanbegloo himself faced solitary confinement for over a 100 days in 2006.

I read them five times over. It gave me a view of India from jail. India is useful for the idea of democracy, because it is this country's biggest asset.

-Shana Maria Verghis The Pioneer, New Delhi

RD Pradhan : 1965 War, The Inside Story: Defence Minister YB Chavan's Diary of India-Pakistan War, Atlantic, Rs. 275/-

The book is divided into three sections. Section I describes the background to the event. Section II deals with military operations, while Section III is a commentary on the Defence Minister and his Chiefs, the higher direction of war and Chavan's reflections on the future of India-Pakistan relations. During the war, the Navy was asked not to take any offensive action. Had it done so and bombed Karachi, for instance, the Pakistanis could have retaliated, but they would have learnt a lesson not to play with fire. Even the Air Force was not thrown into battle against Pakistan till the latter attacked air bases on September 6. India should have taken Lahore but Chavan had two silly excuses to give: One, following the fiasco on the Ichhigol Canal, any idea to capture Lahore had to be given up; and, two, it would not have been wise to tie down a large part of the Indian Army inside any city when the Chinese had already started belligerent moves in the North-East. The book is a treat to read.

-MV Kamath The Pioneer, New Delhi

Giles Tillotson (Editor) : James Tod's Rajasthan, Marg Books, Rs. 2,500/-

Tod's *Annals and Antiquities of Rajasthan*, published almost two centuries ago, is the defining book of the land. It is, therefore, surprising that till now, there has been only one full-length study, and that too only in Hindi. The situation has now been rectified to some extent by this beautifully illustrated book, in which the focus is both on the treasures that Tod left behind, and his legacy as a historian.

But even as these essays enlarge the world of Tod as we know it, we still want to know more about the historian and his history. And there, *James Tod's Rajasthan* does not disappoint. James Freitag describes how, in a sense, Tod created Rajput history. By relying on the bardic traditions, he compiled a list of the clans, which acquired a veneer of authenticity, so much so that in a case of royal adoption in the 1920s, Tod was cited as an authority! With his history, Tod also helped confer legitimacy on the Rajput clans in the eyes of the new imperial power.

This book is a valuable addition to Indian historiography, because Tod stands like a colossus on the historiography of Rajasthan. Everyone who writes on Rajasthan has to begin with Tod, even if in disagreement, if there had been no Tod, then it would have been necessary to invent him.

-Atul Chaturvedi The Indian Express, New Delhi

Makkhan Lal : Secular Politics Communal Agenda, Pragun Publications, Rs. 995/-

The book, *Secular Politics Communal Agenda*, by Prof. Makkhan Lal, deserves to be read for more than one reason. In this book (1860-1953) is a momentous one; and, policies and programmes of the leaders who led the Indian National Congress then continue to dominate the political horizon of India even today.

The writer has collected and presented copious original references to prove his point on different issues and personalities. Though Hindus suffered the most as a result of Partition, very few Hindu intellectuals have written on

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

this subject. Two outstanding books already published are BR Ambedkar's *Thoughts on Pakistan*, which came out on the morrow of the Pakistan Resolution, and Justice GD Khosla's *The Stern Reckoning*, which was initially submitted as a report to the Government of India in 1948.

Prof. Lal's effort refreshes the memory of those who have a serious interest in the subject of the Hindu-Muslim relations. The book covers subjects such as Indian politics under the British Raj; Lahore Resolution, Cripps and Cabinet Missions and Partition; Politics of Riots and Appeasement; Separate Electorates; the Communist Betrayal, et al. Nearly half of the book is devoted to the events and personalities leading to Partition in 1947.

Pakistan had come into being on the premise that Muslims were a separate nation. How come Muslims again became a minority on August 27, 1947 ? Was not the Congress leadership practising perfidy and fraud on Hindus?

Gandhi, Nehru and Patel are to be blamed for not implementing the logical corollaries of Partition. Nehru wanted to remain in power irrespective of cost to the nation. He had even directed Sri Prakasa India's High Commissioner in Karachi, to persuade Indian Muslims to come back to India. Some Hindu refugees who had occupied lands and houses of Muslim emigrees were again made homeless in India. After the death of Gandhi, Nehru gradually got rid of those colleagues who differed from him both in the party circles and the cabinet. Some were ever humiliated.

The write-up on the behavioural pattern of the Communists in India is equally informative. To put the entire blame for Partition on Jinnah, ignoring the role of the congress led by Gandhi and Nehru, as the book has done, is incorrect.

-Prafull Goradia and KR Phanda ***The Pioneer, New Delhi***

RNI No. 72478/99

सांस्कृतिक गौरव संस्थान के प्रकाशन

पुस्तक का नाम	मूल्य
1. विश्वव्यापी भारतीय संस्कृति *लेखक : श्री रघुनन्दन प्रसाद शर्मा*	95.00
2. स्मृतियों में भारतीय जीवन पद्धति *लेखक : श्री रघुनन्दन प्रसाद शर्मा*	90.00

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

3.	**इस्लाम के सैनिक** *लेखक : श्री पुरुषोत्तम*	20.00
4.	**मुस्लिम राजनीतिक चिंतन और आकांक्षाएं** *लेखक : श्री पुरुषोत्तम*	20.00
5.	**भारत में मुस्लिम जनसंख्या का विस्फोट** *लेखक श्री बलजीत राय*	15.00
6.	**तालिबान इस्लाम और शान्ति**	20.00
7.	**भारत में पाकिस्तान की आइ.एस.आई. की घातक गतिविधियां** *लेखक : कर्नल श्याम कुमार*	15.00
8.	**अयोध्या विवाद का हल** *लेखक : डॉ. सुरेन्द्र*	20.00
9.	**श्रीराम जन्म भूमि सच जानिए !**	140.00
10.	**हमारे मूल कर्तव्य** *लेखक : डॉ. विजय नारायण मणि त्रिपाठी*	80.00
11.	**भारतीय जीवन मूल्य** *लेखिका : डॉ. कामिनी कामायिनी*	200.00
12.	**आज इस्लाम के मसले** *लेखिका : सुश्री इर्शाद मांझी (कनाडा)* *भाषांतरकार : मे.ज.(से.नि.)वि.जोगलेकर*	65.00
13.	**भारत में सेक्युलर राजनीति**	55.00
14.	**The Nefarious Activities of Pak's I.S.I.** *लेखक : कर्नल श्याम कुमार*	15.00
15.	**The Challenge of Truth - Through answers to some F.A.Q.**	120.00
16.	**FACT - Focussed Awareness & Complete Truth** बड़ा आकार (सचित्र)	500.00
17.	**The Ayodhya Controversy** *लेखक : डॉ सुरेन्द्र*	20.00
18.	**Minorities and Social Justice: Problems&Policy Options** *Sh. B.P.Singhal*	20.00
19.	**The Glory that is Hindutva** *Sh. B.P.Singhal*	10.00

अन्य प्रकाशन जो संस्थान कार्यालय में उपलब्ध हैं

1.	माँ की पुकार *लेखक श्री भारतेन्दु प्रकाश सिंहल*	150.00
2.	मार्क्सवाद और भारतीय इतिहास लेखन *लेखक : श्री शंकर शरण*	400.00
3.	भारत के इस्लामीकरण के चार चरण *लेखक : श्री पुरुषोत्तम*	90.00

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

4. इस्लाम : कामवासना और हिंसा 85.00
लेखक : श्री अनवर शेख

5. पाकिस्तान की हकीकत 300.00
लेखक : श्री रामनरेश प्रसाद सिंह

6. रामराज्य सा जनतंत्र 50.00
लेखक : श्री जगदीश प्रसाद पांडे

7. सफेद चोला काला दिल 40.00
लेखक : श्री मोहन जोशी

8. भारत में जिहाद 15.00
लेखक : श्री जयदीप सेन

9. हिन्दू संस्कृति- प्रमुख ग्रंथ और वर्तमान स्थिति 30.00
लेखक : श्री रघुनंदन प्रसाद शर्मा

10. इस्लाम-अरब साम्राज्यवाद 60.00
लेखक : श्री अनवर शेख

11. छद्म सेक्यूलरवादियों और इस्लाम का असली चेहरा 15.00
लेखक : श्री कृष्णस्वामी

12. इस्लाम ईसाइयत और हिन्दू धर्म 20.00
लेखक : डॉ. कृष्णवल्लभ पालीवाल

13. हिन्दू नाम-तथ्य और सत्य 20.00
लेखक : स्वामी विज्ञानानन्द

14. Why Muslims Destroy Hindu Temples 10.00
Sh.Anwar Shaikh

15. Jihad in India 25.00
Sh. Jaideep Sen

16. Supreme Court on Hindutva 500.00
(Extracts and Comments) - *Prof. Bal Apte*

17. Eternal India and the Constitution 125.00
Sh. S. Gurumurthy

18. Islam and Religious Riots - A Case Study Riots & Wrongs 500.00
Sh. R.N.P. Singh

19. Challenges before the Hindus 20.00
Dr. K.V.Paliwal

20. Islam, Sex & Violence 85.00
Sh. Anwar Shaikh

21. Muslim Politics in Secular India 40.00
Sh. Hamid Dalwai

22. Secularism Betrayed Secularism distorted Hypocrisy of Secularism 70.00
Sh. Anandshankar Pandya

23. Untouchability Alien to Hindu Dharma 80.00
Prof. K.V.Paliwal

24. Semitic Religions & Their Horrors of Fundamentalism 125.00
Sh.Anwar Shaikh

25. Islamism and Genocide of Minorities in Bangladesh - *Dr. K.V.Paliwal* 150.00

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com

26. Hindu Renaissance ways & means 40.00
Dr. Ram Gopal & Dr. Paliwal
27. Eminent Indians on Islam 20.00
Dr. K.V.Paliwal
28. Bangal's Night without end 500.00
Sh. Udayan Namboodiri
29. Two faces of Jihad 20.00
Dr. K.V.Paliwal
30. The meaning of Jihad 10.00
Dr. K.V.Paliwal
31. Islam 15.00
Sh. Anwar Shaikh
32. Murder in the name of Christ 15.00
Frederick Ide
33. Max Muller- A Secular Christian Missionary
& Distorter of Vedas - *Dr. K.V.Paliwal* 20.00
34. Chrismas - Fact of Fiction 15.00
Ms. Sthitaprajna
35. Muhammad and the rise of Islam 60.00
Sh.D.S.Margoliouth
36. भारतीय इतिहास – *श्री रघुनन्दन प्रसाद शर्मा*
60.00
37. क्या हिन्दू मिट जाएगा? – *श्री सच्चिदानन्द चतुर्वेदी* 45.00
38. मनुस्मृति और डॉ. अम्बेडकर – *डॉ. के.वी.पालिवाल* 50.00
39. हिन्दू जागरण –क्यों और कैसे ? 60.00
रामगोपाल एवं डॉ. के.वी.पालिवाल

PDF Created with deskPDF PDF Writer - Trial :: http://www.docudesk.com